

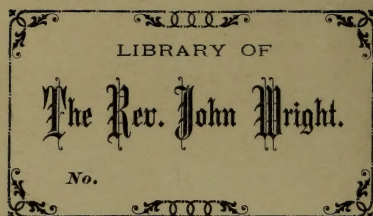


PK

2008)

V4

1852



4.50

THE
BYTAL-PACHEESEEE.

OR

THE TWENTY-FIVE TALES OF THE DEMON.

A new Edition.

EDITED

BY

ESHWAR CHANDRA VIDYASAGAR.

Principal of the Sanskrit College.

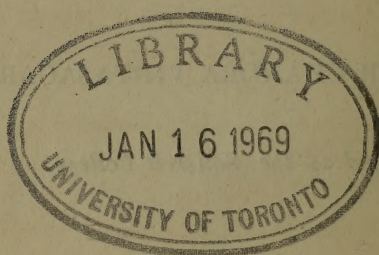
PUBLISHED UNDER THE PATRONAGE OF THE
COLLEGE OF FORT WILLIAM.

CALCUTTA.

PRINTED AT THE SANSKRIT PRESS.

1852.

PK
2089
V4
1852



PREFACE.

The Bytál Pacheesee is a Collection of Legendary Stories relating to that celebrated character in Hindu Annals Rájá Vikramáditya. The work contains no traces of art or genius in its composition; but on the contrary exhibits those clumsy attempts at the wonderful, sometimes bordering on childishness, which are so general in the Legends of a dark age. It is, however, very popular among the great mass of the people of this country and expresses accurately their ideas and feelings on many subjects. This fact, and the circumstance of the Hindee version being highly idiomatic and correct in its style, render this work an excellent Text book for students of the Hindee language.

The Original of these tales is to be found in the Kathá Sarit Ságara, an ancient and voluminous Collection of Tales and Legends in Sanskrit verse, by Somadeva Bhatta, under the title of Betálapanchavinshatiká. There exists also, under the same title, a Sanskrit prose version.

In the reign of Muhammad Sháha, Súrát Kabíshwar, by order of Rájá Jye Singh, translated the work from Sanskrit into Braj Bhákhá. This version was translated, by direction of Dr. Gilchrist, in the time of Marquis Wellesley, into Hindoostanee by Muzhar Ali Khan, whose poetical name was Vilá, aided by Lallu Lál Kab, the elegant writer of Premságar; both Moonshes of the College of Fort William. This translation, of which the present is a new edition, was printed in 1805, having been revised, according to the instructions of Captain James Mouat, by Tárineecharan Mitra, the learned Head Moon-shee of the above Institution.

A Bengali version of this translation was made, by the Editor of the present edition, in the year 1847, by directions of Major G. T. Marshall, Secretary to the College of Fort William, and was adopted, under the title of *Betálpanchabinshati*, as a Text book for the Students of that College. A poetical version in Bengali also exists and seems to have been taken from the Original Sanskrit.

In bringing out the edition now presented to the public, the Original Text of 1805 and the Agra Edition of 1843, have been carefully collated. The former has been generally adhered to; but the latter, though sometimes inferior in accuracy, has been occasionally followed in instances where it appeared judiciously modernised in its style of expression and orthography. The correct Sanskrit forms of the proper names, as far as they can be traced, have been inserted in the places where they occur, at the foot of the page. Some do not admit of Sanskrit equivalents; and it is evident that the Translators were not particular in this point, and adopted popular epithets at their own pleasure.

Calcutta.

15th. January, 1852.

फिहरिस्त बैतालपच्चीसी की.

कैफ़ीयत.	सफ़हः.
शुरुअ कहानी का.	१
पहली कहानी.	१२
दूसरी कहानी.	२५
तीसरी कहानी.	२६
चाथी कहानी.	३६
पांचवीं कहानी.	५०
छठी कहानी.	५४
सातवीं कहानी.	५६
आठवीं कहानी.	६१
नवीं कहानी.	६५
दसवीं कहानी.	६६
ग्यारहवीं कहानी.	७२
बारहवीं कहानी.	७७
तेरहवीं कहानी.	८०
चौदहवीं कहानी.	८५
पंदरहवीं कहानी.	९४
सोलहवीं कहानी.	१०२

सफ़हः।

सतरहवीं कहानी.	१०८
अठारवीं कहानी.	११२
ऊन्नीसवीं कहानी.	११८
बीसवीं कहानी.	१२३
इक्कीसवीं कहानी.	१२७
बाईसवीं कहानी.	१२९
तेईसवीं कहानी.	१३१
चौबीसवीं कहानी.	१३६
पच्चीसवीं कहानी.	१३८

जो पहले हो तौहीद से तरज्बां
लिखूं आगे नअति रसूलि जमां.

इबतिदाय दास्तान यों है, कि मुहम्मदशाह बादशाह के जमाने में, राजा जैसिंह सवाई ने, जो मालिक जै नगर का था, सूरत नाम कबीश्वर से कहा कि बैतालपचीसी को, जो ज़बानि संस्कृत में है, तुम ब्रज भाषा में कहो. तब उसने, बमूजिब ज़कम राजा के, ब्रज की बोली में कही. सो अब, शाहिआलम बादशाह के अहद के बीच, और असर में अमीरुल उमरा जुबदए नोईनानि अजीमुशान, मुशीरि खासि शाहि कैवां बारगाहि इंगलिस्तान, अशरफुल अशराफ़ मारकुइस वलिज़ली गवरनर जनरल बहादुर (दाम मुलकज़) के, मजहरअली खानि शाइर ने, जिस का तख़्तुस विला है, वास्ते सीखने और समझने साहिबानि आलीशान के, बमूजिब फ़रमाने जनाब जान गिलक्रिस्त साहिब (दाम इक़बालज़) के, ज़बानि सहल में, जो खास ओ आम बोलते हैं और जिसे आलिम ओ जाहिल गुनी बूढ़ सब समझें, और हरएक की तबीअत पर आसान हो, मुश्किल किसी तरह की जिहन पर न गुजरे, और ब्रज की बोली अकसर उस में रहे, श्रीलखू जी लाल कबि की मदद से, बयान किया था.

फ़िलहाल, मुवाफ़िक़ इरशादि मुदर्रिसि हिन्दी खुदा-
 वंदि निअमत जनाव कपतान जिमिस मोअयट साहिब
 (दाम इक़बालज़) के, तारिणीचरण मित्र ने, क़ापे के वास्ते,
 संस्कृत और भाषा के अलफ़ाज़ को, जो रेख़ते के मुद्दावरे
 में कम आते हैं, निकालकर मुरब्बज अलफ़ाज़ को दाख़िल
 किया. मगर बअज़े लफ़ज़ हिंदूओं का, जिस के निकालने
 से ख़लल जाना, बहाल रखा. उम्मेद है कि ज़स्ति क़बूल
 पावे.

बैतालपच्चीसी

शुरुआत कहानीका.

धारा नगर नाम एक शहर. वहां का राजा गन्धर्व सेन. उस की चार रानियां थीं. उन से छः बेटे थे. एक से एक पण्डित और जोरावर था. कज़ाकार बअद चन्द-रोज के वह राजा मर गया; और उस की जगह बड़ा बेटा शङ्क(१) नाम राजा हुआ. फिर कितने दिनों के पीछे, उसका छोटा भाई विक्रम,(२) बड़े भाई को मारकर, आप राजा हुआ; और बखूबी राज करने लगा. दिन बदिन उसका राज ऐसा बढ़ा, कि तमाम जम्बुद्वीपका राजा हुआ, और अचल राज करके सका बांधा.

कितने दिनोंके बअद, राजा ने यह अपने दिल में बिचारा कि जिन मुल्कों का नाम मैं सुनता हूं उन की सैर किया चाहिये. यह अपने दिल में ठान, राजगद्दी अपने छोटे भाई भरथरी(३) को सौंप, आप जागी बन, मुल्क मुल्क की और बन बन की सैर करने लगा.

एक ब्राह्मण उस शहर में तपस्या करता था. एक दिन देवता ने उसे अमृत फल ला दिया. तब उस ने, उस फल को अपने घर में लाकर, ब्राह्मणी से कहा कि जो कोई

(१) शङ्कु.

(२) विक्रमादित्य.

(३) भर्तृहरि.

इसे खायगा सो अमर होयगा ; देवता ने फल देते वक्त यह मुझ से कहा. यह सुनके ब्राह्मणी बज्जत सा रोई, और कहने लगी कि यह हमें बड़ा पाप भुगतना पड़ा ; क्योंकि अमर होके कब तक भोख मांगेंगे ; बल्कि इस से मरना बिहतर है ; जो मर जाइये तो संसार के दुख से छूटिये. तब ब्राह्मण बोला कि लेते तो मैं ले आया ; पर तेरी बात सुन के मेरी अन्न खोई गई. अब जो तू बतावे सो मैं करूं. फिर उस से ब्राह्मणी ने कहा यह फल राजा को दे, और इस के बदले लक्ष्मी लो ; जिस से स्वारथ औ परमारथ का काम हो.

यह बात सुन, ब्राह्मण राजा के पास गया ; और असीस दी. फल का अहवाल बयान करके कहा कि महाराज ! यह फल आप लीजिये और मुझे कुछ लक्ष्मी दीजिये. आप के चिरंजीव रहने से मुझे सुख है. राजा ने ब्राह्मण को लाख रुपये दे बिदाकर, महल में आ, जिस रानी को बज्जतसा चाहता था, उसे वह फल देकर कहा ऐ रानि ! तू इसे खा कि अमर होवेगी और हमेशः जवान रहेगी. रानी ने, इस बातको सुन, राजा से फल ले लिया. राजा बाहर सभा में आया.

उस रानी का आशना एक कोतवाल था ; उसने वह फल उसे दिया. इत्तिफाक़न एक बेसवा कोतवाल की दोस्त थी ; उसने उसे वह फल देकर उसकी खूबी बयान की. उस बेसवा ने अपने मन में बिचारा कि यह फल राजा के देने जाग है. यह बात अपने मन में ठहरा, वह फल

राजा को जाकर दिया. राजा ने फल लेलिया, और उसे बज्रत सा धन दे बिदा किया; और फल को देख, अपने जी में चिन्ताकर संसार से उदास हो, कहने लगा कि इस संसार की माया किसी काम की नहीं; क्योंकि इस से आखिर नरक में पड़ना होता है. तिस से बिहतर यह है, कि तपस्या कीजिये और भगवान की याद में रहिये; कि जिस से आइ'दे को भला होवे.

यह बात दिल में ठान, महल में जा रानी से पूछा कि तू ने वह फल क्या किया. उन्ने कछा में खागई. तब राजा ने वह फल रानी को दिखाया. वह देखतेही भैचकसी रह गई; और कुछ जवाब न बन आया. फिर, राजा ने बाहर आ, उस फल को धुलवाकर खाया; और राजपाट छोड़, जोगी बन, अकेला, बिन कहे सुने, बन को सिधारा.

विक्रम का राज खाली रहा. जब यह खबर राजा इन्द्र को पजंची तो उसने एक देव धारा नगर की रखवाली को भेजा. वह दिन रात उस शहर की चौकी दिया करता. गरज इस बातका शहर: मुल्क बमुल्क ऊआ कि राजा भरथरी राज छोड़ निकल गया. यह खबर राजा विक्रम भी सुनतेही तुरंत अपने देस में आया. उस वक्त आधी रात थी; उस समैं नगरी में जाता था कि वह देव पुकारा तू कौन है? और जाता है कहां? खड़ा रह; अपना नाम बता. तब राजा ने कहा मैं हूं राजा विक्रम; अपने शहर में जाता हूं; तू कौन जो मुझे

रोकता है ? तब देव बोला, कि मुझे देवताओं ने इस नगरी की रखवाली को भेजा है ; जो तुम सच राजा विक्रम हो तो पहले मुझ से लड़ो, पीछे शहर में जाओ ।

इस बात के सुनते ही, राजा ने चरना काँककर उस देव को ललकारा. फिर वह देव भी उनके सनमुख ऊँचा लड़ाई होने लगी. निदान, राजा देवको पछाड़ उस की छाती पर चढ़ बैठा. तब उन ने कहा ऐ राजा ! तू ने मुझे पछाड़ा ; मैं तुझे जीदान देता हूँ. तब तो राजा ने हंसकर कहा तू दीवानः ऊँचा है ; किस को जीदान देता है ; मैं चाहूँ तो तुझे मार डालूँ ; तू मुझे जीदान क्या देगा. तब वह राक्षस बोला कि ऐ राजा ! मैं तुझे काल से बचाता हूँ ; पहले मेरी एक बात सुन ; फिर बेपरवा तमाम दुनिया का राज कर. आखिर, राजा ने उसे छोड़ दिया और उस की बात दिल देके सुने लगा.

फिर देव ने यह उस से कहा कि, इस शहर में चंद्रमान(१) नाम एक राजा बड़ा दाता था. इत्तिफाकन, एक रोज़ वह जङ्गल को निकल गया तो देखता क्या है कि एक तपस्वी दरखत में उलटा लटका ऊँचा है, और धूआँ पी पीकर रहता है ; न किसू से कुछ लेता है, न बात करता है. उसका यह हाल देख, राजा ने अपने घर आ, सभा में बैठकर यह कहा जो कोई इस तपस्वी को लावे वह लाख रुपये पावे. इस बात को सुनकर, एक बेसवाने राजा के पास आ अर्ज यह की, अगर महाराज की आज्ञा

पाऊं तो उसी तपस्वी से एक लड़का जनवा, उसी के कांधे पर चढ़ाकर, ले आऊं.

इस बात के सुन्ने से राजा को अचंभा हुआ और उस बेसवा को तपस्वी के लाने के वास्ते बीड़ा देकर रखसत किया. वह उस बन में गई; और जोगी के मकान पर पहुंच देखती क्या है कि वह जोगी सचही उलटा लटक रहा है; न कुछ खाता न पीता है, और सूख रहा है. गरज, उस बेसवा ने हलवा पका उस तपस्वी के मुंह में दिया. उसे मीठा जो लगा तो वह उसे चाट गया. फिर उस बेसवा ने और लगा दिया. इसी तरह से दो रोज तक हलवा चटाया की. उस के खाने से एक कुब्जत उसे हुई. तब उस ने आंखें खोल, दरखत से नीचे उतर, इससे पूछा तू यहां किस काम को आई?

बेसवा ने कहा मैं देवकन्या हूं; स्वर्ग लोक में तपस्या करती थी; अब इस बन में आई हूं. फिर उस तपस्वी ने कहा तुम्हारी मंडी कहां है, हमें दिखाओ. तब वह बेसवा उस तपस्वी को अपनी मंडी में लाकर, घटरस भोजन करवाने लगी तो तपस्वी ने धूआं पीना छोड़ दिया; और हर रोज खाना खाने पानी पीने लगा. निदान काम-देवने उसे सताया. फिर तपस्वी ने उससे भोग किया, योग खोया; और बेसवा को गर्भ रहा. दस महीने में लड़का पैदा हुआ. जब कई एक महीने का हुआ, तब उस रण्डी ने तपस्वी से कहा कि गुसाईं जी अब चलकर तीर्थ यात्रा कीजिये; जिससे शरीर के सब पाप कटें.

ऐसी बातें कर उसे भुला, लड़का उस के कांधे पर चढ़ा, राजा की मजलिस को चली कि जहां से वह उस बात का बीड़ा उठाकर आई थी. जिस वक्त राजा के साम्हने पड़ंची, राजा उसको दूरसे पहचान, और लड़के को उस तपस्वी के कांधे पर देख, अहलि मजलिस से कहने लगा, देखो तो यह वही बेसवा है जो जोगी के लेने को गई थी. उन्होंने ने अर्ज की कि मछाराज ! सच फरमाते हो, यह वही है ; और मुलाहजः फरमाइये कि जो जो बातें ज़जूर में अर्ज कर गई थी, वे सब वकूअ में आई.

ये बातें राजा की ओर मजलिसियों की जब योगी ने सुनी तो समझा कि राजा ने मेरी तपस्या के डिगाने के लिये यह जतन किया था. योगी यह अपने जी में बिचार कर, वहां से उलटा फिर, शहर के बाहर निकल, उस लड़के को मार डाल, और एक जङ्गल में जा, योग करने लगा. और बअद चन्द रोज के उस राजा का वाकिअः ऊआ ; और योगी ने योग पूरा किया.

गरज इसका व्यौरा यह है कि तुम तीन आदमी एक नगर में और एक नक्षत्र, योग, मङ्गरत में पैदा हुए हो. तुम ने राजा के घर में जन्म लिया ; दूसरा तेली के ऊआ ; तीसरा जोगी कुम्हार के घर पैदा ऊआ. तुम तो यहां का राज करते हो. और तेली का बेटा पातालके राज का मालिक था ; सो उस कुम्हार ने खूब अपना जोग साध, तेलीको मार, मरघट में पिशाच बना, सिरसके दरखत में उलटा लटका रक्खा है ; और तेरे मारने की फिक्र में

है; अगर तू उससे बचेगा तो राज करेगा. इस अहवाल से मैं ने तुझे खबरदार किया; तू उससे गाफिल मत रहना. इतनी बात कहकर देव तो चला गया. यह अपने महल में दाखिल हुआ.

जब सुबह ऊई तो राजा बाहर निकल बैठा; और दरबारि आम को ज़क़म किया. जितने छोटे बड़े नौकर चाकर थे, सबने आ आके ज़ज़ूर में नज़रें दीं. और शादियाने बाजने लगे. सारे शहर को अजब एक तरह की खुशी खुरमी हासिल हुई कि जाबजा और घर बघर नाच राग मच गया. फिर राजा धर्मराज करने लगा.

एक दिन का जिक्र है कि शान्तशील नामे योगी, एक फल हाथ में लिये, राजा की सभा में आया; और वह फल उसके हाथ में दे, आसन उस जगह बिठाकर बैठा; फिर एक घड़ी के पीछे चला गया. राजा ने, उसके जाने के बअद, अपने मन में विचारा कि जिसे देव ने कहा था वही तो नही. यह गुमान कर फल न खाया, और भण्डारी को बुलाकर दिया कि इसे अच्छी तरह से रखना. पर जोगी हमेशः इसी तरह से आता और एक फल रोज़ दे जाता.

इत्तिफ़ाक़न, एक रोज़ राजा अपने इस्तबल के देखने को गया; और मुसाहिब भी कुछ साथ थे. इतने में जोगी भी वहां पज़ंचा, और उसी तरह से फल राजा के हाथ दिया. वह उसे उछालने लगा कि एक बारगी हाथ से ज़मीन पर गिर पड़ा; और बंदर ने उठाकर तोड़ डाला.

ऐसा एक लअल उस में से निकला कि राजा और उसके मुसाहिब उसकी जात को देख हैरान हुए. तब राजा ने जोगी से कहा कि तू ने यह लअल मुझे किस वास्ते दिया.

तब उसने कहा ऐ महाराज ! शास्त्र में लिखा है कि खालीहाथ इतनी जगह न जाय. राजा, गुरु, जोतिषी, बैद, बेटी के; इस वास्ते, कि यहां फल से फल मिलता है. ऐ राजा ! तुम एक लअल को क्या कहते हो, मैं ने जितने फल तुम को दिये हैं, उन सब में रतन है. यह बात सुन, राजा ने भण्डारी से कहा जितने फल तुम्हें दिये हैं, उन सबको ले आ. भण्डारी, राजा की आज्ञा पा, तुरंत ले आया. और उन फलों को जो तुड़वाया तो सब में से एक एक लअल पाया. जब इतने लअल देखे तो राजा निहायत खुश हुआ; और रतनपारखी को बुलवा, लअलों को परखवाने लगा; और यों बोला कि साथ कुछ नहीं जायगा; दुनिया में धर्म बड़ी चीज है; जो कुछ हर एक परबका मोल हो सो धर्म से कह दीजिये.

यह बात सुन जौहरी बोला कि महाराज ! तुम ने सब फरमाया. जिसका धर्म रहेगा उसका सब कुछ रहेगा; धर्मही साथ जाता है; और वही दोनों जहान में काम आता है. सुनो महाराज ! हर एक परब अपने रंग संग ढंग में दुरुस्त है. अगर हर एक का मोल कड़ोड़ कड़ोड़ कहें, तौभी हो नहीं सकता. फिलवाकिअ एक एक इकलीम एक एक लअल की कीमत है. यह सुन राजा बज्जत सा खुश हो, जौहरी को खिलअत दे रखसत कर,

योगी का हाथ पकड़, गद्दी पर ले आया ; और कहने लगा, मेरा तो सारा मुल्क भी एक लअल का बच्चा नहीं है. तुम ने दिगंबर होकर जो इतने रतन मेरे तईं दिये हैं, इस का बिचार क्या है, सो तुम मुझ से कहो.

योगी बोला राजा ! इतनी बातें जाहिर करनी मुना-सिव नहीं. यन्त्र, मन्त्र, औषध, धर्म, घर का अछवाल, हराम का खाना, बुरी बात सुनी ऊई ; ये सब बातें मजलिस में कही नहीं जातीं ; खलवत में कइंगा. सुनो ! यह काइद है, जो बात छः कान में पड़ती है वह मखफी नहीं रहती ; चार कान की बात कोई नहीं सुनता ; और दो कान की बात ब्रह्मा भी नहीं जानता ; आदमी का तो क्या जिक्र है. यह बात सुन, योगी को निराले में ले, राजा पूछने लगा कि गुसाईं जी ! तुमने इतने लअल मुझे दिये और एक रोज़ भी भोजन न किया ; मैं तुमसे बज्रत शरमिंदः हूं ; अपना जो मतलब हो सो कहो. योगी बोला राजा ! गोदावरी नदी के तीर महाश्वशान में मंत्रसिद्धि करूंगा ; उसे अष्टसिद्धि मुझे मिलेगी. सो मैं तुम से भिक्षा मांगता हूं, एक रोज़ तुम मेरे पास रात भर रहना. तुम्हारे पास के रहने से मेरा मंत्र सिद्ध होवेगा. तब राजा ने कहा खूब मैं आजंगा ; तुम वह दिन हमें बता जाओ. योगी बोला भादों बदी चौदस, मंगलवार की सांझ, द्वादशवार बांध, अकेले तुम मेरे पास आना. राजा ने कहा तुम जाओ, मैं मुक़र्रर तनहा आजंगा.

इस तरह, राजा से बचन ले रखसत हो, मठ में जा

तैयार हो, सब सामान ले, वह तो मरघट में जा बैठा. और यहां राजा अपने जो में फिक्र करने लगा. इसमें वह साअत भी आन पड़ंची. तब राजा वहां तलवार बांध, लंगोट कस, अकेला शब को जोगी के पास जा पड़ंचा, और उस को आदेस सुनाया. जोगी ने कहा आओ बैठो. फिर राजा वहां बैठ गया तो देखता क्या है कि चारों तरफ भूत, प्रेत, डायन तरह बतरह की हौलनाक सूरतें बनाये नाचती हैं; और जोगी बीच में बैठा दो कपाल बजाता है. राजा ने यह अहवाल देख कुछ डर भौ न किया; और जोगी से कहा मुझे क्या आज्ञा है. उसने कहा राजा! तुम आये हो तो एक काम करो. यहां से दक्षिण तरफ दो कोस पर एक मरघट है; उस में एक सिरस का दरखत; तिस में एक मुर्द लटकता है. उसे मेरे पास तुर्त लाओ, कि मैं यहां पूजा करता हूं. राजा को उधर भेज आप आसन मार जप करने लगा.

एक तो, अंधेरी रात की डराती थी; दूसरे, मेहकी ऐसी भड़ी लगी ऊई, गोया, आज बरस कर फिर कभी न बरसेगा; और भूत पलीद ऐसा शेर गुल करते थे कि सूर बीर भी हो तो देखकर घबरा जाय. लेकिन, राजा अपनी राह चला जाता था. सांप जो आन आन पांव में लिपटते तो उनकी मन्त्र पढ़ कुड़ा देता. निदान, जों तों कठिन बाट काट कर, राजा उस मसान में पड़ंचा तो देखा कि भूत पकड़ पकड़ आदमियों को दे दे मारते हैं; डायन लड़कों के कलेजे चबाती हैं; शेर दहाड़ते हैं;

हाथी चिंघाड़े मारते हैं। गरज, उस दरखत को जो ध्यान कर देखा तो जड़से फुनंग तलक हर एक डाल पात उसका दहड़ दहड़ जलता है। और हर चहार तरफ से एक गौगा बरपा हो रहा है कि मार मार, ले ले, खबरदार, जाने न पावे।

राजा उस अहवाल को देख न डरा; लेकिन अपने जी में कहता था, हौं न हो, यह वही योगी है, जिसकी बात मुझ से देवने कही थी; और पास जा कर जो देखा तो एक मुर्द रस्सी से बंधा उलटा लटकता है। मुर्द को देख, राजा खुश हुआ कि मेरी मिहनत सुफल हुई। खांडा फरी ले, उस पेड़ पर निरभै चढ़, एक हाथ तलवार का ऐसा मारा कि रस्सी कट मुर्द नीचे गिर पड़ा; और गिरते ही, दाढ़ें मार मार रोने लगा। तब राजा, उसकी आवाज़ सुन खुश हो, अपने दिल में कहने लगा भला यह आदमी जीता तो है; फिर उतर कर, उसे पूछा तू कौन है? वह सुनते ही खिलखिलाके हंसा। राजा को इस बात का बड़ा अचंभा हुआ। फिर वह मुर्द उसी दरखत पर चढ़कर लटक गया। राजा भी, वींही चढ़कर, उसे बगल में दबा, नीचे ले आया; और कहा चंडाल! तू कौन है? मुझ से कह। उसने कुछ जवाब न दिया। राजा ने सोच कर जीमें कहा शायद यह वही तेली है जो देवने कहा था, कि योगी ने मसान बनाकर रक्खा है। यह बिचार, उसे चादर में बांध, योगी के पास ले चला। जो नर ऐसा साहस करेगा, वह सिद्ध होवेगा।

तब वह बैताल बोला तू कौन है? और कहाँ लिये जाता है. राजा ने जवाब दिया कि मैं राजा विक्रम हूँ; तुझे योगी पास लिये जाता हूँ. उसने कहा एक शर्त से चलता हूँ; जो रास्ते में तू बोलेगा तो मैं उलटा फिर आऊंगा. राजा ने उसकी शर्त मानी और ले चला. फिर बैताल बोला ऐ राजा! पंडित, चतुर, बुद्धिमान लोग जो हैं, तिनके दिन तो गीत और शास्त्र के आनन्द में कटते हैं; और क्रूढ़ मूर्खों के दिन कलकल और नींद में. इससे बिहतर यह है कि इतनी राह अच्छी बातों के चर्चे में कट जाय. ऐ राजा! जो मैं कथा कहता हूँ उसे सुन.

पहली कहानी.

एक राजा प्रतापमुकुट(१) नाम बनारसका था. और उस के बेटे का नाम बजरमुकुट.(२) जिसकी नारीका नाम महादेवी. एक दिन कुंवर, अपने दीवान के बेटे को साथ ले, शिकार को गया; और बड़त दूर जंगल में जा निकला; और उस के बीच एक सुंदर तालाब देखा कि उस के कनारे हंस, चकवा, चकवी, बगले, मुर्गीबियां सब के सब कलोल में थे; चारों तरफ़ पुखत घाट बने ऊए; कंवल तालाब में

(१) प्रतापमुकुट.

(२) वज्रमुकुट.

फूले ऊँए; कनारों पर तरह बतरह के दरखत लगे ऊँए कि जिन की घनी घनी छांह में ठंडी ठंडी हवा आती थी; और पंखी पखेरू दरखतों पर चहचहों में थे; और रंग बरंग के फूल बन में फूल रहे थे; उन पर मौरीयों के भुंड के भुंड गूँज रहे; कि ये उस तालाब के कनारे पंजचे और मुंह हाथ धो कर, ऊपर आये.

वहाँ एक महादेव का मंदिर था. घोड़ों को बांध, मंदिर के अंदर जा, महादेव का दर्शन कर, बाहर निकले. जितनी देर उन को दर्शन में लगी, उतने अरसे में, किसू राजा की बेटी, सहेलियों का भुंड साथ लिये ऊँए, उसी तालाब के दूसरे कनारे पर अशनान करने आई. सो अशनान, ध्यान, पूजा कर सहेलियों को साथ लिये, दरखतों की छांह में टहलने लगी. इधर, दीवान का बेटा बैठा था; और राजा का बेटा फिरता था, कि अचानक उस की और राजा की बेटी की चार नजरें ऊँई. देखते ही उस के रूपको, राजा का बेटा फरेफतः ऊँआ; और अपने दिल में कहने लगा कि ऐ चंडाल काम! मुझ को क्यों सताता है. और उस राजपुत्री ने उस कुंवर को देख, सिर में जो कंवल का फूल पूजा करके रक्खा था, वही फूल हाथ में ले, कान से लगा, दांत से कुतर, पांवतले दिया; फिर उठा क्वाती से लगा लिया; और सखियों को साथ ले, सवार हो, अपने मकान को गई.

और यह राजपुत्र, निहायत निराश हो, विरह में डूबा ऊँआ, दीवान के लड़के के पास आया; और साथ शर्म के

उस के आगे हकीकत कहने लगा कि ऐ मित्र ! मैं ने एक अति सुन्दरी नायका देखी ; न उस का नाम जानता हूँ, न ठांव. जो वह मुझे न मिलेगी तो मैं अपनी जान न रक्खूंगा ; यह मैंने अपने जी में निश्चय विचारा है. यह अहवाल दीवानका बेटा सुन, उसे सवार करवा घर को तो ले आया. पर राजा का बेटा, बिरह की पीर से, ऐसा बेकल था कि लिखना, पढ़ना, खाना, पीना, सोना, राज-काज सब कुछ तज बैठा. नक़्श उस की सूरत का लिख लिख देखता और रोता. न अपनी कहता न और की सुनता.

दीवान के बेटे ने यह हालत उस को, जो बिरह से ऊई थी, जब देखी तो उससे कहा कि जिसने इशक की राह में कदम रक्खा है, फिर वह जिया नहीं ; और जो जिया तो उस ने बड़त दुख पाया. इसवास्ते ज्ञानी लोग इस राह में पांव नहीं रक्खते. फिर, उस की बात सुन, राज-कुमार बोला मैंने तो इस पंथ में पांव दिया ; इस में सुख हो, या दुख. जब ऐसा मजबूत कलाम उसका सुना तब वह बोला कि महाराज ! तुम से, चलते वक्त, कुछ उसने कहा था, या तुम ने कुछ उस से. फिर उसने जवाब दिया कि न मैं ने कुछ कहा, न उस से कुछ सुना. तब दीवान का बेटा बोला उसका मिलना बड़त मुश्किल है. उसने कहा जो वह मिली तो हमारी जान रही, नहीं तो गई.

फिर उस ने पूछा कुछ इशारः किनायः भी किया था. कुंवर ने कहा जो उस ने हरकतें की थीं सो ये हैं ; कि एका

एकी मुझ को देख, सिर पर से कंवल का फूल उतार, कान से लगा, दांत से कुतर, पांव तले देकर, छाती से लगा लिया। यह सुन, दीवान के बेटे ने कहा, उस के इशारों को हम समझे हैं; और नांव ठांव सब उसका जाना। वह बोला जो समझे हो सो बयान करो। यह कहने लगा; सुनो राजा! कंवल का फूल, सिर से उतार, कान से जो लगाया, तो गोया उन्ने तुम को बताया कि मैं करनाटक(१) की रहनेवाली हूं; और दांत से जो कुतरा, सो कहा कि दन्तवाट राजाकी बेटी हूं; और पांव से जो दबाया, सो कहा, पद्मावती मेरा नाम है; और फिर उठा छाती से जो लगाया, सो कहा तुम तो मेरे हृदय में बसे हो। जब इतनी बातें कुंवर ने सुनी तो उस से कहा, बिहतर यह है कि मुझे उस के शहर में ले चलो। यह कहते ही, कपड़े पहन, हथियार बांध, कुछ जवाहिर ले, घोड़ों पर सवार हो, दोनों ने उस सिम्त की राह ली।

कई दिन के बअद, करनाटक देस में पहुंच, शहर की सैर करते ऊये, राजा के महलों के नीचे आये तो वहां देखते क्या है कि एक बुढ़िया अपने दरवाजे पर बैठी ऊई चर्खा कातती है। ये दोनों, घोड़ों से उतर, उस पास जा, कहने लगे माई! हम मुसाफिर सौदागर हैं; माल हमारा पोछे आता है; और हम जगह ढूंढने के वास्ते आगे बढ़ आये हैं; जो हमें जगह दे तो हम रहें। बुढ़िया, उनकी सूरतों को देख, और बातों को सुन, रहम कर

बोली, यह घर तुम्हारा है; जब तलक जी चाहे रहो। गरज, यह सुन मकान में उतरे, तो कितनी एक देर के बअद, बुढ़िया मिहरबानी से उन पास आन बैठ बातें करने लगी। इस में दीवान के बेटे ने उस से पूछा, तेरी आल औलाद और कुनबे में कौन है, और कौंकर गुजरान होती है। बुढ़िया ने कहा बेटा मेरा राजा की खिदमत में बज्जत अच्छी तूरह से आसूदः है; और पद्मावती जो राज कन्या है, बंदी उसकी दूधपिलाई है। इस बुढ़ापे के आने से घर में रहती हूं। पर राजा मेरे खाने पीने की खबर लेता है। मगर उस लड़की के देखने को रोज़ एक वक्त जाती हूं; वहां से आनकर, घर में ही अपना दुखड़ा किया करती हूं।

यह बात राजपुत्र ने सुन, दिल में खुश हो, बुढ़िया से कहा कल जिस वक्त जाने लगे तो एक संदेसा हमारा भी लेती जाइयो। उस ने कहा बेटा! कल पर क्या, मौकूफ है अभी मुझ से जो कुछ कहै सो मैं तेरा पैगाम पज्ंचा दूं। तब उस ने कहा, तू इतना जाकर कहदे, कि जेठ सुदी पंचमी को, तालाब कनारे, जिस राजपुत्र को तुम ने देखा था, सो आन पछूंचा है।

इतनी बात के सुनतेही, बुढ़िया लाठी हाथ में लिये, राजमंदिर को गई। वहां जाकर देखा, कि राजकन्या अकेली बैठी है। जब यह सान्ह ने पहुंची, तो उस ने सलाम किया। यह असीस देकर बोली कि धीया! बालकपन में तेरी खिदमत की और दूध पिलाया; अब भगवान ने

तुझे वड़ा किया. यह जी चाहता है, कि तेरी जवानी का सुख देखूं, तो मुझे भी चैन होवे. इसी तरह की बातें महबूत आमेज़ कर, कहने लगी कि जेठ सुदी पंचमी को, तालाब कनारे, जिस कुंवर का तू ने मन लिया है, सो मेरे घर आनकर उतरा है. उस ने तुझे यह संदेसा दिया है, कि जो हम से बचन किया था वह अब पूरा करो; हम आन पड़चे हैं. और मैं भी यह कहती हूं, कि वह कुंवर तेरे ही जोग है; जैसी तू रूपवती, वैसा ही वह गुनवंत है.

ये सब बातें सुन, खफ़ा हो, हाथों में चंदन लगा, बुढ़िया के गालों में तमाचे मार, वह कहने लगी, कमबख़्त! मेरे घर से निकल. यह दिक् हो, उसी तरह से उठती बैठती कुंवर पास आई; और सब अपना अहवाल कहा. राज-कुमार सुनकर हक्का बक्का हो गया. तब दीवान का बेटा बोला महाराज! कुछ फ़िक्र न कीजिये; यह बात आप के ध्यान में नहीं आई. फिर उस ने कहा सच है; पर तू मुझे समझा कि मेरे जी को चैन होवे. उस ने कहा जो दसों उंगलियां, संदल की भरकर, मुंह पर मारी, तो उन्ने यह बताया, कि दस रोज़ चांदनी के हो चुके, तो अंधेरी में मिलूंगी.

गरज, दस रोज़ के बअद, बुढ़िया ने उस की ख़बर फिर जा कही. तब उस ने, केसर से तीन उंगलियां भर, उस के गाल पर मारी; और कहा निकल मेरे घर से. आखिर, बुढ़िया लाचार होकर वहां से चली; और जो कुछ ब्योरा था, सो सब राजपुत्र से आकर कहा. यह सुनते ही, गम के दरया में डूब गया. उस का यह अहवाल देख, फिर

दीवान के बेटे ने कहा अंदेश न कर; इस बात का मुद्दा कुछ और है. वह बोला मेरा जी बेचैन है; मुझ से जलद कहो. तब उस ने कहा, वह उस हाल में है जो महीने महीने औरत का होता है; इस लिये, और तीन दिन का वअद किया है; चौथे दिन वह तुम्हें बुलायगी. गरज, जब तीन दिन हो चुके, तो बुढ़िया ने उस की तरफ से खैर ओ आफियत पूछी. तब उस ने बुढ़िया को, खफा हो, पच्छम तरफ की खिड़की पास लाकर, निकाल दिया. फिर यह अहवाल बुढ़िया ने राजकुंवर से आकर कहा. वह सुनकर उदास हुआ. इतने में दीवान का पुत्र बोला, कि इस बात का ब्यौरा यह है, कि आज रात के वक्त तुम को उसी खिड़की की राह बुलाया है. यह सुनतेही निहायत खुश हुआ. गरज जब वह वक्त आया, ऊदे रंग के जोड़े निकाल, चुन बना पगड़ियां बांध, कपड़े पहन, हथियार सज, सजा तैयार हुए कि इस अरसे में दोपहर रात गुजर गई. उस वक्त एक आलम सुनसान का था, कि ये भी वहां से सूट मारे चुपचाप चले जाते थे.

जब खिड़की पास पहुंचे, दीवान का बेटा बाहर खड़ा रहा, और यह खिड़की के अन्दर गया. देखता क्या है, कि राजकन्या भी वहीं खड़ी राह देखती है; कि इस में इन दोनों की चार नजरें ऊईं. तब राजकन्या हंसी, और खिड़की बंदकर, राजकुंवर को साथ ले, रंगमहल में गई. वहां जाकर कुंवर देखता क्या है, कि जा बजा लखलख रोशन और सहेलियां रंगारंग की पोशकें पहने हाथ

बांधे बाअदब अपने अपने रतबे से खड़ी हैं; एक तरफ़ सेज फूलों की बिक्री है; अपने अपने करीने से अतरदान, पानदान, गुलाबपाशें चंगेरें चौधरे आरास्तः किये ऊए धरे हैं; और एक तरफ़ चौआ, चन्दन, अरगजा, कस्तूरी, केसर कटोरियों में भरा ऊआ धरा है; कहीं अच्छी अच्छी मअजूनों की रंगीन डिबियां चुनी हैं; कहीं भांति भांति के पकवान धरे हैं; तमाम दर ओ दीवार नक़्श ओ निगार से आरास्तः और उन पर ऐसी सूरतें बनी ऊई हैं, कि हर एक देखतेही मही हो जावे. गरज, सारे ऐस ओ तरब के साज ओ सामान मुहैया हैं. अजब समैं का आलम है कि जिसका कुछ बयान नहीं हो सकता.

उसी मकान में रानी पद्मावती ने राजकुंवर को ले जा बिठलाया; और पांव धुलवा, संदल बदन में लगा, फूलों के हार पहना, गुलाब छिड़क, पंखा अपने हाथ से झलने लगी. इस में कुंवर बोला, हम तुम्हारे देखने सेही ठंढे ऊए; इतनी मिहनत क्यों करती हो; तुम्हारे ये नाजुक नाजुक हाथ पंखे के लायक नहीं; पंखा हमें दो, तुम बैठो. पद्मावती बोली, कि महाराज! आप बड़ी मिहनत करके हमारे वास्ते आये हैं; हमें आप की खिदमत करनी लाज़िम है. तब एक सहेली ने, रानी के हाथ से पंखा लेकर, कहा यह हमारा काम है; हम खिदमत करें; और तुम आपस में आनन्द करो. वे बाहम पान खाने लगे; और इख्तिलात की बातें करने; कि इतने में भोर ऊई. राजकन्या ने उसे छिपा रक्खा. जब रात ऊई,

तो फिर बाह्यम ऐश में मशगूल ऊए. इसी तरह से कितने एक दिन बीत गये. राजकुंवर जब जाने का इरादा करे तो राजकन्या जाने न दे. इसी तरह से एक महीना गुजर गया. तब तो राजा बज्रत घबराया और फिक्रमंद ऊआ.

एक रोज़ की बात यह है, कि रात के वक्त, अकेला बैठा ऊआ, यह जो में चिन्ता करता था कि देस, राजपाट, घर सब कुछ तो कुटाही था; पर एक ऐसा दोस्त हमारा, कि जिसके बाइस से यह सुख पाया, उससे भी महीने भर से मुलाकात नहीं ऊई. वह अपने जी में क्या कहता होगा; और क्या जानिये, उस पर कैसी गुजरती होगी. इसी फिक्र में बैठा ऊआ था, कि इतने में राजकन्या भी आन पहुंची; और उसकी हालत देखकर, पूछने लगी महाराज ! तुम्हें क्या दुख है, जो तुम ऐसे उदास बैठे हो, मुझे कहो. तब वह बोला कि एक दोस्त हमारा बज्रत प्यारा दीवान का बेटा है; उसका कुछ अहवाल, महीने भर से, मञ्जलूम नहीं. वह ऐसा चतुर पंडित मित्र है कि उसीके गुनों से मैंने तुम्हें पाया; और उन्हीं ने तेरा सब भेद बताया. राजकन्या बोली महाराज ! तुम्हारा चित तो वहां है, तुम यहां सुख क्या करोगे. इससे बिहतर यह है, कि मैं पकवान मिठाई सब कुछ तैयार करके भिजवाती ऊं; आप भी सिधारिये. उसको खिला, पिला, बज्रतसी तसल्ली कर, खातिर जमअ से फिर आइये.

यह सुन्तेही, राजकुंवर वहां से उठकर बाहर आया. और रानी ने बिष मिलवा तरह बतरह की मिठाई बनवा-

कर भिजवाई. कुंवर मन्त्री के पुत्र के पास जाकर बैठाही था, कि इतने में वह मिठाई आन पड़ची. प्रधान के बेटे ने पूछा महाराज ! यह मिठाई किस तरह से आई. राज-पुत्र बोला मैं वहां तेरी चिंता में उदास बैठा था, कि इतने में रानी ने आ, मेरी तरफ देखकर, पूछा उदास क्यों बैठे हो ; कुछ सबब उसका बताओ. फिर, मैं ने तेरे भेद चतुराई के सब उससे बयान किये. तब यह अहवाल सुनके उसने मुझे तेरे पास आने की इजाजत दी, और यह तेरे वास्ते भिजवाई ; जो तू इसे खायगा, तो मेरा भी जी खुश होगा. तब प्रधान का बेटा बोला, तुम मेरे वास्ते ज़हर लाये हो. इसी में खैर ऊई, कि आपने नहीं खाई. महाराज ! एक बात मेरी सुनिये, कि रंडी अपने दोस्त के दोस्त को नहीं चाहती. आपने यह खूब न किया, जो मेरा नाम वहां लिया. यह सुन कुंवर बोला ऐसी बात तुम कहते हो जो कभी किससे नहो. अगर आदमी आदमी से न डरे, पर भगवान से तो डरेगा.

इतना कह, उसने उसमें से एक लड्डू कुत्ते के आगे डाल दिया. जौंहीं कुत्ते ने खाया, वौंहीं छटपटाके मर गया. यह तौर देख, राजपुत्र अपने जी में गुस्से हो, कहने लगा, ऐसी खोटी रंडी से मिलना लाजिम नहीं. आज तक तौ मेरे दिल में उसकी महबूबत थी ; पर अब मअलूम. यह सुन दीवान का बेटा बोला महाराज ! जो ऊआ सो ऊआ ; अब वह बात किया चाहिये, जिससे उस को अपने घर ले चलिये. राजपुत्र बोला, भाई ! यह भी

तुम्हीं से होगा. दीवान के बेटे ने कहा, आज एक काम कीजिये; फिर पद्मावती के पास जाइये, और जो कहें सो कीजिये; पहले तो उस से जाकर बज्रत सा इखलास प्यार करो; जब वह सो जावे, तब उसका ज़ेवर उतार, यह त्रिशूल उस की बाईं जांघ में मार, वहां से तुरन्त चले आओ.

यह सुन राजकुमार रातको पद्मावती पास गया. और बज्रत सी बातें दोस्ती की कर, दोनों मिलके सो रहे. लेकिन, बातिन में यह काबू देखता था. गरज, जब राज-कन्या सो गई, तो उन्ने सारा गहना उतार लिया, और बाईं जांघ में त्रिशूल मार अपने मकान को चला आया. सारा अहवाल प्रधान के बेटे से बयानकर, सब गहना उसके आगे रख दिया. फिर वह ज़ेवर उठा, राजकुमार को साथ ले, योगी का भेष बना, एक मसान में जा बैठा. आप तो गुरु बना; और उसे चेला ठहराकर, उससे कहा तू बाज़ार में जाकर, इस गहने को बेच. अगर कोई इस में तुझे पकड़े, तो उसे मेरे पास ले आना.

उसकी बात सुन, राजपुत्र ने ज़ेवर को ले, शहर में जा, मुत्तसिल राजा की डिऊड़ी के एक सुनार को दिखाया. उसने देखतेही, पहचानकर कहा यह राजकन्या का गहना है; सच कह तूने कहा पाया. यह उससे कह रहा था, कि दस बीस आदमी और भी इकठे हो गये. गरज, कोत-वाल ने यह ख़बर सुन, आदमी भेज, राजकुमार को मण ज़ेवर और सुनार पकड़वा मंगाया; और उस ज़ेवर को

देख, उससे पूछा कि सच कह तूने कहां से पाया. जब उस ने कहा कि मुझे गुरु ने बेचने को दिया है, पर मुझे मञ्जूलूम नहीं कि वे कहां से लाये, तब कोतवाल ने उस के गुरु को भी पकड़वा मंगाया ; और दोनों को, ज़ेवर समेत, राजा के हज़ूर में लाकर, तमाम अहवाल अर्ज किया.

यह माजरा सुन के, राजा योगी से पूछने लगा कि नाथजी ! यह गहना तुम ने कहां से पाया. योगी बोला महाराज ! काली चौदस की रात को मैं मरघट में डाकिनी मन्त्र सिद्ध करने को गया था. जब वह डाकिनी आई, तो मैंने उस का ज़ेवर और कपड़ा उतार लिया ; और बाईं जांघ में उस की त्रिशूल का निशान कर दिया. इस तरह से यह गहना मेरे हाथ आया है. यह बात राजा योगी से सुन महल में गया ; और योगी आसन पर. राजा ने रानी से कहा तू पद्मावती की बाईं जांघ में देख तो निशान है कि नहीं, और कैसा निशान है. रानी ने जाकर देखा तो त्रिशूल का दाग है ; राजा से आकर कहा महाराज ! तीन निशान बराबर हैं ; पर ऐसे मञ्जूलूम होते हैं, गोया किसूने त्रिशूल मारा है.

यह बात सुन, बाहर आ, राजा ने कोतवाल को बुलवाकर कहा जाओ योगी को ले आओ. कोतवाल, ऊकम पाते ही, योगी के लेने को गया. और राजा अपने मनमें चिंता करके कहने लगा कि अहवाल घर का, और दिल का इरादा, और जो कुछ नुकसान हो, सो किसूके आगे जाहिर करना मुनासिब नहीं ; कि इतने में कोतवाल ने योगी को

ला हज़िर किया. फिर योगी को राजा ने कनारे ले जा पूछा गुसार्ई जी ! धर्मशास्त्र में स्त्रीके वास्ते क्या दंड लिखा है. तब योगी बोला महाराज ! ब्राह्मण, गौ, स्त्री, लड़का और जो कोई अपने आसरे में हों ; अगर उन में जिस किसू से कुछ खोटा काम हो, तो उन के वास्ते यह दंड लिखा है कि देस निकाला दीजिये.

यह सुन के राजा ने पद्मावती को डोली में सवार करवा, एक जंगल में छोड़वा दिया. फिर अपने मक़ाम से राजकुमार और दीवान का बेटा दोनों घोड़ों पर सवार हो, उस बन में जा, रानी पद्मावती को साथ ले, अपने शहर को चले. बअद चंद रोज़ के दोनों अपने अपने बाप पास जा पज़ंचे. सब छोटे बड़ों को निहायत खुशी ऊई ; और ये बाहम एंश करने लगे.

इतनी बात कह, बैताल ने राजा बीर बिक्रमाजीत (१) से पूछा, उन चारों में पाप किस को ऊआ. जो तुम इस बात का न्याव न करोगे तो तुम नरक में पड़ोगे. राजा बिक्रम बोला, कि उस राजा को पाप ऊआ. बैताल ने कहा राजा को किस तरह से पाप ऊआ. बिक्रम ने यह उस को जवाब दिया, कि दीवान के बेटे ने तो अपने खाविंद का काम किया ; और कोतवाल ने राजा का ऊकम माना ; और राजकन्या ने अपना मक़सद हासिल किया. इससे यह पाप राजा को ऊआ कि बिना बिचारे उसे देस निकाला दिया. इतनी बात राजाके मुंह से सुन बैताल उसी दरख़त पर जा लटका.

दूसरी कहानी.

राजा देखे, तो बैताल नहीं है. फिर उलटा फिरा, और उस जगह पञ्च, दरखत पर चढ़, उस मुरदे को बांध, काँधे पर रख के ले चला. तब बैताल बोला, कि राजा ! दूसरी कथा यों है,

कि यमुना के तीर, धर्मस्थल नाम एक नगर है ; कि जहाँ का गुणाधिप नाम राजा. और वहाँ केशव नाम ब्राह्मण है कि वह यमुना के किनारे जप तप किया करता है. और उसकी बेटीका नाम मधुमावती.(१) वह बड़ी खूब-सूरत थी. जब व्याहने योग ऊई, तब उस के माता, पिता, भाई तीनों उसकी शादी की फ़िक्र में थे. इत्तिफ़ाक़न, एक रोज़ उसका बाप किसी अपने जजमान के साथ शादी में कहीं गया था ; और भाई उसका एक रोज़ गांव में गुरुके यहाँ पढ़ने, कि पीछे उन के घर में एक ब्राह्मण का लड़का आया. उस की माने उस लड़के का गुण रूप देखकर कहा, मैं अपनी लड़की की शादी तुझ से करूंगी. और वहाँ ब्राह्मण ने एक बमनेटे की बेटी देनी कबूल की. और उस के बेटे ने, जहाँ पढ़ने गया था, वहाँ एक ब्राह्मण से वचन हारा कि अपनी बहन तुझे दूंगा.

कितने दिनों के पीछे, वे दोनों उन दोनों लड़कों को साथ ले आये. और यहाँ तीसरा लड़का आगे से बैठा था.

(१) मधुमावती.

एक का नाम त्रिविक्रम; दूसरे का नाम बामन; तीसरे का नाम मधुसूदन. वे तीनों रूप, गुण, विद्या, वैसे में बराबर थे. उन्होंने को देख ब्राह्मण चिन्ता करने लगा कि एक कन्या, और तीन बर; किसे दूं, किसे न दूं; और हम तीनों ने इन तीनों से बचन हारा है. अजब तरह की बात पेश आई; क्या कीजिये.

इस फ़िक्र में बैठा था, कि इतने में उस लड़की को सांपने डसा. वह मर गई. यह ख़बर सुन के, उसका बाप, भाई, वे तीनों लड़के, पांचों मिलकर बड़ी दौड़ धूप कर गुनी, गाडरू, जितने मंच से बिष के भाड़नेवाले थे, उन सब को लाये. उन सबों ने उस लड़की को देखकर कहा, यह जीने की नहीं. पहला यों बोला कि पंचमी, छठ, अष्टमी, नवमी, चौदस इन तिथियों में सांप का काटा आदमी जीता नहीं. दूसरा बोला सनीचर, मंगलवार का डसा ऊआ भी जीता नहीं. तीसरा बोला रोहिणी, मघा, अश्लेषा, बिशाखा, मूल, कृत्तिका इन नक्षत्रों का बिष चढ़ा ऊआ उतरता नहीं. चौथा बोला इंद्री, अधर, कपोल, गला, कौख, नाभि इन अंगों का काटा ऊआ बचता नहीं. पांचवां बोला, यहां ब्रह्मा भी जिला नहीं सकता; हम किस गिनती में हैं. अब आप इस की गति कीजिये; हम बिदा होते हैं. यह कहकर, गुनी तो चले गये. और ब्राह्मण उस मुर्दे को ले जा, मसान में फूंक, आप तो चला गया.

फिर उस के पीछे उन तीनों जवानों ने यह किया, कि एक तो उन में से, उसकी जली ऊई हड्डियों को चुन बांध,

फकीर हो बन बन की सैर को गया. दूसरा, उसकी राख की गठरी बांध, वहीं भोंपड़ी बना रहने लगा. तीसरा जागी हो भोली कंथा ले देस ब देस फिरने लगा. एक दिन किसू देस में एक ब्राह्मण के घर भोजन के लिये गया. वह गृहस्ती ब्राह्मण उसे देख के कहने लगा, अच्छा आज यहीं भोजन कीजिये. यह सुन के वहां बैठ गया. जिस दत्त रसोई तैयार ऊई, उसके हाथ पांव धुला ले जा चौके में बिठा, आप भी उसके पास बैठ गया. और उसकी ब्राह्मणी परोसने को आई. कुछ परोस गई, कुछ बाकी था; कि इतने में उस के छोटे लड़के ने रोकर अपनी मा का अंचल पकड़ा. वह कुड़ाती थी, और लड़का न छोड़ता था; और जों जों भुलाती थी, वह दूना दूना रोता और हट करता था. इस में उस ब्राह्मणी ने खफा हो, लड़के को जलते चूल्हे में उठाकर फेंक दिया. वह लड़का जलकर खाक हो गया.

यह अहवाल जब उस ब्राह्मण ने देखा, तो बिना खाये उठ खड़ा ऊआ. तब वह घरवाला बोला कि तू किसवास्ती भोजन नहीं करता. वह बोला कि जिसके घर में राक्षस काम हो, उसके घर में किस तरह से कोई भोजन करे. यह सुन, उस गृहस्थ ने उठकर एक और तरफ अपने घर में जा, और संजीवनी बिद्या की पोथी ला, उस में से एक मंत्र निकाल, जपकर लड़के को जिला दिया. तब वह ब्राह्मण, यह अजायब देख, अपने जी में चिंता करने लगा, जो यह पोथी मेरे हाथ लगे तो मैं भी अपनी प्यारी को

जिलाऊं. यह अपने मन में ठान, रसोई खा, वहीं रहा. गरज, जब रात ऊई, तो कितनी एक देर के पीछे सब ने आलू किया; और अपनी अपनी जगह जा लेटे; उधर इधर की आपस में बातें करते थे. यह ब्राह्मण भी एक तरफ़ जाकर पड़ा रहा. लेकिन पड़ा पड़ा जागता था.

जब उन्ने जाना कि बड़ी रात गई, और सब सो गये; तब चुपका उठ, आहिस्ते आहिस्ते उस के घर में पैठ, वह पोथी ले चल दिया. और कितने दिनों में, जिस मसान में कि उस ब्राह्मण की बेटी को जलाया था, वहां आन पहुंचा. उन दोनों ब्राह्मणों को भी वहीं पाया, कि आपस में बैठे ऊए बातें करते हैं. उन दोनों ने भी उसे पहचान, उसके पास आ, मुलाकात की; और पूछा कि भाई! तुम देस बिदेस तो फिरे, पर यह कहे कि कोई बिद्या भी सीखी. वह बोला मैंने मृत्युसंजीवनी बिद्या सीखी है यह सुनतेही बोला, जो सीखे हो तो हमारी प्यारी को जिलाओ. उसने कहा कि राख हाड़ का ढेर करो तो मैं जिला दूं. उन्होंने राख हड्डियां इकट्ठी कर दीं. तब उसने पोथी में से एक मंच निकाल जपा. वह कन्या जी उठी. फिर उन तीनों को कामदेव ने यह अंधा किया कि आपस में भगड़ने लगे.

इतनी बात कह कर, बैताल बोला ऐ राजा! यह बता कि वह स्त्री किसकी ऊई. राजा बिक्रम बोला कि जो मंडी बांधकर रहा था, वह नारी उसी की हुई. बैताल बोला जो वह हाड़ न रखता तो वह किस तरह से जीती. और दूसरा बिद्या न सीख आता तो वह कौंकर उसे

जिलाता. राजा ने जवाब दिया कि जिसने उसकी हड्डियां रक्खी थीं वह तो उसके बेटे की जागह ऊँचा. और जिसने जीवदान दिया वह गोया उसका बाप ऊँचा. इससे वह जोरू उसी की ऊँई कि जो राख समेत भोंपड़ी बांध वहाँ रहा. यह जवाब सुन के, बैताल फिर उसी दरखत में जा लटका. राजा भी उसके पीछे पीछे जा पहुँचा. और उसे बांध कांधे पर रख फिर ले चला.

तीसरी कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! बर्दवान(१) नाम एक नगर है. उस में रूपसेन नाम एक राजा. एक रोज़ का इत्तिफ़ाक़ है, कि वह राजा अपनी डिङ्गडी के मुत्तसिल किसी मकान में बैठा था, कि दरवाज़े के बाहर से कुछ ऊपरी लोगों की आवाज़ आने लगी. राजा बोला कि दरवाज़े पर कौन है ? और क्या शोर हो रहा है ? इसमें दरवान ने जवाब दिया महाराज ! आपने यह भली बात पूछी ; दौलतमंद की डिङ्गडी जान धन के लिये बहुतेरे आदमी आन बैठते हैं, और भांति भांति की बातें करते हैं. उन्हीं लोगों का यह शोर है.

(१) बर्दमान.

यह सुन राजा चुप हो रहा. इतने में एक मुसाफिर, दक्षिण दिसा से, बीरबर नाम राजपूत चाकरी करने की आस किये, राजा की डिहड़ी पर आया. दरवान ने उस का अहवाल मअलूम करके, राजा से कहा महाराज ! एक शख्स हथियारबंद चाकरी करने के आसरे पर आया है; सो दरवाजे पर खड़ा है. महाराज की आज्ञा पावै तो वह रुबरू आवै. यह सुन राजा ने फरमाया कि ले आ. यह उसे जाकर ले आया. तब राजा ने पूछा ऐ राजपूत ! तेरे तई रोज खर्च को क्या कर दूँ.

यह सुनके बीरबर बोला हजार तोले सोना मुझे रोज दो, तो मेरी गुजरान हो. राजा ने पूछा तुम्हारे साथ लोग कितने हैं ? उस ने कहा एक स्त्री, दूजा बेटा, तीजी बेटा, चौथा मैं ; पांचवां हमारे साथ कोई नहीं. उस की यह बात सुन, राजा की सभा के लोग सब मुंह फेर फेर के हंसने लगे. पर राजा अपने जीमें सोच करने लगा कि बहुत धन इस ने किसवास्ते मांगा. फिर आपही अपने उनमें समझा कि बहुत धन दिया हुआ किसी रोज सुफल होयगा. यह बिचार करके, राजा ने भंडारी को बुलाकर कहा हमारे खजाने से हजार तोले सोना इस बीरबर के तई रोज दिया करो.

यह परवानगी सुन, बीरबर ने, हजार तोले सोना उस दिन का ले, अपनी जगह ला, दो हिस्से कर, आधा तो बिराहणों को बांटा ; और आधे के फिर दो बांटकर, एक बखर : उस में से अतीत, बैरागी, वैष्णव, सन्यासियों को

बांट दिया; और बाकी जो एक हिस्सा रहा, उस का खाना पकवा गरीबों को खिला दिया; बाकी जो कुछ रहा वह आप खाया. इसी तरह से हमेशा जोरू लड़कों समेत अपनी गुजरान करता था. लेकिन, शाम के वक्त रोज़ ढाल तलवार ले राजा के पलंग की चौकी में जा हाज़िर रहता; और राजा जब सोते से चौककर पुकारता कि कोई हाज़िर है? तो यही जवाब देता कि बीरबर हाज़िर है, जो ऊकम. इसी तरह राजा जब पुकारता तो यही जवाब देता, कि फिर इस में जो काम फ़रमाता, सो यही बजा लाता.

इसी तरह धन के लालच से रात भर सुचेत रहता. बल्कि, खाते, पीते, सोते, बैठते, चलते, फिरते आठ पहर अपने खाविंद की याद में रहता. रीत यह है, कि कोई किसू को बेचता है तो बिकता है; पर चकरिया चाकरी करके अपने तई आप बेचता है. और जब बिका तो ताबिअदार ऊआ. जो परबस ऊआ तो इसे सुख कहाँ. मशहूर है, कैसाही चतुर आक़िल पंडित होय, लेकिन जिस वक्त अपने खाविंद के साम्हने होता है तो डरके मारे गूंगे के बराबर चुप ही रहता है. जब तलक तफ़ावत से है चैन से है. इसी वास्ते, पंडित लोग कहते हैं कि सेवाधर्म करना योगधर्म से भी कठिन है.

अलकिस्सः एक रोज़ का जिक्र है, कि इत्तिफ़ाक़न रात के वक्त मरघट से रंडी के रोने की आवाज़ आई. राजा सुन के पुकारा कोई हाज़िर है? बीरबर सुनतेही बोला

हाज़िर, जो ज़क़म. फिर राजा ने यों ज़क़म किया, जहाँ से औरत के रोने की आवाज़ आती है, वहाँ जाओ; और उस से रोने का सबब पूछकर, जल्द आओ. राजा, यह उसे फ़रमा, दिल में कहने लगा कि जिस किसी को चाकर अपना आजमाना हो तो वक्त बे वक्त उसे काम को कहे. अगर वह ज़क़म उसका बजा लावे तो जानिये काम का है. और जो तकरार करे तो जानिये नाकारः. और इसी तरह से भाइयों को दोस्तों को बुरे वक्त में परखिये; और स्त्री को नादारी में जांचिये.

ग़रज़, यह ज़क़म पाकर उस के रोने की आवाज़ की धुन पर गया. और राजा भी, उस का साहस देखने के लिये, काले कपड़े पहनकर, पीछे पीछे बे मञ्जलूम चला; कि इस में बीरबर जा पहुँचा. उस मरघट में, जहाँ रंडी रोती थी, देखता क्या है कि एक औरत, खूबसूरत, सिर से पाँव तक गहने से लदी ऊई, डाढ़ें मार मार रो रही है. कभी नाचती, कभी कूदती, कभी दौड़ती है. आँखों में आंसू एक नहीं. लेकिन, सिर पीट पीट, हाय हाय कर, ज़मीन पर पटकनियां खाती है. उसका यह अहवाल देख, बीरबर ने पूछा तू क्यों इस क़दर रोती पीटती है? तू कौन है? और तुझ पर क्या दुख है?

तब वह बोली कि मैं राजलक्ष्मी हूँ. बीरबर ने कहा तू किस कारन रोती है? फिर उसने अपनी अवस्था बीरबर से कहनी शुरू की; कि राजा के घर में शूद्रकर्म होता है; तिस से उस के घर में अलक्ष्मी आवेगी. और मैं

उसके घर से जाऊंगी. बअद एक महीने के, राजा निपट दुख पाके, मर जायगा. इस दुख से रोती हूं. और मैंने उसके घर में बज्जत सुख किया है, इसवास्ते यह पक़तावा है. और यह बात किसी तरह से भूठ न होगा.

फिर बीरबर ने पूछा उस का कुछ ऐसा भी इलाज है कि जिस से राजा बचे, और सौ बरस जिये. वह बोली पूरब और एक जोजन पर देवी का मंदिर है. जो तू उस देवी को अपने बेटे का सिर, अपने हाथ से काट कर, दे तो राजा सौ बरस इसी तरह से राज करे, और किसी तरह का खलल राजा को न होय.

यह बात सुनतेही, बीरबर अपने घर को चला. और राजा भी उस के पीछे हो लिया. गरज, जब वह घर में आया तो अपनी जोरू को जगा, उस ने सब अहवाल शर-हवार कहा. उन्ने यह अहवाल सुन जगाया तो बेटे को. पर बेटी भी जागी. तब उस औरत ने लड़के से कहा कि बेटा ! तुम्हारे सिर देने से राजा का जी बचता है, और राज भी काइम रहता है. यह सुन वह बालक बोला, माता ! एक तो, आप की आज्ञा ; दूसरे, स्वामी का काज ; तीसरे, यह देह देवता के काम आवे तो इससे अच्छी कोई बात दुनिया में नहीं है मेरे नजदीक. अब इस काम में देर करनी मुनासिब नहीं. मसल है, कि पुत्र होवे तो अपने बस का, और काया निरोग, बिद्या से लाभ, मित्र चतुर, नारी ऊकम बरदार. जो ये पंच बातें आदमी को मुयिस्सर हों तो सुख की देनेवाली और दुख की दूर करने-

वाली हैं। अगर चाकर बेमरजी, और राजा बखील, दोस्त कपटी, और जोरू बेफ़रमान हो तो ये चार बातें आराम की दूर करनेवाली और दुख की देनेवाली हैं।

फिर बीरबर अपनी स्त्री से कहने लगा जो तू खुशी से अपने लड़के को दे, तो मैं ले जा, राजा के लिये, देवी के आगे बल दूं। वह बोली कि मुझे बेटा, बेटी, भाई, बंद, मा, बाप किसू से कुछ काम नहीं। मेरी गति तुम्हीं से है। और धर्मशास्त्र में भी योंहीं लिखता है, कि नारी न दान से सुध होती है, न वरत से। लंगड़ा, लूला, गूंगा, बहरा, अंधा, काना, कोढ़ी, कुबड़ा कैसाही उसका स्वामी हो, उस को उसीकी सेवा करने से धर्म है। अगर किसी तरह का दुनिया में धर्म कर्म करे और खाविंद का ऊकम न माने तो दोजख में पड़े उस का बेटा बोला पिता ! जिस आदमी से खाविंद का काम होवे जग में उसी का जीना सुफल है ; और इस में दोनों जहान में भला है। फिर उस की लड़की बोली जो मा देवे बिघ लड़की को, और बाप बेचे पूत को, और राजा ले सर्वस छीन, तो पनाह किसकी ले।

ऐसा कुछ वे चारों आपस में बिचार करके देवी के मंदिर को गये। राजा भी, छिपकर, उनके पीछे चला। जब बीरबर वहां पहुंचा तो मंदिर में जा, देवी की पूजाकर, हाथ जोड़ कहने लगा, हे देवी ! मेरे पुत्र के बल देनेसे राजा की सौ बरस की उमर होवे। इतना कह, एक खांडा ऐसा मारा कि लड़के का सिर ज़मीन पर गिर पड़ा। भाई का मरना देख, उस लड़की ने अपने गले में एक खड्ग मारा

तो रूंड मुंड जुड़े होकर गिर पड़े. बेटे बेटों को मुआ देख, बीरबर की स्त्री ने ऐसी तलवार अपनी गर्दन पर मारी कि धड़ से सिर जुदा हो गया. फिर उन तीनों का मरना देख, बीरबर अपने मन में चिंता कर कहने लगा कि जब लड़के ही मर गये तो नौकरी किस के वास्ते करूंगा; और सेना, राजा से ले, किसे दूंगा. यह सोच कर, एक शमशेर ऐसी अपनी गरदन पर मारी कि तन से सिर जुदा हो गया.

फिर उन चारों का मरना देख, राजा ने अपने दिल में कहा कि मेरे वास्ते इसके कुटुंब की जान गई. अब ऐसे राज करने को लअनत है कि जिस राज के लिये एक का सर्वनास होवे और एक राज करे, ऐसा राज करना धर्म नहीं है. यह बिचार कर, राजा ने चाहा कि खांडा मार मरूं; इतने में देवीने आन हाथ पकड़ा; और कहा कि पुत्र! मैं तेरे साहस पर प्रसन्न हुई; जो तू मुझ से बर मांगे सो मैं दूं. राजा ने कहा माता! जो तू प्रसन्न हुई है तो इन चारों को जिला दे. देवीने कहा यही होवेगा. और यह कहते ही, भवानी ने पाताल से अमृत ला, चारों को जिला दिया. बअद उसके, राजाने आधा राज अपना बीरबर को बांट दिया.

इतनी बात कह, बैताल बोला धन्य है उस सेवक को कि जिन्ने स्वामी के लिये अपने जीव और कुटुंब का दरेग न किया. और धन्य है उस राजा को कि जिसने राज और अपने जीव का कुछ लालच न किया. ऐ राजा!

मैं तुमसे यह पूछता हूँ, उन पाँचों में किस का सत सरस हुआ। तब राजा बिक्रमाजीत बोला कि राजा का सत अधिक हुआ। बैताल बोला किस कारन। तब राजा ने जवाब दिया कि खाविंद के वास्ते जी देना चाकरको उचित है। क्योंकि उसका यही धर्म है। लेकिन, राजा ने जो चाकर के लिये राजपाट छोड़, जान को तिनके के बराबर न जाना, इस बाइस से राजा का सत सिवाय हुआ। इतनी बात सुन बैताल फिर उसी अशान के दरखत में जा लटका।

चौथी कहानी.

राजा वहाँ जा फिर बैताल को बांधकर ले चला। तब बैताल बोला कि ऐ राजा! भोगवती नाम एक नगरी है। वहाँ का राजा रूपसेन। और चूड़ामन(१) नाम एक तोता उसके पास है। एक दिन उस तोते से राजा ने पूछा तू क्या क्या जानता है। तब सूआ बोला कि महाराज! मैं सब कुछ जानता हूँ। राजा ने कहा जो तू जानता है तो बतला कि मेरे बराबर सुन्दर नायका कहां है। तब उस तोते ने कहा महाराज! मगध देस में मगधेश्वर नाम राजा है। और उसकी बेटी का नाम चंद्रावती। तुम्हारी शादी उसके साथ होवेगी। वह अति सुंदरी है, और बड़ी पंडित।

(१) चूड़ामणि.

राजा ने, उस तोते से यह बात सुन, एक चंद्रकांत नाम योतिषी को बुलाकर पूछा कि हमारा ब्याह किस कन्या से होवेगा. उसने भी अपने नजूम के इलम से मञ्जूलूम करके कहा, चंद्रावती नाम एक कन्या है; उसके साथ तुम्हारी शादी होवेगी. यह बात राजा ने सुन, एक ब्राह्मण को बुलवा, सब कुछ समझा, राजा मगधेश्वर के पास भेजने के वक्त यह कहा अगर हमारे ब्याह की बात पक्की कर आओगे तो हम तुम्हें खुश करेंगे. यह बात सुन, ब्राह्मण खुश होत हुआ.

और वहां मगधेश्वर राजा की बेटी के पास एक मैना थी; कि उसका नाम मदनमंजरी था. इसी तरह से, उस राजकन्या ने भी एक दिन मदनमञ्जरी से पूछा कि मेरे लायक शौहर कहां है? तब सारिका बोली भोगवती नगरी का राजा रूपसेन है; सो तेरा पति होगा. गरज, अनदेखे एकका एक फरेफ़तः हुआ था; कि चंद रोज के अरसे में वह ब्राह्मण भी वहां जा पहुंचा, और उस राजा से अपने राजा का संदेशा कहा. उसने भी उसकी बात मानी; और अपना एक ब्राह्मण बुलवा, उसे टीका और सब रसूम की चीजें सौंप, उसी ब्राह्मण के साथ भेजा; और यह कह दिया कि तुम हमारी तरफ़ से जाकर बिनती कर राजा को तिलक देके जल्दी चले आओ. जब तुम आओगे तब हम शादी की तैयारी करेंगे.

अलकिस्सः, ये दोनों ब्राह्मण वहां से चले. कितने दिनों में राजा रूपसेन के पास आन पहुंचे; और सब अह-

वाल वहां का कहा. यह सुन राजा खुश हो सब तैयारी कर ब्याह करने को चला. बअद चंद रोज के, उस देस में पहुंच, शादी कर, दान दहेज ले, राजा से बिदा हो, अपने देस को चला. राजकन्या ने भी, चलते वक्त, मदन-मंजरी का पिंजरा साथ ले लिया. कितने दिनों के पीछे, अपने देस में आन पहुंचे; और सुख से अपने मंदिर में रहने लगे.

एक दिन की बात है; कि दोनों पिंजरे तोते मैना के गद्दी के पास धरे ऊए थे, कि राजा रानी आपस में कहने लगे, अकेले रहने से किसू का दिन नहीं कटता. इस से बिहतर यह है, कि तोते मैना की बाहम शादी कर, दोनों को एक पिंजरे में रखिये तो ये भी खुशी से रहें. आपस में इस तौर की बातें कर, एक बड़ा सा पिंजरा मंगवा, दोनों को उस में रक्खा.

चंद रोज के बअद, राजा रानी, आपस में बैठे कुछ बातें करते थे कि तोता मैना से कहने लगा कि दुनिया में भोग असल है; और जिन्ने, जगत में पैदा होके, भोग नहीं किया, उसका जनम नाहक गया. इससे तू मुझे भोग करने दे. यह सुन के, सारिका बोली मुझे पुरुष की इच्छा नहीं. तब उसने पूछा किस लिये? मैना बोली कि पुरुष पापी, अधर्मी, दगाबाज, स्त्रीहत्या करनेवाले होते हैं. यह सुन के, तोते ने कहा कि नारी भी दगाबाज, भूठी, बेवकूफ, लालची, हत्यारी होती है.

जब, इस तरह से, दोनों भगड़ने लगे तो राजा ने

पूछा तुम किसवास्ते आपस में भगड़ते हो? मैना बोली महाराज! पुरुष पापी स्त्रीघातक होते हैं। इसवास्ते मुझे पुरुष की चाह नहीं। महाराज! मैं एक बात कहती हूँ, आप सुनिये कि मर्द ऐसे होते हैं।

ईलापुर नाम एक नगर। और वहाँ महाधन नाम एक सेठ था। कि उसके औलाद न होती थी। वह इस-वास्ते हमेशः तीर्थ, व्रत करता; और नित्त पुराण सुनता; ब्राह्मणों को बज्रत सा दान दिया करता। गरज, कितनी मुद्दत में, भगवान की मरजी से, उस साहके एक लड़का पैदा हुआ। उन्ने बड़ी धूम से उसकी शादी की; और ब्राह्मणों को भाटों को बज्रतसा दान दिया; और भूखे, प्यासे कंगालों को भी बज्रत कुछ दिया। जब कि वह पांच बरस का हुआ तो उसे पढ़ने को बिठाया। वह यहाँ से तो पढ़ने को जाता, और वहाँ जाकर लड़कों में जूआ खेला करता।

बअद चंद रोज के, वह साह मर गया; और यह मुखतार हों दिन को तो जूआ खेला करता, और रात को रंडीबाजी। इसी तरह से, कई बरस में, अपना सारा धन खो, लाचार हो, देस से निकल, खराब होता हुआ, चंद्रपुर नगर में जा पहुँचा। वहाँ हेमगुप्त नाम एक साहकार था, कि उसके बज्रत दौलत थी; यह उसके पास गया, और अपने बाप का नाम निशान बताया। वह सुनते ही खुश हुआ; इसी उठकर मिला, और पूछा तुम्हारा आना क्योंकर हुआ। तब यह बोला कि मैं जहाज ले एक दीप

में सौदागरी को गया था. और वहां जा, उस माल को बेच, और माल की भरती कर, जहाज ले अपने देश को चला. नागहां एक ऐसा तूफ़ान आया कि जहाज तबाह हो गया; और मैं एक तख़्ते पर बैठा रह गया. सो बहता बहता यहां तलक आन पहुंचा हूं. लेकिन शर्म आती है कि माल दौलत तो सब जाती रही. अब मैं इस हालत से अपने शहर के लोगों को क्या मुंह जाकर दिखाऊं.

गरज, जब इस तरह की बातें इसने उसके आगे कीं, तब वह भी मन में बिचारने लगा कि मेरा फ़िक्र भगवान ने घर बैठे ही मिटा दिया; और ऐसा संयोग भगवानही की कृपा से बन पड़ता है. अब देर करनी मुनासिब नहीं. सब से बिहतर यह है कि कन्याके हाथ पीले कर दीजिये. जो कुछ इस वक्त हो, सो बिहतर है; और कल की किसे ख़बर है. ऐसा कुछ अपने जी में मनसूब बांध, सिठानी पास आ कहने लगा कि एक सेठ का लड़का आया है; जो तुम कहो तो रत्नावती का ब्याह उससे कर दें. वह भी सुन खुश हो बोली कि साहजी! ऐसा संयोग जब भगवान बनाता है, तब बनता है; क्योंकि घर बैठे मन की कामना पूरी ऊई. इससे बिहतर यह है कि देर मत करो; और जल्द पुरोहित को बुलवा, लगन सुधवाय, शादी कर दो. तब उस सेठने ब्राह्मण को बुलवा, सुभ लगन मरुत ठहराय, कन्या दान कर, बज्रतसा दहेज दिया. गरज, जब ब्याह हो चुका तो वहीं बाहम रहने लगे.

फिर कितने एक दिनों के पीछे, साह की बेटी से उन्ने कहा, हमें तुम्हारे देस में आये ऊए बज्जत दिन ऊए; और अपने घर बार की कुछ खबर नहीं. इस्से हमारा चित बज्जत उदास रहता है. हम ने सब अहवाल अपना तुम से कहा; अब तुम्हें यह चाहिये कि अपनी मा से इस तरह समझा कर कहो, कि वे राजी हो हमें बिदा करें तो हम अपने शहर को जावें. तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी चलो. तब उन्ने अपनी मा से कहा कि बालम हमारे देश को बिदा ऊआ चाहते हैं. अब तुम भी वह करो कि जिस में उनके जी को दुख न होवे.

सिठानी ने अपने स्वामी के पास जाकर कहा तुम्हारा दामाद अपने घर जाने की बिदा मांगे है. यह सुनकर साह बोला अच्छा, बिदाकर देंगे. क्योंकि बिराने पूत पर कुछ अपना जोर नहीं चलता. जिसमें उसकी खुशी होगी वही हम करेंगे. यह कह, अपनी बेटी को बुलाकर पूछा तुम अपनी बात कहो, सुसराल जाओगी, या पोहर में रहोगी? इस में लड़की ने शरमाके जवाब न दिया; उलटी फिर आई, और अपने खाविंद से आनके कहा हमारे माता पिता कह चुके हैं कि जिस में उनकी खुशी होगी वह हम करेंगे. तुम हमें मत छोड़ जाइयो. गरज उस सेठने अपने दामाद को बुला, बज्जत सी दौलत दे, बिदा किया; और लड़की का भी डोला एक दासी समेत साथ कर दिया. तब यह वहां से चला.

जब एक जंगल में पहुंचा, उन्ने साहकी बेटी से कहा,

यहां बज्जत डर है. जो तुम अपना सब गहना हमें उतार दो, तो हम अपनी कमर में बांध लें. फिर आगे जब शहर आवेगा तो तुम पहन लेना. उन्ने सुनतेही, सब जेवर उतार दिया; और उस ने जेवर ले कहारों को बिदाकर, दासी को मार कुए में डाल दिया; और उसको भी जोर से कुए में धकेल, सब गहना ले, अपने देस को चला गया.

इतने में एक मुसाफिर उस राह में आया; और रोने की आवाज सुनकर, खड़ा हो, अपने जीमें कहने लगा कि इस जंगल में आदमी के रोने की आवाज कहां से आई. यह विचारकर, उस रोने की आवाज की ओर को चला कि एक कुआ नजर आया. उस में झांका तो देखता क्या है कि एक स्त्री रोती है. तब उस औरत को निकाल अहवाल पूछने लगा कि तू कौन है? और किस तरह से इस में गिरी? यह सुन के उसने कहा मैं हेमगुप्त सेठ की बेटी हूं; और अपने बालम के साथ उस के देस को जाती थी. कि इस में चारोंने आ घेरा; और मेरी दासी को मार, कुए में डाल दिया; और गहने समेत मेरे शौहर को बांधकर ले गये. न उन की मुझे खबर है, न मेरी उन्हें. यह सुन, वह बटोही उसे साथ ले आया; और उस सेठ के द्वार पर पहुंचाया गया.

यह अपने मा बाप के पास गई. वे उसे देखकर पूछने लगे कि तेरी क्या गति ऊई? उसने कहा हमें राह में आनके चारों ने लूटा; और दासी को मार, कुए में डाल,

मुझे एक अंधे कुएँ में धकेल दिया; और मेरे शौहर को, गहने समेत, बांध के ले चले. जब और धन मांगने लगे, तब उसने कहा जो कुछ था सो तुमने लिया; अब मेरे पास क्या है? आगे यह मुझे खबर नहीं कि उसे मारा या छोड़ा. तब उसका बाप बोला धीया! तू फिर मत कर. तेरा स्वामी जीता है. भगवान चाहे तो थोड़े दिनों में आन मिले. क्योंकि, चोर धन के गाहक होते हैं; जीव के गाहक नहीं.

गरज, उस साहने, जो जो गहना उसका गया था उसके बदले और अभूषण देकर, बज्रतसा दिलासा दिलदिही की. और वह साहका लड़का भी, अपने घर पहुँच, सब जेवर को बेच, दिन रात रंड़ीबाजी करने लगा; और जूआ खेलने. यहाँ तलक, कि सब रुपयै तमाम ऊँ. तब रोटी को मुहताज ऊँ. आखिर, जब निहायत दुख पाने लगा, तो अपने मन में एक दिन बिचारा कि सुसराल जा के यह बहानः कीजिये कि तुम्हारे नवासः पैदा ऊँ है. उसकी बधाई देने को मैं आया हूँ. यह बात अपने जी में ठान कर चला.

कई दिन में वहाँ जा पहुँचा. जब उसने चाहा कि घर में बैठे, सान्हने से उसकी स्त्रीने देखा कि मेरा शौहर आता है. ऐसा न हो कि अपने जी में डरकर फिर जावे. इस में उन्ने नजदीक आयकर कहा स्वामी! तुम अपने जी में किसी बात की परवा मत करो. मैंने अपने बाप से कहा है कि चोरों ने आन के, दासी को मारा; और मेरा

जिवर उतरवा, मुझे कुएँ में डाल, मेरे खाविंद को बांध ले गये. यही बात तुम भी कहियो. कुछ चिंता न करो. घर तुम्हारा है; और मैं दासी हूँ. यह कहकर वह घर में चली गई. यह उस सेठ के पास गया. उस ने उठकर गले लगा सब अहवाल पूछा. जिस तरह उसकी जोरू समझा गई थी, इसने उसी तरह से कहा.

सारे घर में खुशी हुई. फिर सेठने, उसे अश्वनान करवा, रसोई जिमाय, बजतसा भरोसा देकरके कहा कि यह घर तुम्हारा है, आनंद से रहो. यह वहां रहने लगा. गरज, कितने एक दिनों के बअद, रात के वक्त साह की बेटी, गहना पहने ऊए, उसके पास सोने की आई और सो गई. जब दोपहर रात हुई, उन्ने देखा कि यह गाफिल सो गई है. तब एक कुरी ऐसी उसके गले में मारी कि वह मर गई और सारा गहना उसका उतार अपने देश की राह ली.

इतनी बात कह, मैना बोली महाराज! यह मैंने अपनी आंखों से देखा. इसवास्ते मुझे मरद से कुछ काम नहीं. महाराज! देखो तो पुरुष की जात ऐसी बठपार होती है. कौन, ऐसे से दोस्ती कर, अपने घर में सांप पाले. महाराज! आप इसे बिचारिये कि उस रंडी ने क्या गुनाह किया था.

यह सुनके, राजा ने कहा ऐ तोते! रंडी में ऐब क्या है तू मुझ से कह. तब वह कीर बोला महाराज! सुनिये.

कंचनपुर(१) एक नगर है. वहां सागरदत्त नाम एक सेठ. उसके बेटे का नाम श्रीदत्त. और एक नगर का नाम जयश्रीपुर. वहां सोमदत्त नाम एक सेठ था. और उसकी बेटा का नाम जयश्री. वह उस सेठके बेटे को ब्याही थी. और लड़का किसी मुल्क में सौदागरी के वास्ते गया था. वह अपने मा बाप के यहां रहती थी. गरज, जब उसे सौदागरी में बारह बरस गुजर गये, और यह यहां जवान ऊई, तो एक रोज़ सखी से कहने लगी ऐ बहिन! मेरा जोवन योंहीं जाता है. संसार का सुख मैंने अब तलक कुछ नहीं देखा. यह बात सुन के, सखी ने उसे कहा तू अपने जी में धीरज धर. भगवान चाहे तो तेरा शौहर जल्द आ मिलता है.

इस बात को सुनकर, गुस्से हो, अटारी पर चढ़, झरोखे से झांकी तो देखती क्या है कि एक जवान चला आता है. जब नजदीक आया तो इसकी और उसकी एका एक चार नजरे ऊई. दोनों का दिल मिल गया. तब इन्ने अपनी सखी से कहा कि उस शख्स को मेरे पास ले आ. यह सुन, सखी ने उसे जाकर कहा कि सोमदत्त की कन्या ने तुम्हें एकांत में बुलाया है. पर तुम मेरे घर आइयो. फिर अपने घर का पता उसको बता दिया. उन्ने कहा किरात को मैं आजंगा. सखी ने यह सेठ की लड़की से आकर कहा कि उन्ने रातके वक्त आने को कहा. यह सुनके, जयश्री ने सखी से कहा कि तू अपने घर में जा. जब वह

आवे मुझे खबर करना तो मैं भी घर से सुचित होके चलूंगी.

सखी उसकी बात सुन के अपने घर गई. द्वारे पर बैठ के उसकी राह ताकने लगी. इतने में वह आया. इन्ने उसे अपनी डिङ्गड़ी में बिठाकर कहा तुम यहां बैठो, मैं जाकर तुम्हारी खबर करती हूं. और आकर जयश्री से कहा तुम्हारा प्रीतम आन पहुंचा है. यह सुन के, उन्ने कहा जरा ठहर जा. घर के लोग सो जावें तो मैं चलूं. फिर कितनी एक देर बअद, जब आधी रात का अमल हुआ और सब सो गये; तब यह चुपके से उठकर, उसके साथ चली; और एक छिनेमें वहां आन पहुंची. और बेइखतियार दोनों ने उसके घर में मुलाकात की. जब चार घड़ी रात बाकी रही, यह उठकर अपने घरमें आनके चुप चुपाती सो रही. और वह भी भोरके वक्त अपने घरको गया.

इसी तरह से, कितने एक दिन बीत गये. निदान, उसका खाविंद भी बिदेस से अपनी सुसराल में आया. जब इनने अपने शौहर को देखा जीमें चिंता करके सखीसे कहा इस सोच में मेरा जी है; क्या करूं? किधर जाऊं? मेरी नींद, भूख, प्यास सब बिसर गई; न ठंडा रुचे है, न गर्म. और जो कुछ अहवाल अपने चित का था सो सब कहा. गरज, जां तो करके दिन तो काटा. पर शाम के वक्त, जब उसका शौहर ब्यालू कर चुका, तब उसकी सास ने, एक जुदे चौबारे में सेज बिछवाकर, कहला भेजा

कि तुम वहाँ जाकर आराम करो. और अपनी बेटी से कहा, कि तू जाकर अपने शौहर की सेवा कर.

वह इस बात को सुन, नाक भौं चढ़ा, चुपकी हो रही. फिर उस की मा ने डांट के उस के पास भेजा. बेबस होके वहाँ गई और मुंह फेर पलंग पर लेट रही. वह जों जों उस से नेह की बातें करता था तों तों उसे ज़ियादः दुख होता था. फिर तरह बतरह के बस्त्र आभूषण, जो जो हर एक मकान से उस के वास्ते वह लाया था, सो सब दिये ; और कहा कि इसे पहन. तब तो उन ने और खफा हो भेवें तान मुंह फेर लिया. और यह भी लाचार हो सो रहा. क्योंकि, हारा मांदा राह का था. पर उसे अपने यारकी याद में नींद न आई.

जब वह समझी कि यह नींद से अचेत ऊँचा, तब वह हौले हौले उठ, उसे सोता छोड़, अंधेरी रात में निडर अपने दोस्त के मकान को चली ; कि राह में एक चोरने उस को देखकर अपने मनमें चिंता की कि यह औरत, गहना पहने ऊँ, आधी रात के वक्त, अकेली कहाँ जाती है. यह बात अपने जी में कह उसके पीछे हो लिया. गरज, जों तों यह अपने यारके मकान में पड़ंची. और वहाँ उसे साँप काट गया था. वह मुआ पड़ा था. उन्ने जाना कि सोता है. उसके बिरह की आगकी जली ऊँई जो थी, बेदखलियार उससे लिपटकर प्यार करने लगी. और चोर दूर से तमाशा देखने लगा.

वहाँ, एक पीपल के दरखत पर, एक पिशाच भी बैठा

ऊँआ यह तमाशा देखता था. अचानक उस के मन में आया कि उस के बदन में पैठ इस से भोग कीजिये. यह बिचारकर, उसके कालिब में आ, भोगकर, आखिर दांतोंसे उस की नाक काट, उसी दरखत पर जा बैठा. चोर ने यह सब अहवाल देखा. और वह, लाचार उसी रंग लङ्क से चुहचुहाती ऊँई, सखीके पास गई; और सब माजरा कहा. तब सखी बोला कि तू अपने शौहर पास जलद जा कि आफ़ताब तुलूअ न होने पावे. और वहां जाकर, डाढ़ मार के रोइयो; जो कोई तुझ से पूछे तो कहना कि इनने मेरी नाक काट ली है.

यह, सखी की बात सुनतेही, तुरंत जा, डाढ़ें मार मार रोने लगी. इसके रोने की आवाज़ सुन, सारे कुटुंब के लोग आये. देखता क्या है कि उसकी नाक नहीं, नकटी बैठी है. तब वे बोला कि ऐ निलज्जे, पापी, निर्दई, बूढ़मति! बिना अपराध किये इसकी नाक क्यों काटी. वह भी, यह सवांग देख, चिन्ताकर अपने जी में कहने लगा कि चंचल चित का, काले सांप का, शस्त्रधारी का, दुश्मन का, बिसवास न कीजिये; और चियाचरित्र से डरिये. कबीश्वर क्या बरनन नहीं कर सकता; और योगी क्या कुछ नहीं जानता; मतवाला क्या कुछ नहीं बकता; रंडी क्या नहीं कर सकती. सच है, घोड़ों का ऐब, बादल का गरजना, चिया का चरित्र, और पुरुष का भाग; यह देवता भी नहीं जानते, आदमी का तो क्या मकदूर है.

इतनेमें उसके बाप ने कीतवाल को यह ख़बर दी. वहाँ से प्यादे चबूतरे के आये; और इसे बांध कीतवाल के पास लाये. कीतवाल ने राजा को ख़बर की. राजा ने उस से यह अहवाल बुलवाके पूछा, तो उन्ने कहा मैं कुछ नहीं जानता. और सेठ की लड़की से बुलाकर जो पूछा तो उन्ने कहा महाराज! अयां देख के मुझ से क्या पुछते हो. फिर राजा ने उस से कहा तुझे क्या सज़ा दे. यह सुन के बोला आप के न्याव में जो ठहरे सो कीजिये. राजा ने कहा इसे ले जाके सूली दो. लोग, राजा की आज्ञा पाके, उसे सूली देने ले चले.

यह संयोग देखो. वह चोर भी वहाँ खड़ा तमाशा देखता था. जब उसे चकीन ऊँचा कि यह नाहक मारा जाता है, तब उन्ने दुहाई दी. राजा ने उसे बुलाकर पूछा तू कौन है? बोला कि महाराज! मैं चोर हूँ; और यह बेगुनाह है. नाहक इसका खून होता है. आप ने कुछ न्याव न किया. तब राजा ने उसे भी बुलवाया; और चोर से पूछा तू अपने धर्म से सच कह, कि यह मुकद्दिमा किस तरह से है. तब चोर ने ब्यारेवार अहवाल कहा. और राजा भी अच्छी तरह से समझा. निदान हरकारे भेज, उस रंडी का थार जो मुआ ऊँचा पड़ा था, उस के मुंह में से नाक मंगवाके देखी. तब जाना कि यह बेतक-सीर है और चोर सच्चा है. फिर चोर बोला कि महाराज! नेकों का पालना, और बंदों को सज़ा देनी, राजों का बराबर धर्म चला आता है.

इतनी बात कह कर चूड़ामन तोता बोला महाराज ! ऐसे गुनाहों की पूरी नारियां होती हैं. राजा ने उस रडो का मुंह काला करवा, सिर मुंडवा, गधे पर चढ़वा, नगरी के फेरे दिलवा, कुड़वा दिया ; उस चोर और साहू-कार बचे को बीड़े दे रखसत किया.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा ! इन दोनों में से किसे ज़ियादः पाप ऊँचा. तब राजा बीर बिक्रमाजीत बोला कि स्त्री को. फिर बैताल बोला कि किस तरह से ? यह सुन के राजा ने कहा मर्द कैसाही दुष्ट क्यों न हो, पर उसे धर्म अधर्म का विचार रहता है. और स्त्री को धर्म अधर्म का कुछ ध्यान नहीं रहता. इससे नारीको बड़त पाप ऊँचा. यह बात सुनके बैताल फिर चला गया ; और उसी दरखत पर जा लटका. फिर राजा जा, उसको पेड़ से उतार, गठड़ी बांध कंधे पर रख ले चला.

पांचवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! उज्जैन(१) नाम एक नगरी है. और वहां का राजा महाबल. और उसका हरिदास नाम एक दूत था. उस दूत की बेटी का नाम महादेवी. वह अति सुंदरी थी. जब वह वरयोग ऊई तो उसके पिता को चिन्ता ऊई, कि इसका वर ढूँढ बिवाह कर दिया

(१) उज्जयिनी.

चाहिये. गरुज, एक दिन उस लड़की ने अपने बाप से कहा कि पिता ! जो सब गुण जानता हो मुझे उसे दी जा. तब उसने कहा कि जो सब इलम से वाकिफ होगा तेरी शादी मैं उसके साथ कर दूंगा.

फिर एक दिन उस राजा ने हरिदास को बुलाकर कहा, कि दक्षिण दिसा में हरिचंद्र(१) नाम राजा है ; उसके पास तुम जाकर मेरी तरफ से क्षेम कुशल पुछो ; और उन की क्षेम कुशल के समाचार ले आओ. यह राजा की आज्ञा पाय, बिदा हो, उस राजा के पास, कितने एक दिनों में, जा पहुंचा ; और उससे अपने राजा का सब संदेशा कहा ; और हमेशा उस राजा के निकट रहने लगा.

गरुज, एक दिन की बात है, कि उस राजा ने इस से पूछा ऐ हरिदास ! अभी कलियुग(२) का आरंभ हुआ कि नहीं ? तब उन्ने हाथ जोड़कर कहा महाराज ! कलिकाल वर्तमान है ; क्योंकि संसार में भूठ बढ़ा है, और सत घट गया ; लोग मुंह पर बात मीठी कहते हैं, और पेट में कपट रखते हैं ; धर्म जाता रहा, पाप बढ़ा ; पृथ्वी फल कम देने लगी ; राजा डांड लेने लगे ; ब्राह्मण लालची हुए ; स्त्रियों ने लाज छोड़ दी ; बेटा बाप की आज्ञा नहीं मानता ; भाई भाई का इअतिबार नहीं करता ; मित्रों से मित्राई जाती रही ; खाविंदों से वफा उठ गई ; सेवकों ने सेवा छोड़ दी ; और जितनी नालायक बातें थीं वे सब नजर आती हैं.

जब राजा से यह सब कह चुका, तब राजा उठकर महल में गया. और यह अपने स्थान पर आन के बैठा; कि इतने में एक बहनेटा उसके पास आ कहने लगा कि मैं तुम्ह से कुछ मांगने आया हूं. यह सुन के उन्ने कहा मांग क्या मांगता है? उन्ने कहा कि अपनी बेटी मुम्हको दे. हरिदास बोला जिस में सब गुण होंगे, मैं उस को दूंगा. यह सुन के वह बोला कि मैं सब बिद्या जानता हूं. फिर उसने कहा कुछ अपनी बिद्या मुम्हे दिखला, तो मैं जानूं, कि तुम्हे बिद्या आती है. तब उस बहनेटे ने कहा मैंने एक रथ बनाया है, उसमें यह सामर्थ है कि जहां जाने का इरादा करो, तहां वह एक क्षिन में ले पहुंचावे. तब हरिदास ने कहा उस रथको फ़जर के वक्त मेरे पास ले आइयो.

गरज, वह भारको रथ ले हरिदास पास आया. फिर ये दोनों रथ पर सवार हो उज्जैन नगरी में आन पहुंचे. पर यहां, इत्तिफ़ाक़न, उसके आने से पहले, किसी और ब्राह्मण के लड़के ने उस के बड़े बेटे से आकर कहा था कि तू अपनी बहन मुम्हे दे. और उसने भी कहा था कि जो सब बिद्या जानता होगा उस को दूंगा; और उस ब्राह्मण के पुत्र ने भी कहा था कि मैं सब ज्ञान बिद्या जानता हूं. यह सुन के उस ने कहा था कि तुम्हे ही देंगे. एक और ब्राह्मण के पुत्र ने उस लड़की की मा से कहा था कि तू अपनी बेटी हमें दे. उसने भी उसे यही जवाब दिया था कि जो सब बिद्या जानता होगा, उसी को अपनी लड़की दूंगी.

उस ब्राह्मण के लड़के ने भी कहा था कि मैं संपूर्ण शस्त्र विद्या जानता हूँ; और शब्दबेधी तीर मारता हूँ. यह सुन के उन्ने भी कहा था कि मैंने कबूल किया तुम्हेही दूंगी.

गरज, इसी तरह से तीनों बर आन के इकठे हुए. हरिदास अपने मन में चिंता करने लगा कि एक कन्या, और तीन बर; किसे दूँ, किसे न दूँ. इसी फिकर में था; कि रात को एक राक्षस आन के, उस कन्या को उठाके, बिंध्याचल पर्वत के ऊपर ले गया. कहा है, कि बुध्तायत किसी चीज़ की अच्छी नहीं. अति रूपवती सीता थी, रावन(१) ने हरी. राजा बल(२) ने अति दान दिया, सो दरिद्री हुआ. रावनने अति गर्व करके अपने कुलकी क्षैकी.

गरज, जब भोर हुई, और सब घर के लोगोंने कन्या को न देखा, तब अनेक प्रकार की चिन्ता करने लगे. और यह बात वे तीनों बर भी सुन के वहाँ आये. उनमें एक ज्ञानी था; उस से हरिदास ने पूछा ऐ ज्ञानी! तू बता कि वह कन्या कहाँ गई. उसने घड़ी एक में बिचार करके कहा, तुम्हारी लड़की को राक्षस ने पर्वत में ले जाके रक्खा है. इस में दूसरा बोला कि राक्षस को मारके मैं उसे ले आऊंगा. फिर तीसरा बोला हमारे रथ पर सवार हो जाओ और उसे ले आओ. यह सुनतेही, वह भट उसके रथ पर सवार हो, वहाँ पहुँच, उस देव को मार, तुरन्त उसे ले आया. और तीनों आपस में भगड़ने लगे. तब उसके बाप ने मन में चिन्ता करके कहा कि सबों ने इह-सान किया है; किसे दूँ, किसे न दूँ.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम ! उन तीनों में से वह कन्या किसकी स्त्री ऊई ? राजा बोला वह जोरू उस की ऊई जो राक्षस को मारकर लाया. बैताल ने कहा सब का गुण बराबर है, किस तरह से वह उसकी जोरू ऊई ? राजा ने कहा उन दोनों ने इहसान किया ; इस से उन को सवाब हुआ. और यह लड़कर उसे मार के लाया है ; इसवास्ते, वह इसकी जोरू ऊई. यह बात सुन, बैताल फिर उसी दरखत में जा लटका. और राजा भी, वोंहीं जा, बैताल को बांध, कांधे पर रख, उसी तरह ले चला.

छठी कहानी.

फिर बैताल बोला ऐ राजा ! धर्मपुर नाम एक नगर है. वहां का राजा धर्मशील. और उसके मंत्री का नाम अंधक. उसने एक दिन राजा से कहा महाराज ! एक मंदिर बना, उस में देवी को बिठा, नित पूजा कीजिये कि इसका शास्त्र में बड़ा पुण्य लिखता है. तब राजा, एक मंदिर बनवा, देवी पधरा, शास्त्र की विधि से पूजा करने लगा और बिन पूजा किये जल भी न पीता था.

इस तरह से, जब कितनी एक मुह्त गुजरी, तो एक रोज़ दीवान ने कहा महाराज ! मसल मशहूर है कि

निपूते का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, और दरिद्री का सब कुछ सूना है। यह बात सुन, राजा देवी के मंदिर में जा, हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि हे देवी ! तुझे बिरह्मा, (१) बिष्णू, (२) रुद्र, इंद्र आठ पहर सेवते हैं ; और तू ने महिषासुर, चण्ड, मुण्ड, रक्तबीज ले दैत्यों को मार, पृथ्वी का भार उतारा ; और जहां जहां तेरे भक्तों को बिपत पड़ी, तहां तहां जा तू सहाय ऊई। और यही आस तक मैं तेरे द्वारे पर आया हूं। अब मेरे भी मन की इच्छा पूरी कर।

इतनी स्तुति जब राजा कर चुका, तब देवी के मंदिर से आवाज आई कि राजा ! मैं तुझसे खुश ऊई ; बर मांग जो तेरे मन में है। राजा बोला हे माता ! जो तू मुझसे खुश ऊई तो मुझ को पुत्र दे। देवी ने कहा राजा ! तेरे पुत्र होगा महाबली और बड़ा प्रतापी। तब तो राजा ने चंदन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य देकर पूजा की। और इसी तरह से हर रोज पूजा करता था। गरज, कितने दिनों के पीछे राजा के एक लड़का पैदा ऊआ। राजा ने बाजे गाजे से कुटुंब समेत जाकर देवी की पूजा की।

इस अरसे में, एक दिन का इत्तिफाक है ; कि किसी नगर से, एक धोबी, अपने दोस्त को साथ लिये, इस शहर की तरफ आता था, कि देवी का मंदिर उसे नज़र आया। उसने दंडवत करने का इरादः किया। इस में एक

धोवी की लड़की अति सुंदरी आती साम्हने से इस ने देखी. उसे देख, मोहित ऊँचा और देवी के दर्शन को गया. दंडवत कर हाथ जोड़ उस ने अपने मन में कहा हे देवी ! जो इस सुंदरी से मेरा विवाह तेरी कृपा से हो तो मैं अपना सिर तुझे चढ़ाऊँ. यह मानता मान, दंडवत कर, दोस्त को साथ ले, अपने नगर को गया.

जब वहाँ पहुँचा तो उसके बिरह ने यह सताया, कि नींद, भूख, प्यास, सब बिसर गई. आठ पहर उसी के ध्यान में रहने लगा. यह बुरी हालत उस के दोस्त ने देख, उसके बाप से जा सब औरे बार कहा. उसका पिता भी यह सुनकर भैचक हो रहा ; और अपने जी में चिंतन कर कहने लगा कि इसकी दसा देख ऐसा मश्रूम होता है जो उस कन्या से इसकी सगाई न होगी तो यह अपना प्राणत्याग करेगा. इससे बिहतर यह है कि उस लड़की से इसका ब्याह कर दीजिये कि जिसे यह बचे.

इतना विचार कर, पुत्र के मित्र को साथ ले, उस गाँव में पहुँच, उस लड़की के पिता से जाकर कहा मैं तेरे पास कुछ जाचने आया हूँ ; जो तू देवे तो मैं कहूँ. उन्ने कहा मेरे पास वह पदार्थ होगा तो मैं दूँगा, तू कह. इस तरह से बचनबंद कर कहा तू अपनी लड़की मेरे पुत्र को दे. यह सुनके, उनने भी उसकी बात प्रमाण कर ब्राह्मण को बुलवा, दिन, लगन, मङ्गरत ठहराकर कहा तुम लड़के को ले आओ, मैं भी अपनी लड़की के हाथ पीले कर दूँगा. यह सुन, वह वहाँ से उठ, अपने घर आ,

सब सामान शादी का तैयार कर ब्याहने को गया ; और वहां जा, बिवाह कर, बेटे बहूको ले, फिर अपने घर आया. और दुलहा दुलहन आपस में आनंद से रहने लगे.

फिर कितने दिनों के बअद, उस लड़की के पिताके यहां कुछ शुभ करम था. सो वहां से नौता इन को भी आया. ये स्त्री पुरुष तैयार हो, अपने मित्रको साथ ले, उस नगर को चले. जब नगर के निकट पहुंचे तो देवी का मंदिर नजर आया तो उसे वह बात याद आई. तब उनने अपने जी में विचारकर कहा कि मैं बड़ा असत्यवादी अधरमी हूं, कि देवी से भी भूठ बोला. इतनी बात अपने मनमें कह, उस दोस्त से कहा तुम यहां खड़े रहो, मैं देवी का दर्शन कर आऊं. और स्त्री को कहा तू भी यहां ठहर. यह कह, मंदिर के पास पहुंच, कुण्ड में स्नान कर, देवी के सनमुख जा, कर जोड़ नमस्कार कर, खड़ा उठा गर्दन पर मारा. सिर तनसे जुदा हो भूँ में गिरा.

गरज, कितनी देर पीछे उसके मित्रने विचारा कि इसे गये बड़ी देर ऊई है ; अबतक फिरा नहीं ; चलकर देखा चाहिये. और उसकी स्त्री को कहा तू यहां खड़ी रह ; मैं उसे शिताबीसे ढूँढके ले आता हूं. यह कहकर, देवीके मंदिर में गया. देखता क्या है कि धड़से उसका सिर जुदा पड़ा है. यह हालत वहां की देख, अपने मनमें कहने लगा कि संसार बज्रत कठिन जागह है. कोई यह न समझेगा कि इन्ने अपने हाथसे सिर देवीको चढ़ाया है. बल्कि यह कहेंगे कि इसकी नारी जो अति सुन्दरी थी,

उसके लेनेके लिये मारकर यह मकर करता है. इससे यहां मरना उचित है; पर ससार में बदनामी लेनी खूब नहीं.

यह कह, तालाब में नहा, देवीके साम्हने आ, हाथ जोड़ प्रणाम कर, खांडा उठा गले में मारा कि रुण्ड से मुण्ड जुदा हो गया. और यह यहां अकेली खड़ी खड़ी उक्ताकर, राह देख देख निरास हो, ठूँढती ऊई देवी के मंदिर में गई. वहां जाके देखती क्या है कि दोनों मुण्ड पड़े हैं. फिर इन दोनों को मृआ देख उनने अपने जी में बिचारा लोग तो यह न जानेंगे कि आप से देवी को ये बल चढ़े हैं. सब कहेंगे कि रांड नष्ट थी; बदकारी करने के लिये दोनों को मार आई है. इस बदनामी से मरना उचित है.

यह सोचकर, सरोवर में गोतः मार, देवी के सनमुख आ, सिर नवां दंडवत कर, तलवार उठा चाहे गरदन में मारे कि देवी ने, सिंहासन से उतर, उसका हाथ आनके पकड़ा; और कहा पुत्री! बर मांग, मैं तुझ से प्रसन्न ऊई. तब उन्ने कहा माता! जो तू मुझ से खुश ऊई है तो इन दोनों को जी दान दे. फिर देवी ने कहा इनके धड़ों से सिर लगा दे. इनने, मारे खुशी के घबराहट से, सिर बदल के लगा दिये. और देवीने अमृत ला छिड़क दिया. ये दोनों जीकर उठ खड़े ऊये; और आपस में भगड़ने लगे. यह कहे स्त्री मेरी; और वह कहे स्त्री मेरी.

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि ऐ राजा बीर

बिक्रमाजीत ! इन दोनों में वह स्त्री किसकी ऊई. राजाने कहा सुन शास्त्र में इसका प्रमाण लिखता है ; कि नदियों में गंगा उत्तम है, और परबतों में सुमेर(१) पर्वतश्रेष्ठ है, और बरछों में कल्पवृक्ष,(२) अंगों में मस्तक उत्तम है. इस न्याय से जिसका उत्तम अंग है उसी की स्त्री ऊई. इतनी बात सुन, बैताल फिर उसी दरखत में जा लटका. और राजा भी जा उसे बांध कांधे पर रख कर ले चला.

सातवीं कहानी.

बैताल बोला कि ऐ राजा ! चंपापुर नाम एक नगर है. वहां का राजा चंपकेश्वर. और रानी का नाम सुलोचना. और बेटी का नाम त्रिभूवनसुंदरी.(३) सो अति सुंदरी है. जिसका मुख चंद्रमा सा ; बाल घटा से ; आंखें मृगकी सी ; भवें धनुष सी ; नाक कीरकी सी ; गला कपोत का सा ; दांत अनार के से दाने ; होंठों की लाली कंदूरी की सी ; कमर चीते की सी ; हाथ पांव कोमल कंवल से ; रंग चंपेका सा. गरज, उसके जोवन की जोत दिन ब दिन बढ़ती थी.

जब वह व्याहन योग ऊई तो राजा रानी अपने चित में चिंता करने लगे. और देस देस के राजाओं को यह

(१) सुमेर.

(२) कल्पवृक्ष.

(३) त्रिभुवनसुन्दरी.

ख़बर गई कि राजा चंपकेश्वर के घर में ऐसी कन्या पैदा हुई है कि जिसके रूप को देखते ही सुर, नर, मुनि मोहित हो रहते हैं। फिर मुल्क मुल्क के सब राजाओं ने, अपनी अपनी भूरतें लिखवा लिखवा, ब्राह्मणों के हाथ, राजा चंपकेश्वर के यहां भेजियां। राजा ने ले अपनी बेटी को सब राजाओं की तस्वीरें दिखाईं। पर उसके मन में कोई न समाई। तब तो राजा ने कहा तू स्वयंवर कर। वह बात भी उन्ने न मानी; और अपने बाप से कहा रूप, बल, ज्ञान, जिसमें ये तीनों गुण होंगे पिता उसे मुझे देना।

गरज, जब कितने एक दिन बीते, तो चारों देससे चार बर आये। फिर उन से राजा ने कहा अपना अपना गुण बिद्या मेरे आगे जाहिर कर कहे। उनमें से, एक बोला मुझमें यह बिद्या है कि एक पकड़ा मैं बनाकर पांच लअल को बेचता हूं जब उसका मेल मेरे हाथ आता है, तब उस में से एक लअल ब्राह्मण को देता हूं; दूसरा देवता को चढ़ाता हूं; तीसरा अपने अंग लगाता हूं; चौथा स्त्री के वास्ते रखता हूं; पांचवें को बेचकर, रुपये ले, नित भोजन करता हूं। यह बिद्या दूसरा कोई नहीं जानता। और मेरा जो रूप है सो जाहिर है। दूसरा बोला मैं जल थल के पशु पंखी की भाषा जानता हूं। मेरे बल का दूसरा नहीं। और सुन्दरताई मेरी आप के आगे है। तीसरे ने कहा मैं ऐसा शस्त्र समझता हूं कि मेरे समान दूसरा नहीं। और खूबसूरती मेरी तुम्हारे खूब है। चौथे ने कहा मैं शस्त्र बिद्या में एक ही हूं। दूसरा मुझसा नहीं।

शब्दबेधी तीर मारता हूँ. और मेरा ऊँस जग में रोशन है; आप भी देखतेही हैं.

यह चारों की बात सुन, राजा अपने जी में चिन्ता करने लगा कि चारों गुण में बराबर हैं; किसे कन्या दूं. यह सोचकर, उसने बेटी के पास जा, चारों का गुण बयान किया; और कहा मैं तुम्हें किसे दूं? यह सुन के, वह लाज की मारी, नीची गरदन कर, चुप हो रही; और कुछ जवाब न दिया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! यह स्त्री किस के योग है? राजा ने कहा जो कपड़ा बनाकर बेचता है, सो ज्ञात का सूट्र है, और जो भाषा जानता है, वह ज्ञात का बैस है. जो शास्त्र पढ़ा है, सो ब्राह्मण है. और शब्दबेधी उस का सजाती है. यह स्त्री उसके लाइका है. इतनी बात सुन, बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका. और राजा भी, वहां जा उसे बांध, कांधे पर रखकर ले चला.

आठवीं कहानी

तब बैताल ने कहा ऐ राजा! मिथलावती(१) नाम एक नगरी है. वहां का राजा गुणाधिप. उसकी सेवा करने को, दूर देस से एक चिरमदेव नाम राजपुत्र आया. रोज उस राजा के दरशन को जाया करता. लेकिन मुलाकात

(१) मिथिला.

न होती थी. और जितना धन वह लाया था, सो बरस रोज़ के अरसे में सब बैठकर यहाँ खाया; और वहाँ घर उसका वैरान हो गया.

एक दिन की बात है कि राजा शिकार को सवार हुआ. और चिरमदेव भी उसकी सवारी के साथ हो लिया. इत्ति-फ़ाक़न, राजा एक बन में जाकर फ़ौज से जुदा हो गया; और लोग सवारी के एक और जंगल में भटक गये. लेकिन एक चिरमदेव ही राजा के पीछे था. निदान उसने ही पुकारकर कहा महाराज! लोग सवारी के पीछे रह गये हैं; और मैं आपके घोड़े के साथ घोड़ा मारे चला आता हूँ. राजा ने यह सुन के घोड़े को रोका, कि इसमें यह बराबर आया. राजा ने उसे देख के पूछा तू किसवास्ति इतना दुर्बल हो रहा है.

तब यह बोला जिस स्वामी के पास रहिये, और वह ऐसा हो, कि हजारों को पालता हो और अपनी ख़बर न ले, तो इसमें उसको कुछ दोष नहीं. मगर अपने करम का दोष है. जैसे दिन को सारा जहान देखता है, पर उल्लू को नज़र नहीं आता; इसमें गुनाह सूरज का क्या है. हैरत है मुझ को, कि जिन्ने माँके पेट में रोज़ी पहुँचाई थी; जब कि हम पैदा हुए और दुनिया की ग़िज़ाओं के लाइक, अब वह ख़बर नहीं लेता. नहीं मअलूम कि सोता है, या मर गया. और अपने नज़दीक माल औ दौलत चाहनी किसी बड़े आदमी से कि देते वक्त वह मुंह बनावे, और नाक भौं चढ़ावे. इस से ज़हर हलाहल

खाकर मर जाना बिहतर है. और ये छः बातें आदमी को हलका करती हैं; एक तो खोटे नर की प्रीति, दूसरे बिना कारन की हंसी, तीसरे स्त्री से विवाद करना, चौथे असज्जन स्वामी की सेवा, पांचवें गधे की सवारी, छठे बिना संस्कृत की भाषा. और ये पांच चीज बिधाता मनुष के कर्म में पैदा होतेही लिख देता है; एक तो आरबल, दूसरे करम, तीसरे धन, चौथे विद्या, पांचवें यश. महाराज ! जब तक आदमी का पुन्य उदै होता है, सब उसके दास बने रहते हैं. और जब पुन्य घट जाता है, तो बंधु बैरी हो जाते हैं. पर यह एक बात मुक़र्रर है सुखामी की सेवा करने से कभी न कभी फल मिल रहता है; निरफल नहीं रहता.

यह सुन, राजा ने उन सब बातों को गौर कर उस बक्त कुछ जवाब न दिया; पर उससे यह कहा कि मुझे भूख लगी है; कहीं से कुछ खाने को ला. चिरमदेव ने कहा महाराज ! यहां अन्न भोजन न मिलेगा. यह कह, जंगल में जा, एक हिरन मार, खीसे से चकमक निकाल, आग सुलगा, गोश्त के भसतिके भून, राजा को खूब से खिला आप भी खाये. गरज जब राजा का पेट भर चुका, तो उस ने कहा ऐ राजपुत्र ! अब हमें नगर को ले चलो, कि राह मुझे मअलूम नहीं. उसने राजा को नगर में ला उसके मंदिर में पहुंचा दिया. तब राजा ने उसकी चाकरी मुक़र्रर कर दी, और बज्जत से उसे बख्श आभूषन दिये. फिर वह राजा की सेवा में हाजिर रहने लगा.

गरज, एक दिन राजा ने, किसी काम के लिये, समुद्र कनारे उस राजपुत्र को भेजा. वह जब कनारे पहुंचा तो उसने एक देवी का मंदिर देखा. उस में जा, देवी की पूजा की. लेकिन जब यह वहां से बाहर निकला तो वोंहीं उसके पीछे से एक मुंदर नायका आ उससे पूछने लगी ऐ पुरुष ! तू किस लिये यहां आया है ? वह बोला ऐश के लिये आया हूं ; और तेरे रूप को देख, मैं मफतून हुआ हूं. उसने कहा जो मुझे से कुछ इरादः रखता है, तो पहले इस कुण्ड में जाके अशनान कर ; फिर उस के पीछे जो तू मुझे कहेगा सो मैं सुनूंगी.

यह सुनतेही, वह कपड़े उतार, तालाब में पैठ, गोता मार, निकलकर देखे तो अपने नगर में खड़ा है. इस अचंभे को देख, तरसनाक हो, लाचार अपने घर जा, और कपड़े पहन, राजा के पास आ सब वृत्तान्त कहा. राजा ने सुनतेही कहा मुझे भी यह अचंभा दिखा. यह कहतेही, सवारी मंगा, दोनों सवार हो कर चले. कितने दिनों के अरसे में, सागर के किनारे आये. उसी देवी के मंदिर में जाकर पूजा की. फिर राजा जब बाहर निकला, तो वही नायका, एक सखी साथ लिये, राजा के पास आन खड़ी ऊई. और राजा का रूप देख, मोहित हो बोली ऐ राजा ! जो मुझे आज्ञा दे सो करूं. राजा ने उसे उत्तर दिया जो तू मेरा कहा करे तो मेरे सेवक की स्त्री हो. वह बोली मैं तेरे रूप की आधीन ऊई हूं ; इसकी जोरू किस तरह से होऊं. राजाने कहा अभी तो

तू ने मुझ से कहा जो तू ऊँकम करेगा सो मैं करूंगी. और सज्जन जिस बात को कहते हैं उसका निवाह करते हैं. अपने वचन को पाल; मेरे सेवक की जोरू हो. यह सुन के वह बोला जो आप ने कहा सो मुझे प्रमान है. तब राजा, सेवक का गंधर्व विवाह कर, दोनों को साथ ले, अपने राजधाम में आया.

इतनी बात कह, बैताल बोला राजा ! बताओ स्वामी और सेवक में किस का सत अधिक ऊँचा. राजा बोला सेवक का. फिर बैताल बोला कि जिस राजा ने ऐसी सुंदर स्त्री या सेवक को दी तिस राजा का सत अधिक न ऊँचा. तब राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा जिनका धर्म उपकार करना है, तिनके उपकार करने में अधिक क्या है. और जो आपकाजी हो परकाज करे, सोही अधिक है. इस कारन सेवक का सत अधिक ऊँचा. यह बात सुन, बैताल उसी तरवर पर जा लटका. और राजा जा, फिर उसे वहाँ से उतार, कांधे पर रख ले चला.

नवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! मदनपुर नाम एक नगर है. वहाँ बीरवर(१) नाम राजा था. और उसी देस में हिरण्य-दत्त(२) नाम एक बनिया; कि उसकी बेटी का नाम मदन-

(१) बीरवर. (२) हिरण्यदत्त.

सेना था। वह एक रोज बसंत ऋतु में, सखियों को साथ लिये, अपने बाग में, वास्ती सैर और तमाशे के गई। इत्तिफाकन, उस के आने से पेशतर, धर्मदत्त सेठ का बेटा, सोमदत्त नाम, अपने मित्र को साथ लिये, बन बिहार को आया था। वहां से फिरता ऊआ उस बाड़ी में आन पहुंचा। इसे देख मोहित हो गया। और अपने दोस्त से कहने लगा भाई ! वह कदाचित मुझ से मिले तो मेरा जीवन सुफल हो ; और जो न मिले तो इस दुनिया में जीना अबस है।

यह अपने दोस्त से बातें कर, बिरह में व्याकुल हो, बेइख्तियार उस के पास जा, उसका हाथ पकड़के कहने लगा जो तू मुझसे प्रीत न करेगी तो मैं तेरे ऊपर अपना प्राण दूंगा। वह बोली ऐसा मत कीजो ; इसमें पाप होगा। तब उनने कहा तेरे करिश्मे ने मेरे दिल को क़ेदा है। और तेरी बिरह की आग ने मेरे शरीर को जला दिया। इस पीर से मेरी सुद्ध बुद्ध सब जाती रही है। और मुझे इस समै इश्क के ग़लबे से धर्म अधर्म का लिहाज नहीं है। पर जो तू मुझे बचन दे तो मेरे जी में जी आवे। वह बोली आज के पांचवें दिन मेरी शादी होगी, तो पहले मैं तुझ से मिल जाऊंगी ; पीछे अपने शौहर के यहां रहूंगी। यह बचन दे, सौगंद खा, वह अपने घर को गई। और यह अपने घर आया।

गरज पांचवें दिन उसकी शादी ऊई। खाविंद उसका ब्याह कर उसे अपने घर ले आया। कितने एक दिनों के

पीछे, रात के वक्त, उसकी दिवरानी जिठानी ने ज़बरदस्ती उसे उसके पति के पास भेजा. वह रंगमहल में जा, चुपचाप एक कोने में बैठ रही. इस अरसे में उसके खसम ने जो देखा तो उसका हाथ पकड़ सेज पर बिठा लिया. गरज, उनने जब चाहा कि गले लगाऊं तो उसने हाथ से झिड़क दिया; और जो जो उस साहूकार बच्चे से कौल करार हुआ था सो सब बयान किया. यह सुनके, उसके खाविंद ने कहा, जो सच उसके पास जाया चाहती है तो जा.

वह, अपने खासी की आज्ञा पा, उस सेठ के स्थान को चली. राह में चार ने, उसे देख, खुश हो, इसके पास आकर कहा कि तू दोपहर रात के समै, इस अंधेरे में, ऐसे बख्त आभूषण पहन के, अकेली कहां जाती है? वह बोली जिस जगह मेरा प्रीतम प्यारा बसता है. यह सुन, चारने कहा यहां तेरा सहायक कौन है? वह कहने लगी धनुष बान लिये मदन मेरा सहाय करनेवाला साथ है. यह कह, फिर चारके आगे सारी अपनी अब्बल औ आखिर की कथा बयान करके कहा कि मेरा सिंगार भंग मत कर. मैं तुम्हे बचन दिये जाती हूं, वहां से जब फिरुंगी तब गहना तेरे हवाले करुंगी.

यह सुनके, चारने अपने दिल में कहा गहना देने का तो मुझे बचन दिये जाती है; फिर क्यों इसका सिंगार भंग करूं. यह समझकर, उसे छोड़ दिया. आप वहां बैठा रहा. और यह वहां गई कि जहां सोमदत्त पड़ा

सोता था. जातेही जो इसने उसे अचानक जगाया, तो वह घबराकर उठा; और कहने लगा तू देवकन्या है, कि ऋषिकन्या, या नागकन्या है? सच कह, तू कौन है? और मेरे पास कहां से आई है? वह बोली कि मैं नर-कन्या हूं. और हिरन्यदत्त सेठ की बेटी. मदनसेना मेरा नाम है. और तुझे याद नहीं जो उस उपवन में तू जबर-दस्ती मेरा हाथ पकड़ के कंसम को बजिद ऊँचा था. और मैंने, बमूजिब तेरे कहने के, यह सोगंद की थी कि बिवा-हता पुरुष को त्याग करके तेरे पास आऊंगी. सो मैं आई हूं. जो तेरी इच्छा में आवे सो कर.

फिर उनने पूछा कि यह तूने वृत्तांत अपने पति के आगे कहा या नहीं. इनने उत्तर दिया कि मैंने तमाम अहवाल कहा. और उनने सब दरियाफ्त करके मुझे तेरे पास बिदा किया. सोमदत्त बोला यह बात ऐसे है, जैसे बिना बस्त्र का गहना, या बिना घीके भोजन, या बगैर सुर के गाना, यह सब एक सा है. इसी तरह, मैले बसन तेज को हरे, कुभोजन बल को, कुभार्या प्राण को, कुपुत्र कुल को हरे. और राक्षस खफा होता है तो प्राण को लेता है, पर स्त्री, हित और अहित में दोनों तरह से, दुख देनेवाली है. स्त्री जो न करे सो थोड़ा. क्योंकि जो बात इस के मन में रहती है, सो ज़बान पर नहीं लाती; और जो ज़बान में है, उसे जाहिर नहीं करती; और जो करती है सो कहती नहीं. स्त्री को संसार में भगवान ने अजब कोई पैदा किया है.

इतनी बातें कह, उस सेठ के बेटे ने इसे जवाब दिया कि मैं पराई औरत से इलाक़ नहीं रखता. यह सुनके फिर उलटी अपने घर को चली. राह में उस चोर से भेंट हुई. उसके आगे सब वृत्तांत कहा. चोरने सुनके शाबाशी दे छोड़ दिया. यह अपने पति के निकट आई; और उसे तमाम अहवाल बयान किया. पर उसके खाविंद ने उसे प्यार न किया; और कहा, कोयल का सुरही रूप है, और नारीका रूप पतिवरत, और कुरूप मनुष का रूप बिद्या, तपसी का रूप क्षमा.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा ! इन तीनों में से किसका सत अधिक है ? राजा बिक्रमाजीत ने कहा चोर का सत अधिक है. बैताल ने कहा किस तरह ? राजा ने कहा और पुरुष पर उसकी इच्छा देख स्वामी ने छोड़ा. राजाका डर मान सोमदत्त ने छोड़ा. और चोरको छोड़ने का कुछ कारन न था. इस से चोरही प्रधान है. यह सुन, बैताल फिर रुख में जा लटका. और राजा भी वहां जा, उसे दरखत से उतार, बांध कांधे पर रख, फिर ले चला.

दसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! गोड़ (१) देस में बरदमान एक नगर है. और गुणशेखर नाम वहां का राजा था. उसका मंत्री एक सरावगी अभैचंद (२) नाम था. उसके

(१) गौड़.

(२) अभयचन्द्र.

समझानेसे राजा भी स्नायक धर्म में आया. शिवकी पूजा, विषनूकी पूजा, और गौदान, भूमिदान, पिंडदान, जूआ, और मदिरा इन सब को मनअ किया. नगर में कोई करने न पावे. और हाड़ गंगा में कोई न ले जावे. और इन बातों की, दीवान ने भी, राजा से आज्ञा ले, डौंडी नगर में फिरवा दी ; कि जो कोई ये कर्म करेगा उसका सबस राजा छीन ले, सजा दे, शहर से निकाल देगा.

फिर एक दिन दीवान राजा से कहने लगा कि महाराज ! धर्म का बिचार सुनिये. जो कोई किसू का जी लेता है, वह और जन्म में उसका भी जी लेता है. इसी पाप से, संसार में आनके, मनुष का जीवन मरन नहीं छुटता. फिर फिर जनम लेता है, और मरता है. इससे, जगत में जन्म पाके, धर्म बटोरना मनुष को उचित है. देखिये, काम, क्रोध, लोभ, मोह बस हो बिरह्मा, विषनू, महादेव किसू न किसू तौर से, संसार में औतार ले ले आते हैं. बल्कि उनसे गाय अच्छी है, जो राग, द्वेष, मद, क्रोध, लोभ, मोह से रहित है, और प्रजा की रक्षा करे है. और उसके जो पुत्र होते हैं वेभी जगत के जीवों को अच्छी तरह से सुख दे पालते हैं. इससे देवता और मुनि सब गौकी मानते हैं. इस लिये, देवताओं को मानना अच्छा नहीं. इस जगत में गाय को मानिये. और हाथी से लगा चौंटी, और पशु, पंखी, नर तक हर एक जी की रक्षा करना धर्म है. जहान में उसके समान कोई धर्म नहीं. जो नर, बिराने मांस को खा, अपना मांस बढ़ाते हैं, सो

अंत काल में नर्क भोग करते हैं। इससे मनुष्य को उचित यह है कि जी की रक्षा करे। जो लोग कि बिराना दुख न समझते हैं, और गैरों के जी मार मार खाते हैं; उनकी इस पृथ्वी में उमर कम होती है; और लूले, लंगड़े, काने, अंधे, बौने, कुबड़े, ऐसे अंगहीन हो हो जन्म लेते हैं। जैसे पशु और पंखी के अंग खाते हैं वैसेही अनंत अपने अंग गवांते हैं। और मद पान करने से महा पाप होता है। इससे मद मांस का खाना उचित नहीं।

इस तरह से, दीवान राजा को, अपने मतका ज्ञान समझा, ऐसा जैन धर्म में लाया कि जो यह कहता था वही राजा करता था; और बिराह्मण, योगी, जंगम, सेबड़ा, सन्यासी, दरवेश किसी को न मानता था; और इसी धर्म से राज करता था। एक दिन काल के बसहो मर गया। फिर उसका बेटा, धर्मध्वज नाम, गद्दी पर बैठा और राज करने लगा। एक दिन, उसने अभैचंद दीवान को पकड़वा, सिर पर सात चाटियां रखवा, मुंह काला करवा, गधे पर चढ़ा, डौंडी बजवा, ताली दिलवा, देस निकाला दिया और अपना राज निकंटक किया।

एक दिन वह राजा, वसंत ऋतु में रानियों को साथ ले, एक बाग की सैर को गया। उस बाग में एक बड़ा तालाब था। और उस में कंवल फूल रहे थे। राजा, उस सरोवर की सोभा देख, कपड़े उतार, स्नान करने को उतरा। एक फूल तोड़, तीर पर आ, रानी के हाथ में देने लगा; कि इस में हाथ से वह छूटकर रानी के पांव

पर गिरा. और उसकी चोट से, रानी का पांव टूट गया. तब राजा, घबराकर, एक बारगी बाहर निकल, उसकी औषध करने लगा; कि इस में रात ऊई; और चंद्रमा ने प्रकाश किया. चांद की जोत के पड़तेही, दूसरी रानी के शरीर में फफोले पड़ गये; कि अचानक दूरसे किसी गृहस्त्री के घर से मूसल की आवाज़ आई; वोंहीं तीसरी रानी के सिर में ऐसा दर्द हुआ कि गूँग आ गया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा! इन तीनों में अति सुकमार कौन है? राजा ने कहा जिस के सिर में पीर हो मूर्छा आई, सोई बज्जत नाजुक है. यह बात सुन, बैताल फिर उसी वृक्ष में जा लटका. और राजा बहां जा, उसे उतार, गठरी बांध, कांधे पर रख ले चला.

ग्यारहवीं कहानी

बैतात बोला कि ऐ राजा! पुण्यपुर(१) नाम एक नगर है. तहां का बल्लभ नाम राजा था. और उसके मंत्री का नाम सत्यप्रकाश. उस मंत्री की स्त्री का नाम लक्ष्मी. उस राजा ने एक रोज अपने दीवान से कहा, जो राजा होकर सुंदर स्त्री से ऐश न करे तो राज करना उसका निर्फल है. यह बात कह, दीवान को राज का भार दे, आप सुख से ऐश करने लगा. राज की चिन्ता सब छोड़ दी; और दिन रात आनंद में रहने लगा.

(१) पुण्यपुर.

इत्तिफाकन, एक रोज़ वह मंत्री अपने घर में उदास बैठा था, कि इस में उसकी भार्या ने पूछा स्वामी ! इन दिनों आप को बड़त दुर्बल देखती हूँ. वह बोला कि निस दिन मुझे राज की चिन्ता रहती है. इससे शरीर दुर्बल हुआ है. और राजा आठ पहर अपने ऐश आराम में रहता है. वह मंत्री की जोरू बोली कि हे पति ! बड़त दिन तुमने राजकाज किया. अब थोड़े दिनों के लिये, राजासे बिदा हो, तीर्थ यात्रा करो.

यह बात उसकी सुन, चुपका हो रहा. फिर जब वहाँ से उठा, तो वक्त दरबार के, राजा के पास जा, रुखसत ले, तीर्थ यात्रा करने निकला. जाते जाते समुद्र तीर सेतबंद रामेश्वर(१) जा पहुँचा. वहाँ जातेही महादेव का दर्शन कर बाहर निकला था ; कि इत्तिफाकन, नज़र उसकी समुद्र की तरफ़ जा पड़ी ; तो क्या देखता है, कि एक ऐसा कंचन का पेड़ उस में से निकला कि जिसके जमुर्द के पत्ते, पुखराज के फूल, मूंगे के फल, निहायत खुशनुमा नज़र आया. और उस दरख़त पर, अति सुन्दर नायका, बीन हाथ में लिये, मधुर मधुर कोमल कोमल सुरों से बैठी गाती है. बअद एक घड़ी के, वह तरवर समुद्र में लीप हो गया.

यह तमाशा मंत्री वहाँ देख, उलटा फिर, अपने नगर में आया ; और राजा के पास जा दंडवत कर, हाथ जोड़ बोला महाराज ! मैं एक अचरज देख आया हूँ. राजाने

(१) सेतुबन्धरामेश्वर.

कहा बयान कर. दीवान ने कहा महाराज ! अगले मनुष्य कह गये हैं, जो बात किसू की अकल में न आवे, और कोई बावर न करे, वैसी बात न कहिये. पर यह मैंने आंखों से प्रतक्ष देखा ; इस से मैं कहता हूं. महाराज ! जहां रघुनाथजी ने समुद्र पर पुल बांधा है, उस जा देखता क्या हूं कि सागर में से एक सोने का तरवर निकला ; कि जमरुंद के पात, पुखराज के फूल, मूंगे के फलों से ऐसा खूब लदा ऊँचा था, कि जिस का बयान नहीं हो सकता. और उस पर महा सुन्दरि स्त्री, बीन हाथ में लिये, मीठे मीठे सुरों से गाती थी. पर एक घड़ी के बअद, वह पेड़ सिंधु में छिप गया.

यह बात राजा सुन, दीवान को राज सौंप, अकेला समुद्र के कनारे को चला. कितने एक दिनों में वहां जा पड़ंचा ; और महादेव के दर्शन को मंदिर में गया. जौ पूजा कर बाहर आया कि समुद्र से वही दरखत नायका समेत निकला. राजा, उस को देखते ही, सागर में कूद, उसी तरु पर जा बैठा. वह राजा समेत पाताल को चला गया. वह इस को देख के बोली कि ऐ बीर पुरुष ! किस वास्ते तू यहां आया है ? राजा ने कहा मैं तेरे रूप के लालच से आया हूं. उस ने कहा जो तू काली चौदस के दिन मुझ से न मिले, तो मैं तेरे साथ बिवाह करूं. राजा ने यह बात मानी. तिस पर भी, उन्ने बचन लेकर राजा के साथ ब्याह किया.

गरज, जब अंधेरी चतुर्दशी आई, तो उन्ने कहा ऐ राजा !

आज तू मेरे निकट मत रह. यह सुनके, राजा खड्ग हाथ में ले, वहां से उठा; और एक कनारे जा, छिपकर देखता रहा. जब आधी रात ऊई, उस वक्त एक देव आया. और उसने आते ही इसे गले से लगाया. यह देखते ही, राजा खांडा लेके धाया; और कहा अरे राक्षस पापी! मेरे साम्हने तू स्त्री को हाथ न लगा. पहले मुझसे संग्राम कर. और मुझे तभी तक भय था, कि जबतक तुझे न देखा था. अब मैं निडर हूं.

इतनी बात कह, खांडा निकाल एक ऐसा हाथ मारा कि रुण्ड से मुण्ड जूदा हो जमीन पर तड़पने लगा. यह देख, वह बोली कि ऐ बीर पुरुष! तू ने बड़ा उपकार किया. यह कहकर फिर कहा कि न तमाम पहाड़ों में लअल होते हैं; न सब शहरों में सतवंते आदमी; न हर एक बन में चंदन उपजता है; न हर एक हाथी के मस्तक में मोती होता है. फिर राजा ने पूछा यह राक्षस किसवास्ते कृष्ण चतुर्दशी को तेरे पास आया था.

वह बोली मेरे पिता का नाम विद्याधर है. तिसकी मैं पुत्री हूं. सुन्दरी मेरा नाम. और यह मुर्कर था, कि मुझ बिन मेरा बाप भोजन न करता. एक दिन, भोजन की बिरयां, मैं घर में न थी. तब पिता ने क्रोधकर मुझे सराप दिया, कि तुझे काली चौदस के दिन राक्षस आन के गले से लगाया करेगा. यह सुनके, मैं बोली पिता! सराप तो तुमने दिया; पर अब मेरे ऊपर कृपा कीजिये. उसने कहा एक महाबीर पुरुष आनकर जब उस राक्षस को

मारेगा, तब तू इस सराप से छुटेगी. सो मैं उस सराप से छुटी. और अब मैं अपने पिता को नमस्कार करने जाऊंगी.

राजा बोला जो तू मेरे उपकार को माने, तो एक बारी मेरे राज को चलके देख; पीछे अपने पिता के दर्शन को जाइयो. वह बोली कि अच्छा; जो आपने कहा सो मुझे कबूल. फिर राजा उसे साथ ले अपनी राजधानी में आया. शादियाने बजने लगे. सारी नगरी में खबर ऊई कि राजा आया. तब घर घर बधाई मंगलाचार होने लगे. फिर तो तमाम नगर के मंगलामुखी आनके दरबार में मुबारक बादी देने लगे. राजा ने बज्रतसा दान पुण्य किया.

फिर कई एक दिन पीछे, वह सुन्दरी बोली महाराज! अब मैं अपने बापके यहां जाऊंगी. राजा ने उदास हो कर कहा कि अच्छा सिधारो. जब इसने राजा को उदास देखा तो कहा महाराज! मैं न जाऊंगी. राजा ने कहा किसवास्ते तूने अपने बाप के यहां का जाना मौकूफ किया. वह बोली अब मैं मनुष की हो चुकी. और पिता मेरा गंधर्व है. अब मैं जाऊं तो मेरा आदर न करेगा. इस लिये मैं नहीं जाती. यह सुन राजा बज्रत खुश हुआ, और लाखों रुपये का दान पुण्य किया. राजा के इस अहवाल के सुन्ने से, दीवान की छाती फटी; और मर गया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा! किस लिये वह मंत्री मर गया? तब राजा बीर विक्रमाजीत ने कहा, मंत्री ने देखा कि राजा तो एंश करने लगा. और राज-

काज की चिन्ता सब भुला दी. प्रजा अनाथ ऊई. अब मेरा कहा कोई न मानेगा. इसी चिन्ता से वह मर गया. यह सुन, बैताल फिर उसी वृक्ष पर जालटका. राजा, फिर उसी तरह से, कांधे पर रखकर उसको, रवाना ऊआ.

बारहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा बीर विक्रमाजीत ! चूड़ापुर नाम एक नगर है. वहां का चूड़ामन(१) नाम राजा था. जिसके गुरुका नाम देवस्वामी. और उसके बेटे का नाम हरिस्वामी. वह कामदेवके समान सुंदर, और शास्त्र में बृहस्पति की बराबर. और धन उसके कुबेर का सा. वह एक ब्राह्मण की बेटी, कि नाम उसका लावण्यवती(२) था, व्याह लाया. उन दोनों में बज्जतसी प्रीति ऊई.

गरज, एक दिन, गरमी के मौसिम में, रात के वक्त, चौबारे की छत पर, दोनों ग़ाफ़िल पड़े सोते थे. इत्ति-फ़ाक़न, स्त्री के मुंह पर से ओढ़नी सरक गई. और गंधर्व बिमान पर बैठा हवा में उड़ा ऊआ कहीं जाता था. अचानक, उसकी नज़र इस पर पड़ी कि वह बिमान को नीचे लाया ; और उस सोती को बिमान पर रखकर ले उड़ा.

(१) चूड़ामणि. (२) लावण्यवती.

कितनी देर के पीछे, ब्राह्मण भी सोते से उठा, तो देखता क्या है कि स्त्री नहीं. तब घबराया ; और वहां से उतरकर, तमाम घर में ढूँढा. जब इसे वहां भी वह न मिली, तो सारी नगरी की गली गली, कूचः कूचः, ढूँढता फिरा. लेकिन कहीं उसे न पाया. फिर अपने जी में कहने लगा कौन उसे ले गया ; और कहाँ गई !

गरज, जब कुछ बस न चल सका, तो आखिर लाचार हो, अफ़सोस करता ऊँचा, घर को आया ; और वहां उसे फिर दुबारा भी ढूँढा, और न पाया. जब उस बिन घर सूना नज़र आया, तब निहायत बेचैनी और बेकली से बेइख़तियार हो, हाथ प्रान प्यारी, हाथ प्रान प्यारी करके, पूकारने लगा. फिर उसके वियोग से अति व्याकुल हो, ग्रहस्ती छोड़, बैराग ले, लंगोटी बांध, भभूत मल, माला पहन, नगर तज, तीर्थ यात्रा को निकला. नगर नगर, गांव गांव, तीरथ करता ऊँचा, एक नगर में दोपहर के समें जा पहुँचा.

जब भूख से निपट लाचार ऊँचा, तो ढाक के पत्तों का दौना बना, हाथ में ले एक ब्राह्मण के घर जा, उससे कहा कि मुझे भोजन भिन्ना दो. गरज, जब प्रीति के बस आदमी होता है, तब उसे धर्म, जात और खाने पीने का कुछ बिचार नहीं रहता ; और निरादर हो, जहाँ पाता है तहाँ खाता है. जब उस ब्राह्मण से इन्ने भीख मांगी, तब उस ने इससे दौना ले, घर में जा, खीर से भर ला दिया. यह उस दौने को लिये तालाब कनारे आया. वहाँ

एक बड़का दरखत था, उस की जड़ पर दौना रख, सरो-
वर में मुंह हाथ धोने गया.

उस वृक्ष की जड़ से एक काला नाग निकल उस दौने
में मुंह डाल चला गया; और वह दौना तमाम जहर से
भर गया; कि इसमें यह भी हाथ मुंह धोकर आया. पर
उसे यह अहवाल मअलूम न था. और भूख भी निहायत
लगी थी. आतेही खीर खाई. और वोंहीं उसे बिष चढ़ा.
फिर इन्ने उस ब्राह्मण से जाकर कहा कि तैने मेरे तई
बिष दिया. और मैं अब इससे मरुंगा. इतना कह, घूम
कर गिरा; और मर गया. फिर उस ब्राह्मण ने इसे मुआ
देख, अपनी स्वकीया स्त्री को घर से निकाल दिया; और
कहा ब्रह्महत्यारी! तू यहां से जा.

इतनी बात सुना, बैताल बोला कि ऐ राजा! इनमें से
ब्रह्महत्या का पाप किसे ऊआ? राजाने कहा सांप के
मुंह में तो बिष होताही है. इससे उसे पाप नहीं. और
ब्राह्मण ने भूखा जान के भिन्ना दी थी. उसे भी पाप नहीं.
और उस ब्राह्मणी ने स्वामी की आज्ञा से भीख दी थी.
उसे भी पाप नहीं. और उसने भी अनजाने खीर खाई.
तिससे उसे भी पाप नहीं. गरज, इनमें से जिस को कोई
पाप लगावे वही पापी है. यह सुन, बैताल फिर उसी
तरवर पर जा लटका. और राजा भी जा उसे उतार,
बांध कांधे पर रख, वहां से ले चला.

तेरहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! चंद्रहृदय नाम नगरी है. और उस जगह का रनधीर(१) नाम राजा था. उसकी नगरी में धर्मध्वज नाम एक सेठ था. और उसकी बेटी का नाम शोभनी;(२) पर अति सुंदरी. जवानी उसकी दिन बदिन बढ़ती थी; और रूप उसका पल पल अधिक होता था.

इत्तिफाकन, उस नगरी में रातों को चोरी होने लगी. जब चोरों के हाथ से महाजनों ने बड़त दुख पाया; तब इकठे हो, राजा के निकट जाकर, सबने कहा महाराज ! चोरों ने नगर में बड़त जुलम किया है. हम इस शहर में अब रह नहीं सकते. राजा ने कहा खैर जो ऊआ सो ऊआ. लेकिन अब आगे दुख न पाओगे. मैं उनका यत्न करता हूं. यह कह, राजा ने बड़त से लोग बुलवा चौकी को भेज दिये; और चौकी पहरे का ढब उन को बता दिया. और ऊकम किया कि जहां चोरों को पाओ, बिना पूछे मार डालो.

लोग रात को नगर की रखवाली करने लगे. उस पर भी, चोरी होती थी. सारे साहकार, इकठे होकर, राजा के पास आये; और अर्ज की महाराज ! आप ने पहरे भेजे, तौ भी चोर कम न ऊए; और रोज चोरी होती है. राजा ने कहा इस वक्त, तुम रखसत हो. आज

की रात से नगर की चौकी देने में निकलूंगा. यह सुनके राजा से बिदा हो, वे अपने अपने घर गये. और जिस वक्त कि रात ऊई, राजा अकेला ढाल तलवार ले, धादा नगरी की रक्षा करने लगा. इस में आगे जाके देखे तो एक चोर साम्हने से चला आता है. राजा उसे देखकर पुकारा, तू कौन है ? वह बोला कि मैं चोर हूं ; तू कौन है ? राजा ने कहा मैं भी चोर हूं. यह सुन, वह खुश होके बोला आओ, मिलकर चोरी करने चलें.

यह बात आपस में ठहरा, राजा और चोर, बाँते करते ऊए, एक सहस्रे में पैठे ; और कितने एक घरों में चोरी कर, माल मताअ ले नगर के बाहर निकल, एक कुए पर आये ; और उस में उतर पाताल पुरी में जा पहुँचे. वह चोर, राजा को दरवाजे पर खड़ाकर, धन दौलत अपने मंदिर में ले गया. इतने में उसके घर में से एक दासी निकली. वह राजा को देखके कहने लगी महा-राज ! तुम कहां इस दुष्ट के साथ यहां आये. खैर इसमें है कि वह आने न पावे, और तुम से जहां तलक भागा जाय भागो ; नहीं तो वह आतेही तुम्हें मार डालेगा. राजा ने कहा मैं तो राह नहीं जानता ; किधर को जाऊँ. फिर उस चोरीने बाट दिखा दी. और राजा अपने मंदिर को आया.

गरज, दूसरे दिन राजा ने, सब अपनी सेना साथ ले, उस कुए की राह पाताल पुरी में जाकर, चोर का तमाम घर बार खीर लिया. और वह चोर, कीसी और

राह से निकल, उस नगरी का मालिक जो देव था, उसके पास गया ; और अरज की कि एक राजा मेरे मारने को घर पर चढ़ आया है. या तुम मेरी इस समझ सहाय करो ; नहीं तुम्हारी पुरी का बास छोड़ और नगर में जा बसा हूँ. यह सुन, राजस ने खुश होकर कहा तू मेरे लिये खाने को लाया है ; मैं तुझसे बड़त खुश हुआ. यह कह कर, जहाँ राजा कटक लिये हवेली घेरे ऊँ था, वहाँ वह देव आ, आदमियों को और घोड़ों को खाने लगा. और राजा उस देव की सूरत देखकर भागा. और जिन लोगों से भागा गया वे तो बचे. और बाकियों को देव ने खाया.

गरज, राजा अकेला भागा जाता था ; कि चोर ने आकर ललकारा तू राजपूत होकर लड़ाई से भागता है. यह सुनते ही, राजा फिर खड़ा हुआ. और दोनों सन-मुख हो युद्ध करने लगे. निदान राजा, उसे बसकर, मुश्किल बांध, नगर में ले आया. फिर उसको निहलवा धुलवा, अच्छे अच्छे बस्त्र पहरा, एक ऊँट पर बिठला, दंडोरिया साथ कर, सारी नगरी के फेरने को भेजा ; और सूली उसके वास्ते खड़ी करने का ऊँकम किया. इस में शहर के लोगों में से जो उसे देखता था सो कहता था, कि इसी चोर ने तमाम नगर लूटा है. और अब इसे राजा सूली देगा.

जब कि उस धर्मध्वज सेठ की हवेली के नीचे वह चोर गया, तो उस सेठ की बेटी ने, दंडोरे की आवाज सुन,

अपनी दासी से पूछा, यह काहेकी डोंडी बाजती है. यह वाली जो चोर इस नगर में चोरी करता था, उसे राजा पकड़ लाया है. अब सूली देगा. यह सुन के, देखने को वह भी दौड़ो आई. चोर का रूप जोवन देखतेही, मोहित हो गई; और अपने बाप से आकर कहा, तुम इस समैं राजाके पास जाओ; और उस चोर को छोड़ा लाओ. सेठ बोला, कि जिस चोर ने राजा का तमाम नगर मूसा है, और जिस के लिये सारा कटक कटा, उसे मेरे कहे से क्योंकर छोड़ेगा. फिर उसने कहा जो तुम्हारे सर्वस दिये से भी राजा उसे छोड़े तो तुरन्त तुम उसे छोड़ा लाओ; और जो वह न आवेगा, तो मैं भी अपनी जान दंगी.

यह सुन सेठ ने राजा से जाकर कहा महाराज ! पांच लाख रुपये मुझ से लीजिये, और इस चोर को छोड़ दीजिये. राजा बोला इस चोर ने सारा नगर मूसा और तमाम लश्कर इसके सबब से ग़ारत हुआ. इसे मैं किसी तरह से न छोड़ूंगा. जब राजा ने उसकी बात न मानी, लाचार फिर यह अपने घर को आया; और अपनी बेटी से कहा, जितना कहने का धरम था उतना मैं ने कहा; लेकिन राजा ने न माना.

इतने अरसे में, चोर को, नगरी के फेरे दिलवाकर, सूली पास ला खड़ा किया. और चोर ने उस बनिये की बेटी का अहवाल जो सुना, पहले खिलखिलाकर हंसा; फिर डकरा डकरा रोने लगा. इतने में लोगों ने उसे सूली पर खेंच लिया. और बनिये की बेटी, उसके मरने

की ख़बर पाकर, सती होने के लिये उसी जगः पर आई. चिता बनवा, उस में बैठ, उस चोर को सूली से उतार, उस का सिर गोद में रख, जलने को बैठी चाहे कि उसमें आग दिलवावे, इत्तिफ़ाक़न, वहां एक देवी का मंदिर था, उसमें से तुरन्त देवी निकलकर बोली ऐ पुत्री ! मैं तुष्ट ऊई तेरे साहस पर ; तू बर मांग. वह बोली माता जो तू मुझसे तुष्ट ऊई है, तो इस चोर को जीदान दे. फिर देवी बोली इसी तरह से होवेगा. यह कह, पताल से अमृत ला चोर को जिला दिया.

इतनी कथा कह, बैताल ने पूछा ऐ राजा ! बताओ कि चोर पहले किस कारन हंसा, और पीछे किस लिये रोया. राजा ने कहा जिस वास्ते हंसा वह बाइस मैं जानता हूं. और जिस लिये रोया वहभी मुझे मअलूम है. सुन बैताल ! चोर ने जीमें बिचारा, यह जो मेरे वास्ते अपना सर्वस राजा को देती है, अब इसका मैं क्या उपकार करूंगा. यह समझकर वह रोया. फिर अपने मनमें बिचारा कि मरने के समें उसने मुझ से प्रीति की. भगवान की गति कुछ जानी नहीं जाती. कुलक्षत्र को दे लक्ष्मी ; कुलहीन को देवै बिद्या ; मूरख को दे सुंदर स्त्री ; पहाड़ पर बरसावे बरषा. ऐसी ऐसी बातें सोचकर हंसा. यह सुन, बैताल फिर उसी पेड़ पर जा लटका. राजा फिर वहां गया ; और उसे खोल, गठरी बांध, कांधे पर रख, ले चला.

चौदहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा विक्रम ! कुसमावती(१) नाम एक नगरी है. वहां का सुबिचार नाम राजा. जिसकी बेटी का नाम चद्रप्रभा. जब वह बरयोग ऊई, तब एक दिन, बसंत ऋतु में, सखियों को साथ ले, बाग की सैर को चली. वहां जनाने के बंदोबस्त से पहले, एक ब्राह्मण का लड़का, बरस बीस एक का, अति सुन्दर, मनस्वी नाम कहीं से फिरता ऊआ, उस बाग में आ, एक वृक्ष के नीचे ठंडी छांह पाकर सो रहा था. राजा के लोगों ने आ, उस बाड़ी में जनाने का बंदोबस्त किया. पर इत्तिफाकन, उस बह्मनेटे की किसी ने न देखा. और वह उस दरखत के नीचे सोता रहा. और राजकन्या अपने लोगों समेत बाग में दाखिल ऊई. सहेलियों के साथ सैर ओ तमाशा देखती ऊई कहां आती है कि जहां वह बह्मनेटा सोता था. इस का वहां पहुंचना, कि वह भी लोगों के पांव के आहट से उठ बैठा. दोनों की चार नजरे ऊई ; और कामदेव के ऐसे बस ऊए, कि उधर ब्राह्मण का लड़का मूरका खा भूमि पर गिरा ; इधर बेसुध हो राजकन्या के पांव कांपने लगे. पर वोंहीं उसे सखियों ने हाथों हाथ थाम लिया. निदान, चंडोल में लिटा घर को ले आई. और वहां ब्राह्मण का लड़का ऐसा बेसुध पड़ा था, कि अपने तन मन की कुछ खबर न रखता था.

इस अरसे में दो ब्राह्मण, शशी और मूलदेव नाम कांवरू(१) देस से बिद्या पढ़े ऊए वहां आ निकले. मूलदेव ने उस ब्राह्मण के लड़के को पड़ा देखकर कहा ऐ शशी ! ऐसा बेसुध यह क्यों पड़ा है. वह बोला नायकाने भौ की कमान से नैन के तीर मारे हैं ; इससे यह बेसुध पड़ा है. मूलदेव ने कहा इसे उठाया चाहिये. उसने कहा तुम्हें उठाने से क्या दरकार है. उसने शशी का कहना न माना, और उसे पानी छिड़क कर उठाया ; और पूछा कि तेरी क्या दसा ऊई है ? वह ब्राह्मण बोला दुख उससे कहिये जो दुख को दूर करे. और जो सुनके दूर न कर सके उससे कहना क्या हासिल. वह बोला अच्छा तू अपनी पीर हमारे आगे कह ; हम दूर करेंगे.

यह सुनके वह बोला कि अभी राजकन्या सखियों को साथ लिये आई थी. सो उसके देखने से मेरी यह गति ऊई है. जो वह मिलेगी तो मैं अपना जीव रक्खूंगा ; नहीं तो प्रान तजूंगा. तब वह बोला हमारे स्थान पर चल. उसके मिलने का हम यत्न कर देंगे ; और नहीं तो तुम्हे बज्रतसा धन देंगे. तब मनस्वी बोला कि संसार में भगवान ने बज्रत रत्न पैदा किये हैं. पर स्त्रीरत्न सब से उत्तम है. और उसी के लिये मनुष्य धन की इच्छा करते हैं. जब नारी को त्यागा तो धन लेके क्या करेंगे. जिन की हसीन औरत मुयस्सर न हो उन से संसार में पशु भले हैं. धर्म का फल है धन ; और धन का फल है सुख ; और

सुख का फल है नारी; और जहाँ नारी नहीं तहाँ सुख कहां. यह सुनके मूलदेव बोला जो तू मांगेगा सो दूंगा. तब उस ने कहा ऐ ब्राह्मण ! मुझे वोही कन्या दिला दे. फिर मूलदेव ने कहा अच्छा तू हमारे साथ चल. तुझे वोही कन्या दिला दूँगे.

गरज, बज्जत सी तसल्ली कर उसे अपने घर ले गया. और वहाँ जाकर दो गुटके बनाये. एक गुटका उस ब्राह्मण को देकर कहा, जब इसे मुंह में रक्खेगा, तब तू बारह बरस की कन्या हो जायगा. और जिस वक्त तू इसे मुंह से निकाल लेगा, तो पुरुष ज्योंका त्यों हो जायगा. और कहा तू इसे अपने मुख में रख. उस ने जो अपने मुख में रक्खा तो बारह बरस की कन्या हो गया. और दूसरे गुटके को जो इसने मुख में रक्खा तो आप अस्सी बरस का डोकरा बन गया; और उस कन्या को लिये ऊँह राजा के यहाँ गया.

राजा ने ब्राह्मण को देख, दंडवत कर, आसन बैठने को दिया; और एक आसन उस लड़की को भी. तब ब्राह्मण ने एक श्लोक पढ़ असीस दी; कि जिसकी शोभा चिलोकी में फैल रही है; और जिन्ने बीना हो बलि को छला; और जिनने बंदर साथ ले समुद्र का पुल बांधा; और जिन्ने, पर्वत हाथ पर रख, इंद्र के बजर से गवाल बाल बचाये; सोही वासुदेव तुम्हारी रक्षा करे. यह सुनकर, राजा ने पूछा महाराज ! आप कहां से पधारे. मूलदेव ब्राह्मण बोला कि गंगापार से मैं आया हूँ. और

वहीं मेरा घर है. और मैं अपने बेटे की बहू को लेने गया था. पीछे मेरे गांव में भागड़ पड़ी. सो मैं नहीं जानता कि ब्राह्मणी और मेरा पुत्र भाग कहां गये. और अब मैं इस को साथ लिये ऊँ उँहें किस तरह ढूँढूंगा. इससे बिहतर यह है, कि आप के पास इसे छोड़ जाता हूँ. जबतक कि मैं न आज तबतक इसे यत्न से रखना.

यह बात ब्राह्मण की सुन, राजा अपने चित में चिन्ता करने लगा कि अति सुंदर तरुन स्त्री को मैं किस तरह रक्खूँ. और जो नहीं रखता तो यह ब्राह्मण सराप देगा. मेरा राज भंग हो जायगा. यह अपने जी में राजा बिचारकर बोला महाराज ! जो आपने आज्ञा की कबूल है. फिर राजा ने अपनी पुत्री को बुलाकर कहा बेटी ! इस ब्राह्मण की बहू को अपने पास ले जाके बहूत यत्न से रक्खो ; और सोते, जागते, खाते, पीते, चलते, फिरते किनभर इसे अपने पास से जुदा मत कीजो. यह सुन, राजकन्या, उस ब्राह्मण की बहू का कर धर, अपने मंदिर में ले गई. रात के समैं दोनों एक सेज पर सोई और आपस में बातें करने लगीं. बातें करते करते ब्राह्मण की बहू बोली कि ऐ राजकन्या ! तू किस दुखके मारे अति दुरबल हो रही है ; सो मुझ से कह.

राजपुत्री बोली, एक दिन बसंत ऋतु में, सखियों की साथ ले, मैं बाग की सैर को गई थी. और वहां एक ब्राह्मण अति सुन्दर कामदेव के समान मैं ने देखा. और उस की मेरी चार नजरें ऊँई. उधर वह बेहोश ऊँआ ;

और इधर मैं बेसुध ऊई. तब सखियां, मेरी अवस्था देख, घर को ले आई. और उसका नांव ठांव मैं कुछ नहीं जानती. मेरी आंखों में उसकी सूरत समा रही है. और मुझे खाने पीने की भी कुछ रुच नहीं. इसी पीर से मेरे शरीर की यह दसा ऊई है. यह सुनके वह ब्राह्मण की बह बोली जो तेरे प्रीतम को तुझ से मिला दूं तो तू मुझे क्या दे. राजकन्या बोली कि सदा तेरी दासी हो रहूंगी. यह सुनके, वह गुटका अपने मुख से निकाल फिर पुरुष हो गया. और यह उसे देखके शरमाई. फिर उस ब्राह्मण के लड़के ने, गंधर्व विवाह की रीत से, उसके साथ अपना व्याह किया. और हमेशः उसी तरह रात को मर्द होता और दिन को रंडी बना रहता. निदान कः महींने पीछे राजकन्या को गर्भ रहा.

एक दिन का जिक्र है, कि राजा, सारे कुटुंब को साथ लेकर, दीवान के घर शादी में गया. वहां मंत्री के बेटे ने उस स्त्रीभेषधारी ब्राह्मण के लड़के को देखा. देखते ही आशिक हो गया; और अपने एक मित्र के आगे कहने लगा, जो यह नारी मुझे न मिलेगी तो मैं अपना प्राण तजूंगा. इस अरसे में, राजा न्योता खा कुनवे समेत अपने मंदिर को आया. पर मंत्री के पूत की, उसके विरह की डाह से, निपट कठिन अवस्था ऊई; और अन्न पानी छोड़ दिया. यह गति देख, उसके मित्रने जा मंत्री से कहा. और दीवान ने, यह अहवाल सुन, जा राजा से कहा महाराज ! उस ब्राह्मण की बह की प्रीति में मेरे

बेटे की बुरी हालत है. खाना पीना छोड़ दिया है. जो आप कृपा करके ब्राह्मण की बह्म को मुझे देवें तो उसकी जान बचे.

यह सुन राजा क्रोध कर बोला अरे मूर्ख ! ऐसी अनोति करना राजाओं का धर्म नहीं है. सुन तो एक मनुष्य की थायी हो और बिना आज्ञा उसकी दूसरे को देना उचित है जो तू मुझ से यह बात कहता है. यह सुनके प्रधान निरास हो अपने घर को आया. पर उस लड़के का दुख देखकर उन्ने भी अन्न जल छोड़ दिया. जब कि तीन दिन दीवान को बिन दाने पानी के गुजरे ; तब तो सब कारबारियों ने इकठे होकर राजा से अर्ज की महाराज ! मंत्री का पुत्र अब तब हो रहा है. और उसके मरने से दीवान भी न बचेगा. और दीवान के मरने से राजकाज न चलेगा. बिहतर यह है कि जो हम अर्ज करें सो कबूल हो. यह सुनके, राजा ने आज्ञा दी कि कहो. तब उनमें से एक शख्स बोला महाराज ! उस बूढ़े ब्राह्मण को गये ऊँच बज्जत दिन ऊँच, कि फिरा नहीं. भगवान जाने मर गया, या जीता है. इसे उचित यह है, कि उस ब्राह्मण की बह्म को मंत्री के बेटे को दे अपना राज काइम रखिये. और कदाचित वह आया तो गांव धन दीजेगा. अगर इस पर राजी न होगा तो उसके लड़के का व्याहकर बिदा कीजेगा.

यह बात सुन राजा ने उस ब्राह्मण की बह्म को बुलाकर कहा तू मेरे मंत्री के पुत्र के घर जा. वह बोली कि

स्त्री का धर्म नष्ट होता है अतिरूप पाके ; और ब्राह्मण का धर्म जाता है राजा की सेवा करने से ; और गाय खराब होती है दूर की चराई से ; और धन जाता है अधर्म पाने से. इतना कह फिर बोली जो महाराज ! तुम मुझे मंत्री के बेटे को देते हो तो उससे यह बात ठहरा दीजिये, कि जो कुछ उससे मैं कहूँ सो वह करे. तब मैं उसके घर जाऊँगी. राजा बोला कह कि वह क्या करे. उन्ने कहा महाराज ! मैं ब्राह्मणी ; और वह क्षत्री. इससे बिहतर यह है कि वह पहले सब तीर्थ यात्रा कर आवे ; तब मैं उसके साथ घर करूँ.

यह बात सुनके, राजा ने मंत्री के बेटे को बुलाकर कहा पहले तू तीर्थ यात्रा कर आ ; तब उस ब्राह्मणी को तुझे देवेंगे. राजा की बात सुन दीवान के बेटे ने कहा महाराज ! वह मेरे घर जा बैठे, तो मैं तीर्थ को जाऊँ. यह बात सुन, राजा ने उस ब्राह्मणी से कहा, जो तुम पहले उसके घर में जाके रहो तो वह तीर्थयात्रा को जाय. लाचार हो राजा के कहने से, ब्राह्मणी उसके घर में जा रही. तब प्रधान के पुत्र ने अपनी नारी से कहा तुम दोनों निहायत प्यार इखलास से बाहम एकजा रहना ; और आपस में किसी तरह का भगड़ा लड़ाई न करना ; और बिराने घर कभी न जाना.

इतनी सीख दे, वह तो तीर्थ यात्रा को गया. और इधर उसकी बहू, सौभाग्यसुन्दरी नाम, ब्राह्मण की बहू को अपने साथ ले, एक बिकाने पर रात को लेटी ऊई

वातेँ इधर उधर की करने लगी. कितनी एक देर के बअद, उस दीवान के पुत्र की बहू ने यह बात कही ऐ सखी! इस वक्त तो मैं इशक से जली जाती हूं. पर मतलब मेरा किस तौर से हासिल हो. दूसरी बोली कि अगर तेरे मतलब को मैं बरलाऊं, तो तू मुझे क्या दे. उन्ने कहा सदा तेरे आगे हाथ जोड़े आज्ञाकारी रहूं. तब यह अपने मुखसे गुटके को निकाल, पुरुष बन गया. हमेशः इसी तरह रात को मर्द बनता, और दिन को रंडी. फिर तो इन दोनों में बड़ी प्रीति ऊई.

गरज, इसी तरह से कः महीने बीते. और मंजी का पुत्र आ पहुंचा. उधर लोग, उस के आने की खबर सुन, मंगलाचार करने लगे. और इधर ब्राह्मण की बहू ने, गुटका मुख से निकाल, मर्द बन, खिड़की की राह मझल से निकल, अपनी राह ली. फिर कितनी एक देर में उस मूलदेव ब्राह्मण के पास पहुंचा, कि जिस ने इसे गुटका दिया था ; और उस से सब अपनी आदि अंत की अवस्था कही. तब मूलदेव ने तमाम अहवाल सुनकर, गुटका इस्से ले, अपने साथी शशी नाम ब्राह्मण को दिया. और दोनों ने गुटके अपने अपने मुख में रख लिये. एक बूढ़ा बन गया. और दूसरा बीस बरस का. फिर वे दोनों राजा के यहां गये.

राजा ने देखतेही दंडवत कर, इनके बैठने को आसन दिये. और इन्हों ने भी असीसें दीं. राजा ने, इनकी कुशल चेम पूछ, मूलदेव से कहा कि इतने दिन तुम्हें कहां

लगे. ब्राह्मण बोला महाराज ! इसी पुत्र के ढूँढने को गया था. सो उसे खोजकर आप के पास ले आवा हूँ. अब इस की बहू को दो तो मैं बहू बेटे को अपने घर ले जाऊँ. तब राजा ने ब्राह्मण के आगे वह सब वृत्तान्त कह सुनाया. ब्राह्मण ने सुनते ही अति कोपकर राजा से कहा यह कौन सा व्योहार है, जो तुम ने मेरे बेटे की बहू और को दी. अच्छा जो तुम ने चाहा सो किया. पर अब मेरा सराप लो. तब राजा बोला कि हे देवता ! तुम क्रोध मत करो. जो तुम कहो सो मैं करूँ. ब्राह्मण बोला अच्छा जो तू मेरे सराप से डरकर मेरा कहा करता है तो तू अपनी पुत्री मेरे लड़के को व्याह दे. यह सुन राजा ने एक ज्योतषी को बुला, शुभ लगन मुहूर्त ठहराय, अपनी पुत्री उस ब्राह्मणके लड़के से बियाह दी. फिर यह वहाँ से राजकन्या को, दान जहेज समेत, ले राजा से विदा हो अपने गाँव में आया.

यह खबर सुन, वह मनस्वी ब्राह्मण भी वहाँ आ उससे भगड़ने लगा कि मेरी स्त्री मुझे दे. शशी नाम ब्राह्मण बोला कि मैं दस पंचों में व्याहकर लाया हूँ; यह स्त्री मेरी है. उस ने कहा कि इसे तो मेरा गर्भ रचा; तेरी किस तरह से यह नारी होगी. और आपस में बिबाद करने लगे. मूलदेव ने इन दोनों को बड़त समझाया. लेकिन किसूने उसका कहना न माना.

इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा बीर विक्र-
माजीत ! कहो वह भार्या किस की ऊई ? राजा ने कहा

वह स्त्री शशी ब्राह्मण की ऊई. तब बैताल बोला गर्भ उस ब्राह्मण का; जोरू इस की किस तरह से ऊई? राजा ने कहा कि उस ब्राह्मण का पेट रखवाया ऊआ तो किसूने मअलूम न किया. और इन्ने दस पचां में बैठके शादी की. इस लिये इस की जोरू ठहरी. और वह लड़का भी इसी की क्रिया कर्म का अधिकारी होगा. यह बात सुन, बैताल उसी रूख में जा लटका. फिर राजा गया; और बैताल को बांध, कांधे पर रख, ले चला.

पंदरहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! हिमाचल नाम एक पर्वत है. तहां गंधर्व का नगर है. और वहां का राज राजा जीमूतकेतु करता था. एक समैं उसने पुत्र के अर्थ कल्पवृक्ष की बज्जतसी पूजा की. तब कल्पवृक्ष खुश हो बोला ऐ राजा! तेरी सेवा देख मैं संतुष्ट ऊआ; जो तू चाहे सो बर मांग. राजा ने कहा कि एक पुत्र मुझे दो जो मेरा राज और नाम रहै. उन्ने कहा ऐसाही होगा.

कितने दिनों के बअद, राजा के बेटा ऊआ. उसे निहायत खुशी ऊई; और बड़ी धूम से शादी की. बज्जत सा दान पुन्य कर, ब्राह्मणों को बुला, उस का नाम करन

किया. ब्राह्मणों ने उस का नाम जीमूतबाहन(१) धरा. जब कि वह बारह बरस का ऊँचा, तब शिव की पूजा करने लगा ; और सब शास्त्र पढ़के बड़ाई ज्ञानी, ध्यानी, साहसी, सूरवीर, धर्मात्मा, पंडित ऊँचा. उस समै उसकी बराबर कोई न था. और जितने उस के राज में लोग थे, वे सब अपने अपने धर्म में सावधान थे.

जब वह जवान ऊँचा तो उन्ने भी कल्पवृक्ष की बज्जत सेवा की. तब कल्पवृक्ष ने प्रसन्न हो उससे कहा जिस बात की तुझे इच्छा हो सो मांग, मैं तुझे दूंगा. फिर जीमूतबाहन बोला जो तुम मुझसे प्रसन्न हुए हो तो मेरी सब रण्यत का दरिद्र दूर करो ; और जितने लोग मेरे राज में हैं सब माल और दौलत से बराबर हो जावें. तब कल्पवृक्ष ने बर दिया. सब लोग धन से ऐसे आसूदः हुए कि कोई किसी का ऊँकम न मानता था, और कोई किसी का काम न करता.

जब उस राज के लोग ऐसे हो गये, तब जो भाई बांध उस राजा के थे, वे आपस में बिचार करने लगे कि बाप बेटे तो दोनों धर्म के बस हुए ; और लोग इन का ऊँकम नहीं मानते. इससे उत्तम यह है, कि इन दोनों को पकड़के कैद कीजिये, और राज इन का छीन लीजिये. गरज, राजा तो उन्हों की तरफ़ से गाफ़िल रहा. और उन्हों ने, आपस में मनसूबः बांध, फौज ले, राजा का मंदिर जा घेरा.

जब यह ख़बर राजा को पहुंची, तब राजा ने अपने बेटे से कहा अब क्या करें. राजकुमार बोला महाराज ! आप यहां बिराजिये ; आप के धर्म से, अभी जाके उन्हें मार लेता हूं. राजा ने कहा ऐ पुत्र ! यह शरीर अनित्य है ; और धन भी अस्थिर है. जब आदमी जनमा तो मृत्यु भी उसके साथ है. इससे अब राज छोड़ धर्म काज किया चाहिये. ऐसे शरीर के कारन, और इस राज के वास्ते, महापाप करना उचित नहीं. क्योंकि राजा युधिष्ठिर भी महाभारत करके पीछे पड़ताये थे. यह सुन उसके बेटे ने कहा अच्छा, राज अपना गौतियों को दीजिये, और आप चलके तपस्या कीजिये.

यह बात ठहरा, भाई भतीजों को बुलवा राज दे, दोनों बाप बेटे मलयाचल पर्वत के ऊपर गये, और वहां जा कुटी बना रहने लगे. जीमूतबाहन से और एक ऋषी के बेटे से दोस्ती हुई. एक दिन, उस पर्वत के ऊपर, राजा का बेटा और ऋषी का बेटा खैर के वास्ते गये. वहां एक भवानी का मंदिर नज़र आया. उस मंदिर में एक राजकन्या बिन लिये हुए देवी के आगे गा रही थी. उस कन्या की और जीमूतबाहन की चार नज़रें हुई ; और दोनों की लगन लग गई. पर राजकन्या मनमार लाज की मारी अपने घर को पधारी. और दुघर यह भी, उस ऋषी के बेटे की शर्म के मारे, अपने स्थान पर आया. वह रात, उन दोनों गुलउज़ारों को, निहायत बेकली से कटी.

सुबह के होते ही, उधर से राजकन्या देवी के मंदिर को गई. और इधर से राजकुमार ने भी जाते ही देखा कि राजकन्या भी है. तब इसने उसकी सखी से पूछा यह किसकी कन्या है. सखीने कहा यह मलयकेतु राजा की पुत्री है. मलयावती(१) इसका नाम. और अभी कुमारी है. यह कह फिर सखीने इस राजपुत्र से पूछा कहो सुन्दर पुरुष ! तुम कहाँसे आये हो ; और तुम्हारा क्या नाम है. यह बोला विद्याधरों का राजा जीमूतकेतु नाम ; तिसका मैं सुत हूँ. और जीमूतबाहन मेरा नाम. राजके भंग होनेसे पिता पुत्र हम यहाँ आनके रहे हैं.

फिर सखीने ये बातें सुनकर सारी राजकन्या से कहीं. यह सुन अपने जी में बज्जत दुख पाय घर को आई, और रात को चिंता करके सो रही. पर यह दसा इसकी देख, सखीने वह वृत्तान्त इसकी माके आगे जाहिर किया. रानी ने सुनकर राजा के आगे बयान किया ; और कहा महाराज ! पुत्री आप की बरजोग ऊई है. इस का बर कौन नहीं ढूँढते. यह सुनके, राजा ने अपने जी में चिंता कर, उसी समै मित्रावसू(२) नाम अपने पुत्र को बुलाकर कहा बेटा ! अपनी बहिन का बर ढूँढ लाओ. तब वह बोला कि महाराज ! गंधर्वों का राजा जीमूतकेतु नाम. तिस का पुत्र जीमूतबाहन नाम. राज छोड़ पिता पुत्र दोनों, सुना है कि, यहाँ आये हैं. यह सुन मलयकेतु राजा ने कहा यह पुत्री जीमूतबाहन को दूंगा.

(१) मलयवती.

(२) मित्रावसू.

इतना कह बेटे को आज्ञा दी, कि पुत्र ! जीमूतबाहन राजकुमार को राजा के पास से जाकर बुला लाओ। यह राजा का ऊँकम पाकर उसी मकान पर गया ; और वहाँ जाकर उस के पिता से कहा अपने पुत्र को हमारे साथ कर दो ; कि हमारे पिताने कन्यादान देने को बुलाया है। यह सुनके राजा जीमूतकेतु ने अपने बेटे को साथ कर दिया। और वह वहाँ आया। फिर मलयकेतु राजा ने उसका गंधर्व बिवाह कर दिया। जब कि इसकी शादी हो चुकी, तब दुलहन को और मिचावसू को अपने स्थान पर लेकर आया। फिर इन तीनों ने राजा को दंडवत की। और राजा ने भी उन्हें असीस दी। वह दिन तो योंहीं गुजरा।

लेकिन दूसरे दिन सुबह को उठतेही दोनों राजकुमार उस मलयागिरि(१) पर्वत पर फिरने को गये। वहाँ जाकर जीमूतबाहन क्या देखता है कि एक सुफ़ैद ढेर जंघा सा है। तब इसने अपने साले से पूछा भाई ! यह धौला ढेर कैसा नज़र आता है। वह बौला पाताल लोग से करोड़ों नागकुमार वहाँ आते हैं। तिन्हें गरुड़ आनके खाता है। यह उन्हीं के हाड़ों का ढेर है। यह सुनके, जीमूतबाहन ने साले से कहा मित्र ! तुम घर जाके भोजन करो। क्योंकि मैं इस समै अपनी नित्य पूजा करता हूँ ; कि मेरे पूजा करने का अब वक्त हुआ है।

यह सुनके, वह तो गया ; और जीमूतबाहन आगे

को जो बड़ा तो रोने की आवाज़ आने लगी। उसी आवाज़ की धुन पर चला चला वहां जो पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बुढ़िया दुख से व्याकुल हो रोती है। उसके पास जाके पूछा ऐ माता ! तू किस कारन रोती है। तब वह बोली कि संखचूड़(१) नाम नाग जो मेरा बेटा है, तिसकी आज बारी है। उसे गरुड़ आके खा जावेगा। इस दुख से मैं रोती हूं। इनने कहा हे माता ! मत रो ; तेरे पुत्र के बदले मैं अपना प्राण दूंगा। बुढ़िया बोली बेटा ! ऐसा मत कीजियो। तूही मेरा संखचूड़ है।

यह कहती थी, कि इतने में संखचूड़ भी आन पहुंचा। और उसने सुनके कहा ऐ महाराज ! मुझ से दरिद्री बज्रत से पैदा होते हैं, और मरते हैं। पर आप से धर्मात्मा दयावन्त संसार में घड़ी घड़ी पैदा नहीं होते। इससे आप मेरे पलटे अपना जी न दीजिये। क्योंकि आप के जीते रहने से लाखों आदमियों का उपकार होगा। और मेरा जीना मरना दोनों बराबर हैं। तब जीमूतबाहन बोला कि यह सत पुरुषों का धरम नहीं है जो मुह से कहके न करें। तू जहां से आया है वहीं को जा।

यह सुनके, संखचूड़ तो देवी के दर्शन को गया। और आकाश से गरुड़ उतरा। इतने में राजकुमार देखता क्या है, पांव तो उसके चार चार बांस बराबर हैं, और ताड़ सी लंबी चौंच, पहाड़ के समान पेट, फाटक की मानंद आंखें, और घटा से पर ; एका एकी चौंच पसार

राजपुत्र पर दौड़ा. पहले तो राजपुत्र ने अपने तई बचाया. पर दूसरी बेर वह चौंच में रख इसको ले उड़ा और चक्कर मारने लगा. इतने में एक बाजूबंद, कि उसके नग पर राजा का नाम खुदा ऊआ था, वह खुलकर लोढ़भरा राजकन्या के सनमुख गिरा. वह उसको देख कर मुर्छा खा गिर पड़ी.

जब, एक घड़ी के बअद, चेती तो उसने सब वृत्तान्त अपने माता पिता से कहला मेजा. वे यह विपता सुनकर आये, गहना रुधिर भरा देख रोये. और तीनों आदमी दूँदने को निकले, कि रस्ते में इन्हें संखचूड़ भी मिला, और उनसे बढ़कर अकेला वहां गया, जहां राजकुमार को देखा था; और पुकार पुकार कहने लगा ऐ गरुड़! छोड़ दे छोड़ दे. यह तेरा भक्ष नहीं है. संखचूड़ मेरा नाम है. मैं तेरा भक्ष हूं.

यह सुनके गरुड़ घबराकर गिरा, और अपने जी में सोचा कि ब्राह्मण या क्षत्री मैं ने खाया. यह क्या किया. फिर इस राजपुत्र से कहने लगा ऐ पुरुष! सच कह, किस लिये अपना जी देता है? राजकुमार बोला ऐ गरुड़! वृक्ष छाया करते हैं औरों के ऊपर, और आप धूपमें बैठे फूलते फलते हैं पराए वास्ते. अच्छे पुरुषों का और वृक्षों का यही धरम है. जो यह देह गैर के काम न आवे तो इस शरीर से क्या प्रयोजन है. मसल मशहूर है कि जों जों चंदन को घिसते हैं, त्यों त्यों दूनी दूनी सुगंध देता है. और नों जों कील कील, काट काट,

टुकड़े टुकड़े करते हैं, त्यों त्यों ईख अधिक अधिक खाद देता है. जों जों कंचन को जलाते हैं, त्यों त्यों अति सुन्दर होता जाता है. उत्तम लोग जो हैं सो प्राण जाने से भी अपना सुभाव नहीं छोड़ते. उन्हें किसी ने भला कहा तो क्या, और बुरा कहा तो क्या. दौलत रही तो क्या, जो न रही तो क्या. अभी मरे तो क्या, और बअद मुहत के मरे तो क्या. जो मनुष न्याय की रीत से चलते हैं, कुछ द्रो, और राह पर पांव नहीं रखते. क्या ऊआ जो मोटे ऊए, या दुबले. गरज जिस के शरीर से उप कार नहो, उसका जीना निर्फल है. और बिराने अर्थ जिन का जीव है उन्हां का जीना सुफल है. यों तो कुत्ता कौवा भी अपना जी पालता है. जो ब्राह्मण, गौ, मिच, स्त्री की खातिर बल्कि बेगाने वास्ते जी देते हैं सो निश्चय सदा बैकुंठ बास करते हैं.

गरुड़ बोला जग में सब अपनी जान की रक्षा करते हैं ; और अपना जी दे दूसरों के जी को बचानेवाले संसार में बिरलेही होते हैं. यह कह गरुड़ बोला बर मांग. मैं तेरे साहस पर संतुष्ट ऊआ. यह सुनके जीमूत-बाहन ने कहा हे देव ! जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न ऊए द्रो, तो अब नागों को न खाओ ; और जो खाये हैं उन्हें जिला दो. यह सुन गरुड़ ने, पाताल से अमृत लाकर, सापों के छाड़ों पर छिड़का कि फिर वे जी उठे. और इस से कहा ऐ जीमूतबाहन ! मेरे प्रसाद से तेरा गया ऊआ राज फिर तुझे मिलेगा.

यह बर दे गरुड़ अपने स्थान पर गया; और संख चूड़ भी अपने धाम को. और जीमूतबाहन भी वहां से चला, कि राह में उसका सुसरा और सास और स्त्री मिली. फिर उन समेत अपने बाप पास आया. जब यह अहवाल सुना तो उसके चचा और चचेरे भाई बल्कि सारे कुटुंब के लोग मिलने को आये, और पाँवों पड़ इन्हें ले जा राज पर बिठाया.

द्वितीय कथा कह बैताल ने पूछा ऐ राजा ! इन में से सत किसका अधिक ऊँचा ? राजा बीर विक्रमाजीत बोला संखचूड़ का. बैताल ने कहा किस तरह. राजा ने कहा गया ऊँचा संखचूड़ फिर जीव देने को आया और गरुड़ के खाने से इसे बचाया. बैताल बोला कि जिसने पराये लिये अपनी जान दी, उसका सत क्यों न अधिक ऊँचा. राजा ने कहा जीमूतबाहन जात का चची है. उसे जी देने का अभ्यास हो रहा है. इससे उसे जान देने की कुछ कठिन न मन्त्रलूम दी. यह सुन बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका. और राजा वहां जा उसे बांध कांधे पर रख ले चला.

सोलहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा बीर विक्रमाजीत ! चंद्रशेखर नाम एक नगर है. कि वहां का रहनेवाला रतनदत्त(१)

(१) रत्नदत्त.

सेठ था. उस के एक बेटी थी. उसका नाम उन्मादिनी था. जब वह जोबनवती हुई तब उसके बाप ने वहां के राजा से जाकर कहा महाराज ! मेरे घर में एक कन्या है. जो आप को उसकी चाह हों, तो लीजिये ; नहीं मैं और किसी को दूं.

यह सुन राजा ने दो तीन प्राचीन दासों को बुलाकर कहा इस सेठ की पुत्रीके लक्षण आके देख आओ. वे राजा की आज्ञा से सेठ के घर आये ; और उस लड़की का रूप देख सभी मोहित हुए. ऊँच ऐसा गोया अंधेरे घर का उजाला, आँखें सृग की सी, चोटी नागिन सी, भवें कमान सी, नाक कीरकी सी, बत्तीसी मोती की सी लड़ी, हँठ कंदूरी की मानंद, गला कपोतका सा, कमर चीते की सी, हाथ पाँव कोमल कमल से ; चंद्रमुखी, चंपाबरनी, हंस-गवनी, कोकिल बैनी ; जिसके रूप को देख इंद्र की अश्वरा भी लजाय.

इस प्रकार की सुन्दरी सब सुलक्षणभरी देख, उन्हें ने आपस में बिचार किया, ऐसी जो नारी राजा के घर में जायगी, तो राजा इसके अधीन होयगा, और राज-काज की चिन्ता कुछ न करेगा. इसे बिहतर यह है, कि राजा से कहिये वह कुलक्षणी है, आप के योग नहीं. यह बिचार कर, वहां से राजा के पास आकर, उन्हें ने यह निवेदन किया महाराज ! उस कन्या को हमने देखा ; वह आप के लायक नहीं. यह सुनके राजा ने सेठ से कहा मैं ब्याह न करूंगा. फिर सेठ ने अपने घर आ, क्या काम

किया कि बलभद्र जो राजा का सेनापती था, उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया. वह उसके घर में रहने लगी.

एक दिन का जिक्र है, कि राजा की सवारी उस राह से निकली. और वह भी उस समै सिंगार किये अपने कोठे पर खड़ी थी. इत्तिफाकन, राजा की और उसकी चार नजरें ऊई. राजा अपने मन में कहने लगा यह देवकन्या है, या अपहरा है, या नरकन्या है. गरज, उसका रूप देख मोहित हो गया ; और वहां से निपट बेकरार हो, अपने मन्दिर को आया. उसका मुंह देख द्वारपाल बोला महाराज ! आप के शरीर में क्या बिथा है ? राजा ने कहा आज मैं ने आते ऊए बाट में एक कोठे पर सुन्दर स्त्री देखी है. मैं नहीं जानता हूं, कि वह हूँ, या परी, या इन्सान है ; कि उसके रूप ने एक बारगी मेरा मन मोह लिया. इससे बेकल हूं.

यह सुनके, दरबान ने अर्ज की महाराज ! उसी सेठ की लड़की है. जो आप का सेनापती बलभद्र है, वह उसे ब्याह लाया है. राजा ने कहा मैं ने जिन लोगों की लक्षण देखने भेजा था, उन्हें ने हम से कल किया. यह कह राजा ने चौबदार को फरमाया, उन्हें जल्दी ले आवे. राजा की यह आज्ञा पा, चौबदार उन्हें बुला लाया. गरज, जब वे राजा के सममुख आवे तो राजा ने कहा मैं ने जिस लिये तुन्हें भेजा था, और जो मेरी इच्छा थी, सो तुम ने न की. बल्कि अपने जी से एक

बात झूठी बनाकर मुझे उत्तर दिया. और आज मैंने अपनी आंखों से उसे देखा. वह ऐसी सुन्दर नारी सब गुण पूरी है, कि इस समै उस सी मिलनी कठिन है.

यह सुनके उन्हें ने कहा महाराज ! जो आप फरमाते हैं सो सच है. पर हम ने उसे कुलक्षणी जिस वास्ते ज़ंजूर में अर्ज किया था सो वह मुद्दआ सुनिये. आपस में हम ने यह बिचारा, ऐसी सुन्दर नारी जो महाराज के घर में जायगी तो महाराज देखतेही उसके बस देंगे, और राजकाज सब छोड़ देंगे तो राज भंग होगा. इस भय से हम ने ऐसा बनाकर कहा था.

यह सुनके राजा ने उन से तो कहा कि तुम सच कहते हो. पर उसकी याद में राजा को निपट बेचैनी थी. और सब लोगों पर राजा की बेकरारी जाहिर थी; कि इतने में बलभद्र भी आ पड़ंचा. और उन्ने हाथ जोड़ राजा के सामने खड़े हो कर अर्ज की है पृथ्वीनाथ ! मैं आप का दास, वह आप की दासी ; और उसके हेत आप इतना कष्ट पावें. इस से महाराज आज्ञा दीजिये कि वह हाजिर हो. यह बात सुन राजा निहायत क्रोध करके बोला बिरानी स्त्री के पास जाना बड़ा अधर्म है. यह बात क्या तू ने मुझ से कही ? क्या मैं अधर्मी हूं जो अधर्म करूं ? बिरानी स्त्री माता की समान है. और बिरानी धन माटी बराबर. सुनो भाई ! जैसा अपना जी आदमी समझे ; वैसा ही सब का जी समझे. फिर बलभद्र बोला वह मेरी दासी है. जब मैं ने आप को दी, फिर बिगानी

स्त्री क्योंकर ऊई. राजा ने कहा जिस काम के करने से संसार में कलंक लगे, सो काम मैं न करूंगा. फिर सेनापती ने अर्ज की महाराज ! उसे मैं घर से निकाल, और जगह रख, बेसवा कर आप के पास लाऊंगा. तब राजा ने कहा जो तू सती नारी को बेखा करेगा तो मैं तुम्हें बड़ा दंड दूंगा.

यह कह राजा उसकी याद में चिन्ता करके दस दिन में मर गया. फिर बलभद्र सेनापती ने अपने गुरु से जाकर पूछा मेरा स्वामी उन्मादिनी के कारन मुआ. अब मुझे क्या करना उचित है, सो आज्ञा कीजिये. उसने कहा सेवक का धर्म यह है, स्वामी के पीछे अपना भी जी दे. यह सुनके बखशी वहां गया, जहां राजा के तई जलाने को ले गये थे. जितनी देर में राजा की चिता तैयार ऊई, उसने भी स्नान पूजा से फरागत की. और जब चिता में आग दी, तब यह भी चिता के पास गया; और सूरज के सान्धने हाथ जोड़ कर कहने लगा ऐ सूरज(१) देवता ! मैं मन, बच, कर्म करके यही कामना मांगता हूं कि जन्म जन्म इसी स्वामी को पाऊं और तेरा गुन गाऊं. इतना कह, दंडवत कर, आग में कूद पड़ा.

यह खबर सुन उन्मादिनी अपने गुरु के पास गई; और उससे सब कह के पूछा महाराज ! स्त्री का धर्म क्या है? उस ने कहा माता पिता ने जिस के तई अपनी कन्या दी उसी की सेवा करने से वह कुलवन्ती कहलाती है.

और धर्मशास्त्र में ऐसा लिखता है कि जो नारी अपने स्वामी के जीते तप बरत करती है, वह अपने स्वामी की उमर कम करती है, और अंतकाल को नकर में पड़ती है। पर उत्तम यह है, कैसा ही स्वामी हीन हो, उसी की सेवा करने से इस की मुक्ति होती है। और जो नारी श्मशान में सती होने की कामना कर जितने पांव ज़मीन पर रखती है, उतने अश्वमेध यज्ञ करने का फल होता है ; इस में कुछ संदेह नहीं। और सती होने के समान नारी का कोई धर्म नहीं। यह सुन, दंडवत कर, अपने घर को आई ; और स्नान ध्यान कर, बज्रत सा दान ब्राह्मणों को दे, चिता पास जा, एक परिक्रमा कर बोली कि ऐ नाथ ! मैं तेरी दासी जन्म जन्म हूं। इतना कह, यह भी आग में जा बैठी और जल गई।

इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा ! इन तीनों में किस का सत अधिक ऊँचा ? राजा बीर विक्रमाजीत ने कहा उस राजा का। बैताल ने कहा किस तरह। राजा बोला सेनापती की दी ऊँई स्त्री को छोड़ा, और उसी के वास्ते जान दी ; पर धर्म रक्खा। स्वामी के लिये सेवक को जी देना उचित है। और पतिके लिये स्त्री को सती होना लाजिम है। इस कारण राजा का सत अधिक ऊँचा। बैताल इतना सुन उसी तरवर में जा लटका। राजा भी, पीछे पीछे जा, फिर उसे बांध कांधे पर रख ले चला।

सतरहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! उज्जैन(१) नगरी का महा-सैन(२) नाम राजा था. और वहां का बासी देवशर्मा ब्राह्मण. जिस के बेटे का नाम गुणाकर. वह बड़ा ज्वारी ऊँचा ; यहाँ तलक, कि जो कुछ उस ब्राह्मण का धन था सो जूए में हार दिया. तब सारे कुनबे के लोगों ने गुणाकर को घर से निकाल दिया. और उस से कुछ बन न आया. लाचार होकर, वहाँ से चला तो कितने दिनों में एक शहर में आया. वहाँ देखता क्या है कि एक योगी धूनी लगाये ऊँए बैठा है. उसे दंडवत कर, यह भी वहाँ बैठ गया. योगी ने इस से पूछा तू कुछ खायगा? इस ने कहा महाराज ! देगे तो क्यों न खाऊंगा. योगी ने एक आदमी की खोपरी में खाना भरके इसे ला दिया. इस ने देखकर कहा इस कपाल का अन्न मैं न खाऊंगा.

जब इन्ने भोजन न किया, तब योगी ने ऐसा मंत्र पढ़ा कि एक यक्षनी हाथ जोड़ आनके हाज़िर ऊँई ; और बोली महाराज ! जो आज्ञा हो सो करूं. योगी ने कहा इस ब्राह्मण को अच्छा भोजन दे. इतना सुनके, उस ने एक अच्छा सा मंदिर बना, उस में सब सुख के सामान रखके, इसे यहाँ से अपने साथ ले गई. और एक चौकी

(१) उज्जयिनी. (२) महासेन.

पर बैठा, भांति भांति के बिंजन और पकवान थाल भर भर, उस के रूबरू रखे. उस ने मन मानता जो भाया सो खाया. और इस के बअद पानदान उस के सन्मुख रख दिया. और केसर चंदन गुलाब में घिसकर उसके बदन में लगाया. फिर अच्छे बस्त्र सुगंधों से बासकर पहना, फूलों की माला गले में डाल, वहां से पलंग पर ला बिठाया. कि इतने में सांभ ऊई. और यह भी अपनी तैयारी कर सेज पर जा बैठी. और उस ब्राह्मण ने सारी रैन सुख चैन से काटी.

जब भोर ऊई, वह यत्ननी अपने स्थान पर गई. और इस ने योगी के पास आनकर कहा कि स्वामी ! वह तो चली गई. अब मैं क्या करूं. योगी बोला वह बिद्या के बल से आई थी. और जिसे बिद्या आती है उस के पास रहती है. इसने कहा महाराज ! यह बिद्या मुझे दो तो मैं साधूं. तब योगी ने एक मंच उसको दिया ; और कहा कि इस मंच को चालीस दिन, आधी रात के समें जल में बैठ, एक चित होके साध. इसी तरह से यह साधने को जाया करता ; और अनेक अनेक तरह के भय नजर आते. पर यह किसू से न डरता. जब कि वह मुहत हो चुकी, तो इसने योगी से आकर कहा कि महाराज ! जितने दिन आप ने कहे थे मैं साध आया. उस ने कहा कि इतने दिन अब आग में बैठकर साध. इस ने कहा महाराज ! एक बेर अपने कुटुब से मिल आज फिर आके साधूंगा.

यह योगी से कह बिदा हो अपने घर को गया। और कुनबे के लोगों ने इसे जो देखा तो गले लगा लगा रोने लगे। और इस के बाप ने कहा ऐ गुणाकर ! इतने दिनों तू कहाँ था ; और किस वास्ते घर को बिसारा. ऐ पुत्र ! ऐसे कहा है जो पतिव्रता स्त्री को छोड़के जुदा रहता है, और जवान नारी को पीठ देता है ; या जो जिसे चाहता है वह उसे नहीं चाहता वह चंडाल के समान होता है. और ऐसे कहा है, गृहस्तीधर्म बराबर कोई धर्म नहीं ; और घरवाली की बराबर कोई संसार में सुख देनेवाली नहीं. और जो माता पिता को निंदा करते हैं, सो अधम नर हैं ; और उनकी गति मुक्ति कभी नहीं होती ; ऐसा ब्रह्मा ने कहा है.

तब गुणाकर बोला कि यह शरीर रक्त और मांसका बना हुआ है ; सो कीड़ोंकी खान है. और सुभाव इसका यह है, कि एक रोज़ इसकी खबर न लीजे तो दुर्गंध आती है. जो ऐसे शरीर से प्रीति करते हैं, सो मूर्ख हैं. और जो इसे हित नहीं करते, वे पंडित हैं. और इस शरीर का यही धर्म है कि बार बार जनम लेता है और मिटता है. ऐसे शरीर का क्या भरोसा कीजे. इसे बड़तेरा पवित्र कीजे, पर यह पवित्र नहीं होता. जैसे मलका भरा घड़ा, ऊपर के धोने से, पाक नहीं होता ; और कोयले को कोई बहुतेरा धोवे पर वह धौला नहीं होता. और जिस शरीर में मल के सोत सदा बहा करें, वह किस तरह से शुद्ध हो. इतना कह फिर बोला कि किसकी मा, किस

का बाप, किस की जोरू, किस का भाई. इस संसार की यही रीत है कि कितने आते हैं और कितने जाते हैं. जो यज्ञ और होम के करनेवाले हैं, सो अग्नि को ईश्वर जानते हैं. और जो कम अकल हैं सो प्रतिमा कर भगवान को मानते हैं. और योगी लोग अपने घट में ही हरि जानते हैं. ऐसे गृहस्ती धर्म को मैं न करूंगा; बल्कि योगाभ्यास करूंगा.

इतना कह, उसने, घर से बिदा ले, योगी के पास आ, अग्नि में बैठ मंत्र साधा. पर यक्षनी न आई. तब योगी के पास गया. और योगी ने उस से कहा कि बिद्या तुझे न आई? फिर इन्ने कहा हां महाराज! न आई.

इतना किस्सः कह, बैताल बोला कि ऐ राजा! कहो, किस कारन उसे बिद्या न आई? राजा बोला कि वह साधक दुचिता ऊआ, इस लिये न आई. और ऐसे कहा है कि एकचित होने से मंत्र सिद्ध होता है; और दुचित होने से नहीं होता. और ऐसे भी कहा है कि जो दान के हीन हैं तिन की कीर्ति नहीं होती; और जो सत से हीन हैं उन्हें लाज नहीं; जो न्याय से हीन हैं तिन्हें लक्ष्मी नहीं मिलती; और जो ध्यान के हीन हैं उन्हें भगवान नहीं मिलता.

यह सुन बैताल ने कहा कि जो साधक मंत्र सिद्ध करने के लिये आग में बैठा वह किस तरह दुचिता ऊआ? राजा ने कहा, कि मंत्र साधने की बिरियां, जब वह अपने कुटुंब से मिलने गया उस समैं योगी ने क्रोध कर अपने मन में कहा

कि ऐसे दुदिले साधक को मैं ने बिद्या क्यों सिखाई. इस लिये उसे बिद्या न आई. और ऐसे कहा है कि मनुष कितनाही पराक्रम करे, पर कर्म उस के साथ रहता है; और कितनाही काम अपनी बुद्धि से करे, पर कर्म का लिखाही मिलता है. यह सुनकर, बैताल फिर उसी दरखत पर जा लटका. और राजा भी, उसके पीछेही जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

अठारहवीं कहानी.

बैताल बोला कि ऐ राजा ! कुबलपुर(१) नाम एक नगर. वहां के राजा का नाम सुदत्ता.(२) और उस नगर में धनात्ता(३) नाम एक सेठ भी रहता था. उस की पुत्री का नाम धनवती था. छोटी उमर में उसकी शादी एक गौरीदत्त नाम बनिये से कर दी. कितने दिनों के पीछे एक लड़की उस के ऊई. नाम उस का मोहिनी(४) रक्खा. जब वह कई एक बरस की ऊई, तब उस का बाप मर गया. और उस बनिये के भाई बंदों ने उस का सबस खोस लिया. वह लाचार हो, अपनी बेटी का हाथ पकड़, अधेरी रात के समै, उस घर से निकल, अपने मा बाप के घर को चली.

(१) कुवलपुर. (२) सुदत्त. (३) धनात्त. (४) मोहिनी.

थोड़ी एक दूर जाकर, राह भूल एक मरघट में जा निकली. वहां एक चोर सूली पर टंगा हुआ था, अचानक इस का हाथ उस के पांव में लगा. यह बोला कि इस समैं मुझे किन्ने दुख दिया. तब यह बोली मैं ने जानकर तुझे दुख नहीं दिया. मेरी तकसीर मुआफ़ कर. उस ने कहा दुख और सुख कोई किसू को नहीं देता. जैसा बिधाता कर्म में लिख देता है, वैसाही भुगतता है. और जो मनुष कहते हैं यह काम हम ने किया, सो निपट निरबुद्धी हैं. क्योंकि मनुष करम के तागे में बंधे हुए हैं. वह जहां जहां चाहता है, तहां तहां खेंच ले जाता है. बिधाता की बात कुछ समझी नहीं जाती. क्योंकि, मनुष अपने मन में कुछ बिचारते हैं; और वह कुछ और कर देता है.

यह सुन धनवती बोली ऐ पुरुष! तू कौन है? उस ने कहा मैं चोर हूं. तीसरा दिन सूली पर मुझ को ऊँचा है; और जान नहीं निकलती. यह बोली किस कारन. उस ने कहा कि बिन व्याह्रा हूं. अगर तू अपनी कन्या मुझे व्याह दे, तो करोड़ अशरफी दूं. मशहूर है कि पाप का मूल लोभ; और व्याध का मूल रस; और दुख का मूल नेह. जो इन तीनों को छोड़े, सो सुख से रहे. पर ये हर किसू से छूट नहीं सकते. अंतकाल लालच के मारे, धनवती ने कन्या देने की इच्छा की. और पूछा मैं यह चाहती हूं, कि तेरे पुत्र हो. पर किस तरह से होगा. उसने कहा कि यह जिस समैं जयान होगी, उस ऐयाम में

एक सुन्दर ब्राह्मण को बुलाकर, पांच सौ मुहर दे, उसके पास रखियो। इस तरह से इस के बेटा होगा।

यह सुनके धनवती ने लड़की को सूली के गिर्द चार फेरे दे शादी कर दी। तब चार ने उससे कहा कि पूरब तरफ, इंदारे कुए के पास एक बड़ का दरखत है। उसके नीचे वे अशरफियां गड़ी ऊई हैं। तू जाके ले। यह कहकर उसकी जान निकल गई। वह उधर को चली। और वहां पहुंचकर, उसमें से थोड़ी अशरफियां ले, अपने मा बाप के घर आई। उन से यह वृत्तान्त कह, उनको अपने साथ स्वामी के देश में लाई। फिर एक बड़ी सी हवेली बना उसमें रहने लगी; और वह लड़की दिन बदिन बढ़ने।

जब वह जोवनवती ऊई, एक दिन सखी को साथ ले, कोठे पर खड़ी, बाट निहार रही थी; कि इसमें एक जवान ब्राह्मण उस गैल में आ निकला। और यह उसे देख काम के बस हो सखी से बोली कि ऐ आली! इस पुरुष को तू मेरी मा के पास ले आ। यह सुन वह ब्राह्मण को उस की मा के पास ले आई। वह उसे देखकर बोली कि हे ब्राह्मण! मेरी बेटी जवान है। जो तू इस के पास रहेगा, तो मैं पुत्र के निमित्त सौ अशरफी तुझे दूंगी। यह सुनके उस ने कहा मैं रहूंगा।

ये बातें करते थे कि इतने में सांभ ऊई। उसे इच्छा भोजन दिया; और उसने ब्यालू किया। मसल मशहर है कि भोग आठ प्रकार का है; एक सुगंध, दूसरे वनिता, तीसरे वस्त्र, चौथे गीत, पांचवें पान, छठे भोजन, सातवें सेज,

आठवें आभूषण. ये सब वहाँ मौजूद थे. गरज, जब पहर रात आई, उस ने रंग महल में जा उस के साथ सारी रैन आनंद से काटी. जब भोर ऊई, वह अपने घर गया. और यह उठके अपनी सखियों के पास आई. तब उन में से एक ने पूछा कि कहे रात को दोस्त के साथ क्या क्या खुशियां कीं. उस ने कहा जिस वक्त कि मैं उस के पास जा बैठी थी, मेरे जी में एक धड़का सा मञ्जलूम ऊआ. जब कि उस ने मुसकुराके मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं उस के बस हो गई; और मुझे कुछ खबर न रही कि क्या ऊआ. और ऐसे कहा है कि एक नामी, दूसरे सूरमा, तीसरे चतुर, चौथे सरदार, पांचवें सखी, छठे गुनवान, सातवें स्त्रीरक्षक हो; ऐसे पुरुष को नारी, इस जनम में तो क्या, उस जनम में भी नहीं भूलती.

हासिल यह है, कि उसी रात इसे गर्भ रहा. जब कि दिन पूरे ऊए, एक लड़का पैदा ऊआ. छठी की रात को उस की मा ने सुपने में देखा कि एक योगी, जिस के सिर पर जटा, माथे पर चांद, उज्जल भभूत मले, धौला जनेऊ पहने, सेत कंवल के आसन पर बैठा, सफेद सांपों की सेली पहने, मुण्डमाल गले में डाले, एक हाथ में खप्पर दूसरे में चिश्तूल लिये ऊए, महा भयावनी सूरत बनाये, उस के सोँहीं आ कहने लगा कि कल आधी रात के समय, एक पिटारे में हजार मुहर का तोड़ा और इस लड़के को बंदकर राजद्वार पर रख आ.

यह देखतेही उस की आंख खुल गई. और फजर

ऊँए. अपनी मा के आगे इस ने सब वृत्तान्त कहा. यह सुनके, दूसरे दिन, उस की मा उसी तरह पिटारे में उस लड़के को बंदकर राजा के दरवाजे पर रख आई. और इधर राजा ने ख़ाब देखा कि दस भुजा, पांच सिर, हर एक सिर में तीन तीन आँखें, और हर एक सिर पर एक एक चांद, दांत बड़े बड़े, विशूल हाथ में लिये, अति डरावनी सूरत इस के साम्हने आनके बोला कि ऐ राजा ! तेरे द्वार पर एक पिटारा रक्खा है. उस में जो लड़का है, उसे तू ले आ. वही तेरा राज रक्खेगा.

यह सुनतेही, राजा की आंख खुल गई. तब रानी से सब अहवाल कहा. फिर वहां से उठ, दरवाजे पर आ, देखा कि पिटारा धरा है. जोहीं पिटारे को खोलकर देखा तो उस में एक लड़का और हजार अशरफी का तोड़ा है. उस लड़के को आप उठा लिया ; और द्वारपाल से कहा कि इस तोड़े को उठा ला. फिर महल में जा, लड़के को रानी की गोद में दिया.

इतने में प्रभात हुआ. राजा ने बाहर आ पंडितों से और ज्योतिषियों से बुलाके पूछा कि कहे इस लड़के में राजलक्षण क्या है ? तब उन पंडितों में से एक सामुद्रिक जान्नेवाला ब्राह्मण बोला कि महाराज ! इस लड़के में तीन लक्षण तो प्रत्यक्ष दीसते हैं ; एक तो बड़ी छाती, दूसरे जंघा ललाट, तीसरे बड़ा चिहरा. सिवाय इन के, महाराज ! बत्तीस लक्षण पुरुष के जो कहे हैं सो सब इस में हैं. इस से निसंदेह रहिये यह राज करेगा. यह सुन,

राजाने प्रसन्न हो, मोतियों का हार, अपने गले से उतार, उस ब्राह्मण को दिया; और सब ब्राह्मणों को बज्रत सा दान दे, ऊकम किया कि इस लड़के का नाम रक्खो. तब पंडितों ने कहा महाराज! आप गठजोड़ा बांध बैठिये. महारानी गोद में लड़का ले बैठें. और सब मंगली लोगों को बुलाकर मंगलाचार करवाओ. तब हम शास्त्र की रीत से नाम करन करें.

यह सुन राजाने दीवान को आज्ञा दी कि जो ये कहे सो करो. दीवान ने लड़के के हेने की, उसी वक्त, नगर में डोंडी खुशी की फिरवा दी. यह सुनके सब मंगला-मुखी हाजिर हुए. और घर घर से बधाई आने लगी. राजा के मंदिर में आनंद के बाजन बाजने लगे, और मंगलाचार हेने. फिर राजा रानी गोद में लड़के को ले चौक में आ बैठे. और ब्राह्मण बेद पढ़ने लगे. उन ब्राह्मणों में से एक ज्योतिषी ने, शुभ घड़ी, लगन, मङ्करत बिचार, उस लड़के का नाम हरदत्त रक्खा. फिर वह दिन दिन बढ़ने लगा. निदान सो, नौ बरस की उमर में, छः शास्त्र और चौदह बिद्या पढ़कर पंडित हुआ. इस में भगवान का चाहा यों हुआ कि उस के मा बाप मर गये. वह राजगद्दी पर बैठा, और धर्म राज करने लगा.

कई एक बरष के पीछे, एक दिन वह राजा अपने मन में चिंता करने लगा, कि मैं ने मा बाप के यहां जनम लेके उन के निमित्त क्या किया. मसल है, कि जो दया-वंत होते हैं, वे सब पर दया करते हैं; वेही ज्ञानी हैं;

और उन्हीं को बैकुण्ठ(१) होता है. और जिन का मन शुद्ध नहीं, तिन का दान, पूजा, तप, तीर्थ करना, शास्त्र सुन्ना सब वृथा है. और जो अज्ञाहीन डिंभ समेत आहु करतें हैं, तिन का निर्फल होता है ; और पित्र उनके निरास जातें हैं. यह बात राजा ने सोच समझ कर बिचारी कि अब पितृकर्म किया चाहिये. फिर राजा हरदत्त गया में गया ; और जाकर अपने पित्रों के नाम ले फलगू(२) नदी के کنارें पिंड देने लगा, कि उस नदी में से तीनों के हाथ निकले. यह देख अपने जी में घबराया, कि मैं किस के हाथ में दूं ; और किस के हाथ में न दूं.

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि ऐ राजा बिक्रम ! उन तीनों में से किसे पिंड देना उचित था ? तब राजा ने कहा चार को. फिर बैताल बोला किस कारन. तब कहा उस ने, कि ब्राह्मण का बीज तो मेल लिया गया. और राजा ने हजार अशरफी ले के पाला. इसवास्ती उन दोनों को पिंड का अधिकार न हुआ. इतनी बात सुन, फिर बैताल उसी दरखत पर जा टंगा और राजा उसे वहां से बांधकर ले चला.

उन्नीसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! चित्रकूट नाम एक नगर है. तहां का रूपदत्त नाम राजा. एक दिन अकेला सवार

(१) वैकुण्ठ.

(२) फलगु.

हो शिकार को गया. सो भूला ऊँचा एक महाबन में जा निकला. वहाँ जाके देखता क्या है कि एक बड़ा सा तालाब है. उस में कंवल खिल रहे हैं; और भांति भांति के पंखी कलोल कर रहे हैं; तालाब के चारों ओर, वृक्षों की घनी घनी छांव में ठंडी ठंडी हवा सुगंधों के साथ आ रही है. यह भी धूप का तौसा ऊँचा था, घोड़े को एक दरखत से बांध, जीनपोश बिछाकर बैठ गया. घड़ी एक बीती थी, कि एक ऋषिकन्या अति सुन्दर जोवनवती वहाँ पुष्प लेने को आई. उसे फूल तोड़ते हुए देख, राजा अति काम के बस ऊँचा. जब वह फूल चूँट अपने स्थान को चली, तब राजा बोला कि यह तुम्हारा कैसा आचार है, कि हम तुम्हारे आश्रम में अतिथ आये; और तुम हमारी सेवा न करो.

यह सुनके वह फिर खड़ी ऊई. तब राजा ने कहा कि ऐसे कहते हैं, कि उत्तम बरन के घर जो नीच बरन भी अतिथ आवे, तो वह भी पूजनीय है. और चोर हो, या चंडाल शत्रु हो, या पित्रघातक; पर जो वह भी अपने घर आवे, तो उस की भी पूजा करनी उचित है. क्यों कि अतिथ सब का गुरु है. इस तरह से जब राजा ने कहा तब वह खड़ी ऊई. फिर तो दोनों आँखें लड़ाने लगे. इस में वह मुनि भी आ पड़ंचा. राजा ने उस तपसी को देख नमस्कार किया. और उन्ने अशीरवाद दिया कि चिरंजीव रहे.

इतना कह उस ने राजा से पूछा कि यहाँ किस कारन

आये हो? उस ने कहा महाराज ! शिकार करने आया हूँ. वह बोला कि किस लिये तू महापाप करता है? ऐसा कहा है कि एक जन पाप करता है, और अनेक जन उस के पाप का फल भुगतते हैं. राजा ने कहा कि महाराज ! मुझ पर कृपा करके धर्म अधर्म का विचार कहो. तब वह मुनि बोला सुनिये महाराज ! कि जो जीव हन जल खा बनवास करते हैं, तिन के मारने से बड़ा अधर्म होता है. और पशु, पंखी, मनुष के प्रतिपाल करने का बड़ा धर्म है. और ऐसा कहा है, कि जो भयमान और सरन आये को निर्भय कर देते हैं, सो महादान का फल लेते हैं. और ऐसा कहा है कि क्षमा बराबर तप नहीं ; और सतोष समान सुख ; मित्रता तुल्य धन नहीं ; और दया सम धर्म. और जो नर अपने धर्म में सावधान हैं, और धन, गुण, विद्या, यश, प्रभुता या अभिमान नहीं करते ; और जो अपनी स्त्री से संतुष्ट हैं, और सत्यवादी हैं, सो अंतकाल मुक्ति गति पाते हैं. और जो जटाधारी वस्त्रहीन निरायुध को हनते हैं, वे लोग अंत समें नरक भोग करते हैं. और जो राजा रण्यत के दुखदाइयों को नहीं दंड देता, वह भी नरक भुगतता है. और जो राजपत्नी, या मित्र की स्त्री या कन्या, या आठ नो महीने की गर्भनी से भोग करते हैं, सो महानरक में पड़ते हैं ; ऐसा धर्म शास्त्र में कहा है.

यह सुन राजा ने कहा आज तक नादानी से जो पाप किया सो किया. फिर भगवान ने चाहा तो मैं न करूंगा.

राजा के इस कहने से मुनि ने प्रसन्न होके कहा कि जो तू बर मांगे, सो दूँ। मैं तुझ से बड़त संतुष्ट हुआ। तब राजा ने कहा कि महाराज ! जो तुम मुझ पर तुष्ट हुए, तो अपनी कन्या मुझे दे। यह सुन मुनि ने अपनी पुत्री राजा को गंधर्व विवाह की रीत से ब्याह दी। और आप अपने स्थान को गया। फिर राजा ऋषिकन्या को ले अपने नगर की तरफ चला ; रस्ते में करीब आधो दूर के सूरज अस्त हुआ ; और चंद्रमा उदै। तब राजा, एक दरखत घना सा देख, उस के नीचे उतर, घोड़ा उस की जड़ से बांध, जीनपोश बिछा, उस समेत सो रहा। फिर दो पहर रात के समै, एक ब्रह्मराक्षस ने आ, राजा को जगाकर कहा कि हे राजा ! मैं तेरी स्त्री को खाऊंगा। राजा ने कहा ऐसा मत कर ; जो तू मांगेगा सो मैं दूंगा। तब राक्षस ने कहा कि ऐ राजा ! जो तू सात बरस के ब्राह्मण के लड़के का सिर काटकर अपने हाथ से मुझे दे, तो मैं इसे न खाऊँ। राजा ने कहा ऐसेही मैं करूँगा। पर आज के सातवें दिन तू मेरे नगर में आइयो ; मैं तुझे दूँगा।

इसी तरह से, राजा को बचन बंद कर, राक्षस अपने स्थान को गया। और भोर हुए। राजा भी अपने महल में आ दाखिल हुआ। मंत्री ने सुनके बड़त सी शादी की, और आके भेट दी। और राजा ने, मंत्री से वह वृत्तांत कहकर, पूछा कि सातवें दिन राक्षस आवेगा। कहो उस का यत्न क्या करें। मंत्री ने कहा महाराज ! आप किसी बात की चिन्ता न कीजिए। भगवान सब भला करेगा।

इतना कह, मंची ने, सवा मन कंचन का एक पुतला बनवा, उस में जवाहिर जड़वा, एक छकड़ी पर रखवा, चौराहे में खड़ा करवाकर, उस के रखवालों से कहा कि जो कोई इस के देखने को आवे यही उसे कहो, कि जो ब्राह्मण अपने सात बरस के लड़के का राजा को सिर काटने दे, सो उसे ले. यह कहकर चला आया. फिर लोग जो उस के देखने को आते थे उस से चौकीदार यही कहते थे.

दो दिन तो योंहीं बीते. पर तीसरे दिन, उसी नगर का एक दुर्बल सा ब्राह्मण, कि जिस के तीन बेटे थे, वह यह बात सुन घर में आ, ब्राह्मणी से कहने लगा कि एक पुत्र अपना राजा को बलि के वास्ते दे, तो सवा मन सोने का पुतला जड़ाऊ घर में आवे. यह सुन ब्राह्मणी बोली कि छोटे लड़के को न दूंगी. ब्राह्मण ने कहा बड़े को मैं न दूंगा. यह बात सुन, मझले ने कहा कि पिता! मेरे तई दीजे. उस ने कहा अच्छा. फिर ब्राह्मण बोला कि संसार में धनही मूल है. और धनहीन को सुख कहाँ. और जो दरिद्री ऊँचा उस का संसार में आना दृथा है.

इतना कह, मझले लड़के को ले जा, चौकीदारों को दे, उस पुतले को अपने घर ले आया. और इधर उस लड़के को लोग मंची के पास ले आये. फिर जब सात दिन बीत गये, वह राक्षस भी आया. राजा ने चंदन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, पान, बस्त्र ले उस की पूजा की; और उस लड़के को बुला, खड़ा हाथ में ले बलि देने को खड़ा ऊँचा. इसमें वह लड़का, पहले हंसा, पीछे रोया.

इतने में राजा ने खड़्ग मारा, कि सिर जुदा हो गया। सच है, जो ज्ञानी कह गये हैं; स्त्री संसार में दुख की खान है, और बिनती का घर, साहस की गिरानेवाली, और मोह की करनेवाली, धर्म की हरनेवाली। ऐसी जो बिष की जड़ हो, उसे उत्तम किन्ने कहा है। और ऐसा कहा है कि आपदा के लिये धन रखिये; और धन देके स्त्री की रक्षा कीजे; और धन स्त्री देके अपने जी को बचाइये।

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि हे राजा ! मरने के समैं आदमी रोता है; तू इस की हकीकत बता, कि वह हंसा क्यों ? राजा ने कहा, यह बिचारके वह हंसा कि बालकपन में माता रक्षा करती है; और बड़े ऊँच से, पिता पालता है; समैं असमैं रण्यत की राजा सहाय करता है। संसार की यह रीत है। और मेरा यह हाल है कि माता पिता ने धन के लोभ से राजा को दिया; और यह खड़्ग लिये मारने को खड़ा है; और देवता को बल की इच्छा है। दया किसी को भी न आई। यह सुन, बैताल उसी पेड़ पर जा लटका। और राजा भी वहाँही झपटके पहुँचा; और उसे बांध, कांधे पर रख, ले चला।

बीसवीं कहानी ।

बैताल बोला कि हे राजा ! विशालपुर नाम एक नगर है। वहाँ के राजा का नाम विपुलेश्वर। उस के नगर में एक बनिया था। तिस का नाम अर्थदत्त। और उस की बेटी का

नाम अनंगमंजरी. शादी उसकी कंवलपुर(१) के मुन्नी नाम बनिये से कर दी थी. कितने एक दिनों पीछे वह बनिया समुद्र पार बनज को गया. और यहाँ जब वह जवान ऊई, तब एक दिन, अपने चौबारे पर खड़ी ऊई, रस्ते का तमाशा देखती थी; कि इस में एक बहानेटा, कमलाकर नाम, चला आता था. इन दोनों की चार नज़रे ऊई. और देखते ही मोहित हो गये.

फिर घड़ी एक के पीछे, सूरत संभाल, बहानेटा बिरह से व्याकुल हो अपने दोस्त के घर गया. और यहाँ यह भी, उसकी जुदाई की पीर से, निपट बेचैनी में थी; कि इतने में सखी ने आनके उठाया. पर इसे कुछ अपनी सुध न थी. फिर उसने गुलाब छिड़का, और खुशबोइयां सुंघाई; कि इसमें उसे होश आया; और बोली कि ऐ कामदेव! महादेव ने तुझे जलाकर भस्म किया, तिस पर भी तू अपनी खुटाई से नहीं चूकता. और बिन अपराध अबलाओं को आनके दुख देता है.

ये बातें कर रही थी, कि सांभ ऊई. और चांद नज़र आया. तब चांदनी की तरफ़ देखके बोली, कि हे चंद्रमा! हम सुनते थे, कि तुम में अमृत है; और किरनों की राह से अमृत बरसाते हो. सो आज मेरे पर तुम भी बिष बरसाने लगे. फिर सखी से कहा कि यहाँ से मुझे उठाकर ले चल, कि मैं चांदनी से जली मरती हूँ. तब वह उसे उठाकर चौबारे पर ले गई; और कहा, तुझे ऐसी बातें

कहते लाज नहीं आती. तद उन्ने कहा कि ऐ सखी ! मैं सब जानती हूं. पर मन्मथ ने मुझे मारके निलज्जी की. और मैं धीरज बज्जतेरा करती हूं ; पर बिरह की आग से जौं जौं जलती हूं, त्यों त्यों मुझे घर बिष सा नजर आता है. सखी बोली कि तू खातिरजमअ रख. मैं तेरा सब दुख दूर करूंगी.

इतना कह सखी अपने घर गई. और इन्ने अपने जीमें बिचारा कि इस शरीर को उस के कारन तजूं ; और फिर के जनम ले, उस से मिल सुख भोग करूं. यह कामना कर, गले में फांसी डाल, चाहे कि खैंचे, इतने में सखी आ पहुंची. और उस ने भट इस के गले से रस्सी निकालकर कहा, जीने से सब कुछ है ; मरने से नहीं. वह बोली कि ऐसे दुख पाने से मरना भला है. सखी ने कहा कि एक घड़ी सुसता, कि मैं उसे जाकर ले आती हूं.

इतना कह वहां गई, जहां कमलाकर था. फिर उसे छिपके देखा तो वह भी बिरह से व्याकुल हो रहा है. और उस का मिच गुलाब के पानी से चंदन घिस घिस उस के बदन में लगाता है. और केले के कोमल कोमल पातों से पवन कर रहा है. तिस पर भी बिरह की आग से बह घबराकर जला ही जला पुकारता है ; और मिच से कहता है कि ज़हर ला दे ; मैं अपने प्राण त्याग कर इस कष्ट से छूटूं. इस की यह अवस्था देख, उस ने अपने जी में कहा कैसा ही साहसी, पंडित, चतुर, विवेकी, धीर मनुष्य हो, पर कामदेव उसे एक क्षण में बिकल कर देता है.

इतना अपने मन में विचार, सखी ने उस से कहा ऐ कम-लाकर ! तेरे तई अनंगमंजरी ने कहा है कि तू आके मुझे जी दान दे. इन्ने कहा यह तो उन्ने मुझे जी दान दिया.

इतना कह उठ खड़ा ऊआ. और सखी इसे अपने साथ लिये ऊए, उस के पास गई. यह वहां जाके देखे तो वह मुई ऊई पड़ी है. फिर इन्ने भी एक आह कानअरः मारा कि उस के साथ इस का दम निकल गया. और जब सुबह ऊई, उस के घर के लोग इन दोनों को मरघट में ले गये ; और चिता चुनकर उन्हें रखके आग लगाई थी ; कि इस में उस का खाविंद भी परदेस से मरघट की राह आ निकला. तब लोगों के रोने की आवाज सुनकर यह वहां गया, तो देखता क्या है कि इस की स्त्री पर पुरुष के साथ जलती है. यह भी बिरह से ब्याकुल हो उसी आग में जल के मर गया. यह खबर नगर के लोग सुनके आपस में कहने लगे, कि ऐसा अचरज न आंखों देखा न कानों सुना.

इतनी कथा कह बैताल बोला कि ऐ राजा ! इन तीनों में से कौन सा अधिक कामी ऊआ ? राजा बोला कि उस का खाविंद अधिक कामी ऊआ. बैताल ने कहा किस कारण. राजा ने कहा जिन्ने, अपनी नारी को और के अर्थ मुई देख, क्रोध त्याग कर, उस के प्रेम में मगन हो जी दिया, यह अधिक कामी ऊआ. यह बात सुन, बैताल फिर उसी दरखत पर जा लटका. राजा भी वेांही जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

इक्कीसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! जयस्थल नाम नगर. वहां का वर्द्धमान नाम राजा. उस के नगर में बिष्णुस्वामी नाम ब्राह्मण. उस के चार बेटे; एक ज्वारी, दूसरा कसबीबाज, तिसरा छिनला, चौथा नास्तिक. एक दिन वह ब्राह्मण अपने बेटों को समझाने लगा, कि जो कोई जूआ खेलता है उस के घर में तस्वी नहीं रहती. यह सुन वह ज्वारी अपने जी में बज्जत दिक् हुआ. और फिर उन्ने कहा कि राजनीति में ऐसे लिखता है, कि ज्वारी के नाक कान काट, देस से निकाल दीजे, कि और लोग जूआ न खेलें. और ज्वारी के जोरु लड़कों को घर में होते भी घर में न जानिये. क्यों कि नहीं मञ्जलूम किस वक्त हार दे. और जो बेस्वा के चरित्रों पर मोहित होते हैं सो अपने जी को दुख बिसाते हैं. और कसबी के बस में हो सरबस अपना दे अंत को चोरी करते हैं. और ऐसा कहा है कि जो नारी आदमी के मन को एक घड़ी में मोह दे, ऐसी नारी से ज्ञानी दूर रहते हैं; और अज्ञानी उस से प्रीत कर अपना सत, शील, जश, आचार, बिचार, नेम, धर्म सब खोते हैं. और उस को अपने गुरु का उपदेस भला नहीं लगता. और ऐसा कहा है, कि जिस ने अपनी लाज खोई दूसरे को वह कब बेज़रमत करने से डरता है.

और मसल है, कि जो बिलाव अपने बच्चे को खाता है सो चूहे को कब छोड़ेगा. फिर कहने लगा कि जिन्होंने बालकपन में बिद्या न पढ़ी, और जवानी में काम से आतुर हो यौवन के गर्व में रहे; सो बृद्धकाल में पकताकर हिरस की आग में जलते हैं.

यह बात सुन, उन चारों ने आपस में बिचारकर कहा कि बिद्याहीन पुरुष के जीने से मरना भला है. इस से उत्तम यह है, कि बिदेस में जाकर बिद्या पढ़िये. यह बात आपस में ठान, वे एक और नगर में गये. और कितनी एक मुह्त के बन्द, पढ़के पंडित हो, अपने घर को चले. राह में देखते क्या है, कि एक कंजर मुए ऊए शेर की हड्डी, चमड़ा जुदाकर, गठड़ी बांध चाहे कि ले जाय; इस में उन्होंने आपस में कहा कि आओ अपनी अपनी बिद्या आजमावें. यह ठहरा, एक ने उसे बुलाकर कुछ दिया, और वह पोछ ले उसे बिदा किया. और रस्ते से कनारे हो, उस मोट को खोल, एक ने सारी हड्डियां जा बजा लगा, मंत्र पढ़ झींटा मारा, कि वे हाड़ लग गये. दूसरे ने इसी तरह उन हड्डियों पर मांस जमा दिया. तीसरे ने इसी भांति से मांस पर चाम बिठा दिया. चौथे ने इसी रीत से उसे जिला दिया. फिर वह उठते ही इन चारों को खा गया.

इतनी कथा कह वैताल बोला ऐ राजा ! उन चारों में कौन अधिक मूरख था ? राजा बिक्रम ने कहा, जिस ने उसे जिला दिया सोई बड़ा मूरख था. और ऐसा

कहा है कि बुद्धि बिना विद्या किस्म काम की नहीं. बल्कि विद्या से बुद्धि उत्तम है. और बुद्धिहीन इसी तरह मरते हैं, जैसे सिंह के जिलानेवाले मुए. यह बात सुन, बैताल उसी दरखत पर जा लटका. फिर राजा उसी तरह बांध कांधे पर रख ले चला.

बाईसवीं कहानी

बैताल बोला ऐ राजा! बिस्वपुर(१) नाम नगर. वहां का बिदग्ध नाम राजा. उस के नगर में नारायण नाम ब्राह्मण था. वह एक दिन अपने मन में चिन्ता करने लगा, कि मेरा शरीर बृद्ध हुआ. और मैं दूसरे की काया में पैठने की विद्या जानता हूं. इस से बिहतर यह है, कि इस पुरानी देह को छोड़, और किस्म जवान के शरीर में जाके भाग करूं. जब वह यह अपने जी में विचार कर चुका, और एक तरुन शरीर में पैठने लगा, तो पहले रोया, और पीके हंसा; फिर उस में पैठके अपने घर में आया. लेकिन इस के सारे कुटुंब के लोग उस के करतब से वाकिफ थे. फिर उनके आगे कहने लगा कि मैं अब योगी हुआ.

इतना कहके पढ़ने लगा आसा के सरोवर को तपस्या के तेज से सुखा, तिस में मन को रख, इंद्रियों को स्थिर करे, सो योगी चतुर कहावे. और यह गति संसार के

लोगों की है कि अंग गले, मुँह हिले, दाँत गिरें, बूढ़े हो लाठी ले फिरें, तौ भी दृष्टा नहीं मिटती. और इसी तरह से काल चला जाता है. दिन ऊँचा, रात ऊँई, महीना ऊँचा, बरस ऊँचा, बालक ऊँचा, बूढ़ा ऊँचा, और कुछ नहीं मअलूम कि मैं कौन हूँ, और लोग कौन हैं, और कौन किस लिये किसू का सेग करता है. एक आता है, एक जाता है, और अंत काल सब जी जानेवाले हैं; इनमें से एक न रहेगा. अनेक अनेक अंग हैं, और अनेक अनेक मन हैं, और अनेक अनेक मोह हैं, भांति भांति के पाखंड ब्रह्मा ने रचे हैं. पर बुद्धिमान इन से बच, आसा और दृष्टा को मार, सिर मुड़ा, हाथ में दंड कमंडल ले, काम क्रोध को मार, योगी हो, नंगे पाँव तीर्थ तीर्थ डोलते फिरते हैं, सो मोक्ष पदार्थ पाते हैं. और यह संसार सपने की तरह है. इस में किस की खुशी कीजिये, और किस का गम. और केले के गांभे की तरह संसार है. इस में सार कुछ नहीं. और धन, जोबन, बिद्या का जो गर्व करते हैं, सो अज्ञान हैं. और जो योगी हो, कमंडल हाथ में ले, बार बार भीख मांग, दूध, घी, चीनी से अपने शरीर को पुष्टकर, कामातुर हो, स्त्री से भोग करते हैं, सो अपना योग खोते हैं. इतना पढ़कर वह बोला कि अब मैं तीर्थ यात्रा करूंगा. यह बात सुन, उस के कुटुंब के लोग बहुत खुश हुए.

इतनी कहानी कह, बैताल बोला ऐ राजा ! किस कारन वह रोया, और किस कारन हंसा ? तब राजा ने कहा

कि बालकपन का मा का प्यार, और जवानी का सुख, याद कर, और इतने दिनों उस देह के रहने के मोह से रोया, और अपनी बिद्या सिद्ध करके, नई काया में पैठके खुशी से हंसा. यह बात सुन, बैताल उसी पेड़ पर जा लटका. फिर राजा उसी तरह से बांध कांधे पर रख ले चला.

तेईसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! धर्मपुर नाम नगर. वहां का धर्मज नाम राजा. उस के शहर में गोविंद नाम ब्राह्मण चारों बेद व्हेन शास्त्र का जाननेवाला था, और अपने धर्म कर्म से सावधान. और हरिदत्त, सोमदत्त, यज्ञदत्त, ब्रह्मदत्त उस के चार बेटे थे. बड़े पंडित, बड़े चतुर, और अपने बाप की आज्ञा में सदा रहते थे. कितने एक दिन पीछे, बड़ा बेटा उस का मर गया. और वह भी उस के दुख से मरने लगा.

तिस सभैं वहां के राजा का पुरोहित विष्णुशर्मा(१) आनकर उसे समझाने लगा कि यह मनुष जिस सभैं मा के गर्भ में आता है, पहले वहीँ दुख पाता है; दूसरे जवानी में काम के बस हो, प्रीतम के बियोग से ईजा सहता है; चौथे बूढ़ा हो, अपने शरीर के निरबल होने से, अजीयत

में पड़ता है. गरज, संसार में जन्म लेने से दुख बज्जत होता है और सुख थोड़ा. क्यों कि यह संसार दुख का मूल है. अगर कोई दरखत की फुनंग पर जा चढ़े, या पहाड़ की चोटी पर जा बैठे, या पानी में छिप रहे, या लोहे के पिंजरे में घुस रहे, पाताल में जा छिपे, ती भी काल नहीं छोड़ता. और पंडित, मूर्ख, धनवान, निर्धन, ज्ञानी, अज्ञानी, बलवान, निरबल कैसा ही कोई होवे पर यह सर्वभक्षी काल किसू को नहीं छोड़ता. तमाम सौ बरस की मनुष की आरबल है. तिसमें से आधी तो रात में जाती है; और आधी की आधी बाल और बूढ़ अवस्था में; शेष जो रही सो बिबाद, बियोग, सोग में गुजरती है. और जी जो है, पानी की तरंग की तरह चंचल है. इससे इस मनुष को सुख कहां. और अब कलयुग के समें, सत्य-वादी मनुष मिलने दुर्लभ हैं. और दिन बदिन देश उजड़ते हैं. राजा लोभी होते हैं. पृथ्वी मंद फल देती है. चोर दुराचारी पृथ्वी में उपाध करते हैं. और धर्म, तप, सत संसार में थोड़ा रहा है. राजा कुटिल, ब्राह्मण लालची, लोग लुगार्ई के बस ऊए, स्त्री चंचल ऊई. पिता की निंदा पुत्र करने लगे; और मित्र शत्रुता. और देखो जिस का मामा कन्हैया, और पिता अर्जुन, तिस अभिमन्यु को भी काल ने न छोड़ा. और जिस समें मनुष को यम ले जाता है, लक्ष्मी उस के घर में रहती है; और मा, बाप, जोरू, लड़का, भाई, बंधु कोई काम नहीं आता. भलाई, बुराई, पाप, पुन्य ही साथ जाता है. और वे ही कुनवे के लोग

उसे, मरघट में ले जा, जला देते हैं. और देखो, इधर रात बितीत होती है; उधर दिन आता है. इधर चांद अस्त होता है; उधर सूरज उदै. ऐसे ही जवानी जाती है; बुढ़ापा आता है. इसी तरह से, काल बीता चला जाता है; पर यह देखकर भी इस मनुष को ज्ञान नहीं होता. और देखो, सत्ययुग में मानधाता(१) ऐसा राजा कि जिसने, धर्म के यश से, सारी पृथ्वी को द्वा दिया था; और चेता में श्रीरामचन्द्र राजा, कि जिसने समुद्र का पुल बांध, लंका सा गढ़ तोड़ रावन को मारा; और द्वापर में युधिष्ठिर ने ऐसा राज किया कि जिस का यश अब तक लोग गाते हैं; पर काल ने उन्हें भी न छोड़ा. और आकाश के उड़नेवाले पंखी, और समुद्र के रहनेवाले जीव, समैं पाय वे भी आपत्य में आपड़ते हैं. इस संसार में आके, दुख से कोई नहीं कुटा. इस का मोह करना ब्रथा है. इस से उत्तम यह है, कि धर्म काज कीजिये.

इस तरह से, जब विष्णुशर्मा ने समझाया, तब उस ब्राह्मण के जी में आया कि अब पुन्य काज कीजिये. यह मन में उस ने सोच, अपने बेटों से कहा कि मैं यज्ञ करने बैठता हूं; तुम समुद्र से, जाकर, ककुआ ले आओ. अपने बाप की आज्ञा पा, एक धीमर से जाकर उन्होंने कहा कि एक रुपया ले और कच्छप पकड़ दे. उस ने लिया और पकड़ दिया. तब उन में से बड़े भाई ने मझले से कहा तू उठा ले. उन्ने छोटे से कहा भाई! तू उठा ले. उस ने

कहा कि मैं इसे न कुजंगा ; मेरे हाथ में दुर्गंध आवेगी. और मैं भोजन करने में चतुर हूँ. मभला बोला कि मैं नारी रखने में चतुर हूँ. बड़े ने कहा कि मैं सेज पर सोने में चतुर हूँ.

इस तरह तीनों विवाद करने लगे ; और ककुए को वहीं छोड़, भगड़ते ऊँ, राजा के द्वार पर जा, द्वारपाल से उन्होंने कहा कि तीन ब्राह्मण फरियादी आये हैं, यह जाके तू राजा से कह. यह सुनके, दरवान ने राजा को खबर दी. राजा ने बुलाकर पूछा कि तुम किस वास्ते आपस में भगड़ते हो ? तब उन में से छोटा बोला कि महाराज ! मैं भोजनचतुर हूँ. मभले ने कहा कि पृथ्वी-नाथ ! मैं नारीचतुर हूँ. बड़े ने कहा कि धर्मावतार ! मैं सेजचतुर हूँ.

यह सुन राजा ने कहा कि अपनी अपनी परीक्षा दो. इन्हीं ने कहा बज्जत अच्छा. राजा ने अपने रसोइये को बुलाकर कहा, कि भांति भांति के बिंजन और पकवान बना, इस ब्राह्मण को अच्छी तरह भोजन करवाओ. यह सुन रसोइये ने जा रसोई तैयार कर, उस भोजनचतुर को ले जा, थाल पर बिठाया. चाहे कि वह ग्रास उठा मुख में दे कि इस में दुर्गंध आई. उसे छोड़, हाथ धो, राजा के पास आया. राजा ने पूछा कि तू ने सुख से भोजन किया ? तब उस ने कहा महाराज ! अन्न में दुर्गंध आई. मैं ने भोजन न किया. फिर राजा ने कहा दुर्गंध का कारन कह. उस ने कहा महाराज ! मरघट की भूमि के चावल

थे; मुरदे की बू उसमें से आती थी. इस कारन न खाया.

यह सुनके राजा ने अपने भंडारी को बुलाकर पूछा, अरे! ये किस गांव के चावल थे. उस ने कहा महाराज! शिवपुर के. राजा ने कहा वहां के किसान को बुलाओ. तब भंडारी ने उस गांव के जमींदार को हज़ूर में बुलवाया. राजा ने पूछा, ये किस भूमि के चावल हैं? उस ने कहा कि महाराज! अशान के हैं. यह सुनके राजा ने उस ब्राह्मण के लड़के से कहा, कि तू सच भोजनचतुर है.

फिर नारीचतुर को बुलवा, एक मकान में पलंग बिछवा, सब खुशी के सामान रखवा, एक अच्छी स्त्री को बुलवा, उस के पास रखवा दिया. और वे दोनों आपस में लींटे ऊँचे बातें करने लगे. राजा छिपके भरोखे से देखने लगा. और उस ब्राह्मण ने चाहा कि उस का बोस ले, इस में उस के मुख की बास पा मुख फेर सो रहा. राजा ने यह चरित्र देख अपने मंदिर में जाकर आराम किया. भोर के समै उठ, दरबार में आ, उस ब्राह्मण को बुलाके पूछा कि हे ब्राह्मण! आज की रात तू ने सुख से काटी? उस ने कहा महाराज! सुख न पाया. फिर राजा ने कहा किस कारन. ब्राह्मण ने कहा उस के मुँह से बकरी की गंध आती थी. इससे जीव मेरा बहुत बेचैन रहा. यह सुन राजा ने दलाल को बुलाकर पूछा, कि इसे तू कहाँ से लाई थी? और यह कौन है? उस ने कहा यह मेरी बहन की बेटी है. जब तीन महीने की थी, तब इस की

मा मर गई. और मैं ने इसे बकरी का दूध पिला पिला कर पाला है. यह सुन, राजा ने कहा सच तू नारीचतुर है.

फिर सेजचतुर को, अच्छे अच्छे बिछोने करवा, पलंग पर सुलवाया. प्रभात हुए. राजा ने उसे बुलाकर पूछा तू रात भर सुख से सोया? उन्ने कहा महाराज ! रात भर नींद न आई. राजा ने कहा किस कारन. उस ने कहा महाराज ! इस सेज की सातवीं तह में एक बाल है. वह मेरी पिठ में चुभता था. इससे नींद न आई. यह सुन राजा ने उस बिछोने की सातवीं तह में देखा तो एक बाल निकला. तब उसने कहा कि तू सच सेजचतुर है.

दूतनी बात कह, बैताल ने पूछा उन तीनों में कौन अति चतुर है? राजा बीर विक्रमाजीत ने कहा, जो सेजचतुर है. यह सुन, बैताल फिर उसी दरखत पर जा लटका. राजा भी वोहीँ जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

चौबीसवीं कहानी.

बैताल ने कहा ऐ राजा ! कलिंग देस में एक यज्ञ-शर्मा नाम ब्राह्मण. तिस की स्त्री का नाम सोमदत्ता अति रूपवती थी. वह ब्राह्मण यज्ञ करने लगा. इस में उस स्त्री के एक सुंदर लड़का हुआ. जब वह पांच बरस का हुआ, तब बाप उस का शास्त्र पढ़ाने लगा. बारह

बरस की उमर में वह सब शास्त्र पढ़के बड़ा पंडित हुआ ; और सदा अपने बाप की सेवा में रहने लगा.

कितने एक दिन बीते, वह लड़का मर गया. उस के सोग से, माता पिता चिल्ला चिल्ला रोने लगे. यह खबर पा, सारे कुनबे के लोग धाये ; और उस लड़के को अरथी में बांधकर अश्वान में ले गये ; और वहां जा, उसे देख देख, आपस में कहने लगे, देखो मुए पर भी सुंदर लगता है. इसी तरह से बातें करते थे, और चिता चुनते थे, कि वहां एक योगी भी बैठा तपस्या कर रहा था. यह बात सुन, वह अपने जी में बिचारने लगा कि मेरा शरीर अति बृद्ध हुआ. जो इस लड़के के शरीर में पैठूं, तो सुख से योग करूं.

यह सोचकर, उस लड़के के शरीर में पैठ, करवट ले, रामकृष्ण कह ऐसा उठ बैठा, जैसे कोई सोते से उठ बैठे. यह देख, तमाम लोग अचंभे में हो अपने अपने घर आये. और उस के बाप को, यह अचरज देख, बैराग हुआ ; पहले हंसा, पीछे रोया.

दुतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम ! कह वह क्यों हंसा, और क्यों रोया. तब राजा ने कहा योगी को इस के शरीर में जाते देख और यह बिद्या सीखकर हंसा ; और अपने शरीर के छोड़ने के मोह से रोया, कि एक दिन, इसी तरह, मुझे भी अपना शरीर छोड़ना पड़ेगा. यह सुन बैताल फिर उसी दरखत पर जा लटका. और राजा भी, पीछे जा उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

पच्चीसवीं कहानी.

तब बैताल बोला ऐ राजा ! दक्षिण दिसा में धर्मपुर नगर है. वहाँ के राजा का नाम महाबल. एक समै, उसी देस का एक और राजा फौज ले चढ़ आया, और उस का नगर आन घेरा. कितने एक दिनों लड़ता रहा. जब सैना इस की मिल गई और कुछ कट गई, तब लाचार हो, रात के वक्त, रानी को बेटी समेत साथ ले, जंगल में निकल गया. जब कई एक कोस बन में पहुँचा तो प्रभात हुआ. और एक गांव नज़र आया. तब रानी और राजकन्या को एक पेड़ तले बिठला, आप गांव की तरफ़ खाने का कुछ सामान लेने चला था, कि इस में भीलों ने आन घेरा, और कहा हथियार डाल दे.

यह सुनके राजा ने तीर मारना शुरू किया ; और उधर से उन्हे ने. इस तरह एक पहर लड़ाई रही. और कितने एक लोग भीलों के मारे गए. इतने में, एक तीर राजा के कपाल में ऐसा लगा कि वह भैरा कर गिर पड़ा. और एक ने आ राजा का सिर काट लिया. जब रानी और राजकन्या ने राजा को मुआ देखा, तो रोती पीटती उलटी बन को चली. इसी तरह से कोस दो एक चल, माँदी होके बैठीं, और अनेक अनेक भाँति की चिंता करने लगीं.

इस में चंद्रसेन(१) नाम राजा और उस का बेटा, दोनों शिकार खेलते हुए उसी जंगल में आ निकले ; और दोनों के पांव के चिन्ह देख राजा ने अपने पुत्र से कहा, कि इस महाबन में आदमी के पांव के निशान कहां से आये. राजपुत्र ने कहा महाराज ! ये चरन चिन्ह स्त्री के हैं ; पुरुष का पांव ऐसा छोटा नहीं होता. राजा ने कहा सच ; ऐसा कोमल चरन पुरुष का नहीं होता. फिर राजपुत्र ने कहा इसी समूह में गई हैं. राजा ने कहा कि चलो इस बन में ढूंढें जो मिलें तो जिस का यह बड़ा पांव है सो तुम्हें दूंगा ; और दूसरी मैं लूंगा. इस तरह से आपस में बचन बंद हो, आगे जा देखें तो दोनों बैठी हुई हैं. उन्हें देख, खुश हो, मुवाफिक़ करार के अपने अपने घोड़े पर बैठा घर ले आये. रानी को राजकंवर ने रक्खा ; और राजकन्या को राजा ने.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम ! उन दोनों के लड़कों का आपस में क्या नाता होगा ? यह सुन राजा अज्ञान हो चुप रहा.

फिर बैताल खुश हो बोला कि ऐ राजा ! मैं तेरा धीरज और साहस देख अति प्रसन्न हुआ. पर एक बात मैं तुम्हें कहता हूं, सो तू सुन ; कि जिस के शरीर के रोम समान कांटों के, और देह काठ सी, और नाम शान्तशील, सो तेरे नगर में आया है. और तुम्हें उन ने मेरे लाने को भेजा है ; आप बैठा मरघट में मंच जगा

रहा है; और तुझे मारा चाहता है. इस लिये मैं जता देता हूँ, कि जब वह पूजाकर चुकेगा तब तुझ से कहेगा कि ऐ राजा ! तू साष्टांग दंडवत कर. तब तू कहियो कि मैं सब राजाओं का राजा हूँ. और सब राजा आनके मुझे दंडवत करते हैं. मैंने आज तक किसी को दंडवत नहीं की; और मैं नहीं जानता. आप गुरु हैं; मुझे कृपा कर सिखा दीजिये तो मैं करूँ. जब वह दंडवत करे, तब ऐसा खड्ग मारियो कि सिर जुदा हो जाय. तब तू अखंड राज करेगा. और जो यह तू न करेगा तो वह तुझे मार अचल राज करेगा.

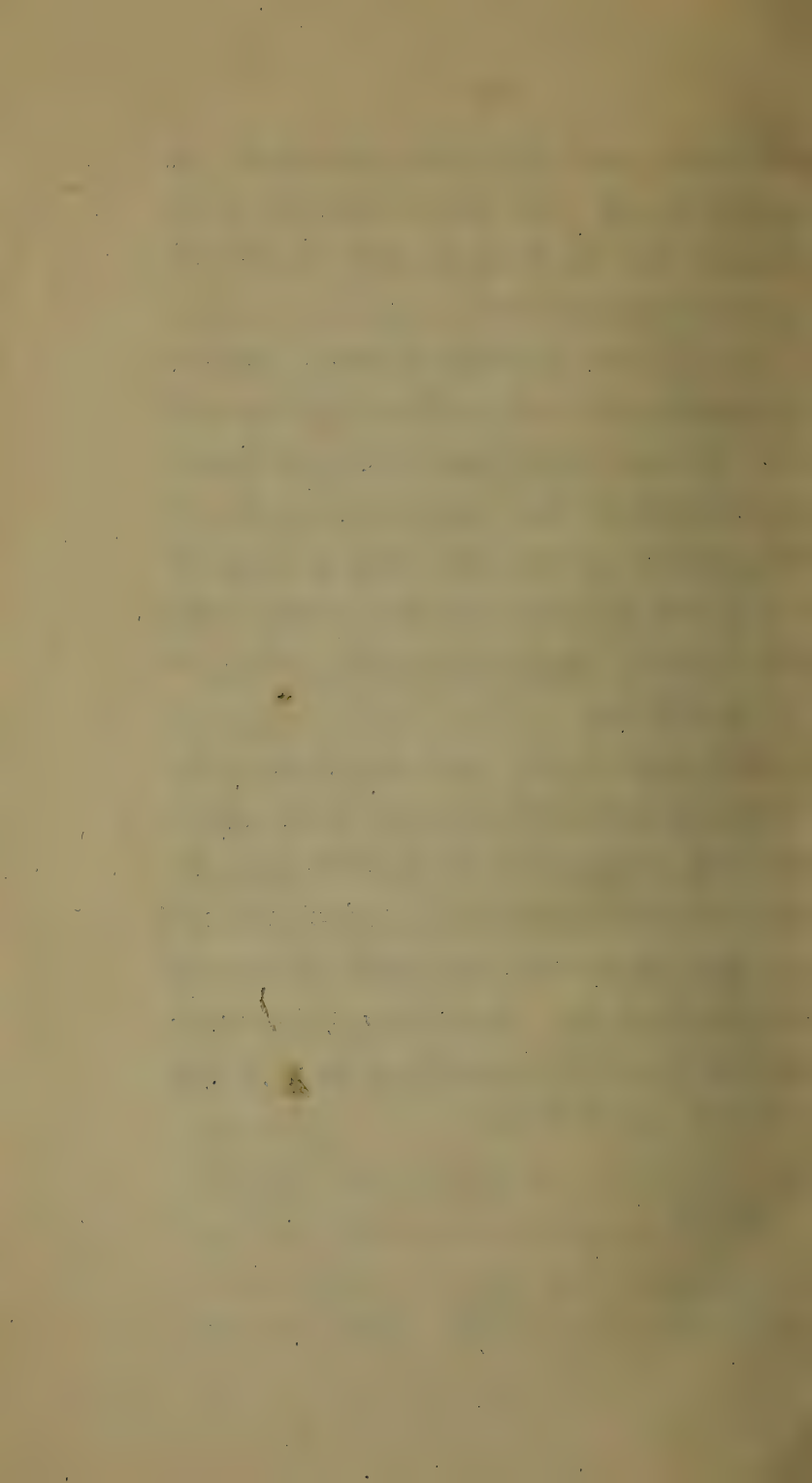
इतनी बात राजा को चिता, बैताल उस मुर्दे के कालिब से निकलकर चला गया. और कुछ रात रहते वह मुरदा ला, राजा ने जोगी के आगे रख दिया. जोगी ने उस को देखकर खुश हो राजा की बहुत सी बड़ाई की. फिर मंत्र पढ़ उस मुर्दे को जगा, होमकर बल दिया. और दक्षिण की तरफ बैठ, जितना कुछ वहां सरंजाम तैयार किया था, सो अपने देवता को चढ़ा दिया. और पान, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य दे पूजाकर राजा से कहा कि तू दंडवत कर, तेरा बड़ा तेज प्रताप होगा, और अष्ट सिद्धि सदा तेरे घर में रहेगी.

यह सुन, राजा ने बैताल की बात याद कर, हाथ जोड़ निपट आधीनता से कहा कि महाराज ! मैं प्रणाम कर नहीं जानता. पर आप गुरु हैं, जो कृपा करके सिखाइये तो मैं करूँ. यह सुन योगी ने जौहीं दंडवत

करने को सिर भुकाया, अंहीं राजा ने एक खड्ग मारा कि सिर जुदा हो गया. और बैताल ने आन, फूलों का मेह बरसाया. ऐसा कहा है, कि जो अपने तई मारा चाहे उस के मारने से अधरम नहीं.

उस समै राजा का साहस देख, इंदर(१) समेत सब देवता अपने अपने विमानों पर बैठ वहां जै जै कार करने लगे. और राजा इंदर ने प्रसन्न हो राजा बीर बिक्रमाजीत से कहा कि बर मांग. तब राजा ने हाथ जोड़ कर कहा महाराज! यह कथा मेरी संसार में प्रसिद्ध हो. इंदर ने कहा कि जब तक चांद, सूरज, पृथ्वी, आकाश स्थिर है तब तक यह कथा प्रसिद्ध रहेगी. और तू सर्व भूमि का राजा होगा.

इतना कह राजा इंदर अपने स्थान को गया. और राजा ने उन दोनों लोथों को ले, उस तेल के कड़ाह में डाल दिया. तब यह दोनों बीर आ हाजिर हुए; और कहने लगे कि हमें क्या आज्ञा है? राजा ने कहा जब मैं याद करूं, तब तुम आना. इस तरह से उन से बचन ले, राजा अपने घर आ, राज करने लगा. ऐसा कहा है, कि पंडित हो, या मूर्ख, लड़का हो, या जवान, जो बुद्धि-वान होगा उसी की जै होगी.



गलतनामः.

गलत.	सहीह.	सफ़हः.	सतर.
ओर.....	और.....	६.....	१०
कल पर क्या,	कल पर क्या	१६	१५
पहंचा	पजंचा	१६	१६
उट	उठ	२८	७
सीखी	सीखे.....	२८	१३
बोला	बोली.....	४८	७
राजों	राजाओं	४६	२३
पूको.....	पूको	५१	७
रक्तबीज	रक्तबीज	५५	५
मअलूम	मअलूम	५६	१२
पकड़ा	कपड़ा	६०	१३
पहंचा	पहुंचा	७८	१६
बियाह	बिवाह	६३	१३
इधर.....	इधर.....	६६	२२
की	किया.....	१०४	२४
यह	वह.....	१२६	२२
दे	ले	१२७	१६
पुरोहिब	पुरोहित	१३१	१५
पाताल	या पाताल.....	१३२	५
यह.....	वे.....	१४१	१५



PK Vetalapancavimsati. Hindi
20989 version (Baitala-pacisi)
V4 The bytal-pacheesee
1852

~~XXXXXXXXXX~~

PLEASE DO NOT REMOVE
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY
